नम कार पाठको,

" म आपक ि यांशी जैन ! मरी पहली कताब " कुंवारी हवेली " को इतना यार देने के

िलए आपका शु

या. मेरी उ मीद से यादा आप लोगो ने मेरी कताब को सराहा और

यार दया ! इसी यार से े रत होकर म आपके सामने अपनी दूसरी कताब लेकर

आयी ं , उ मीद है क यह कताब भी आपको पसंद आएगी और इस कताब को भी

आपका ढेर सारा यार िमलेगा."

आपक

ि यांशी जैन

प रचय

घना अंधेरा और उपर से उसमे जौरो से बरसाती बा रश. सारा आसमान झ गुर क

‘क रर’ आवाज़ से गूँज रहा था. एक बंगले के बगल मे खड़े एक िवशालकाय पेड़ पर एक

बा रश से भीगा आ उ लू बैठा आ था. उसक इधर उधर दौड़ती नज़र आख़र सामने

बंगले क एक िखड़क पर जाकर क . वह बंगले क एकलौती ऐसी िखड़क थी क िजस

से अंदर से बाहर रोशनी आ रही थी.

घर मे उस िखड़क से दख रही वह जलती ई लाइट छोड़ कर सारे लाइ स बंद थे.

अचानक वहाँ उस िखड़क के पास आसरे के िलए बैठा कबूतर का एक झुंड वहाँ से

फड़फड़ाता आ उड़ गया. शायद वहाँ उन कबूतर को कोई अ

य शि का अि त व

महसूस आ होगा, िखड़क के काँच सफेद रंग क होने से बाहर से अंदर का कुछ नही दख

रहा था. या सचमुच वहाँ कोई अ

य शि प च गयी थी?... और अगर प िच थी तो

या उसे अंदर जाना था....? ले कन िखड़क तो अंदर से बंद थी.

बेड म मे बेड पर कोई सोया आ था. उस बेड पर सोए साए ने अपनी करवट बदली और

उसका चेहरा उस तरफ हो गया. इसिलए वह कौन था यह पहचान ना मु कल था. बेड के बगल मे एक च मा रखा या था. शायद जो भी कोई सोया आ था उसने सोने से पहले अपना च मा िनकाल कर बगल मे रख दया था. बेड म मे सब तरफ दा क बॉटल, दा के लास, न्इ तेमाल पेपस, मॅगज़ी स समान इधर उधर फैला आ था.

बेड म का दरवाजा अंदर से बंद था और उसे अंदर से कु डी लगाई ई थी. बेड म मे िसफ़ एक ही िखड़क थी और वह भी अंदर से बंद थी – य क वह एक एसी म था. जो साया बेड पर सोया था उसने फरसे एकबार अपनी करवट बदली और अब उस सोए ए साए का चेहरा दखने लगा.

महेश, उ लगभग 25-26, पतला शरीर, चेहरे पर कह कह छोटे छोटे दाढ़ी के बाल उगे ए, आँख के आस पास च मे क वजह से बने काले गोल गोल ध बे बने ए थे.

महेश एक सपना देख रहा था और सपने मे वो अपने यार को मतलब िनशा को देख रहा था.... िनशा उसक कॉलेज क दो त थी... वो तो कब का उसके यार मे पड़ गया था... वो दोनो उसके बेड म मे बैठे थे.... और िनशा उसको बार बार बात बात पर चुंब रही थी...

महेश तो जैसे इसी मौके के इंतज़ार म था. उसने िनशा को जैसे लपक िलया. नीचे बेड पर िगरा िलया और उसे कपड़ के उपर से ही चूमने लगा. िनशा बदहवास हो चुक थी. उसने महेश का चेहरा अपने हाथ म िलया और उसके ह ठो को अपने होठ म दबा िलया. महेश के हाथ उसक तन पर कहर ढा रहे थे. एक एक करके वह दोनो तन को बुरी तरह मसल रहे थे. िनशा अब उसक छाती सहलाते ए बड़बड़ाने लगी थी..

एक एक करके जब महेश ने िनशा का हर कपड़ा उसके शरीर से अलग कर दया तो वो देखता ही रह गया. वग से उतरी मेनका जैसा िज म... सुडौल तन ... एक दम तनी ई. सुरिहदार िचकना पेट और मांसल जांघ... योनी पर एक भी बाल नही था. उसक योनी एक छोटी सी मछली जैसी सुंदर लग रही थी. उसने दोन तन को दोन हाथ से पकड़ कर उसक योनी पर मुँह लगा दया. िनशा कराही... और साँसे इतनी तेज़ चल रही थी जैसे अभी उखड़ जाएँगी. पहले पहल तो उसे अजीब सा लगा अपनी योनी चटवाते ए पर बाद म वह खुद अपनी िनतंब उछाल उछाल कर उसक जीभ को अपने योिन रस का वाद

देने लगी.

महेश ने अपनी पट उतार फक और अपना लंग उसके मुँह म देने लगा. पर िनशा तो कसी ज दबाज़ी म थी. बोली,"अब घुसा दो ना मेरी योनी म लीज़.महेश कहाँ मान ने वाला था उसको भी यही चिाहए था.और उसने िनशा क टाँग को अपने कंधे पर रखा और अपने लंग का सूपड़ा िनशा क योनी पर रखकर दबाव डाला. पर वो तो िब कुल टाइट थी. महेश ने उसक योिन रस के साथ ही अपना थूक लगाया और दोबारा कोिशश कया. िनशा िच नक उठी. सूपड़ा योिन के अंदर था और िनशा क हालत आ बैल मुझे मार वाली हो रही थी.

उसने अपने को पीछे हटाने क कोिशश क ले कन उसका िसर बेड के उपरी िसरे से जा लगा था. िनशा बोली," लीज़ जान एक बार िनकाल लो. फर कभी करगे. पर महेश ने अभी नही तो कभी नही वाले अंदाज म एक ध ा लगाया और आधा लंग उसक योनी म घुस गया.

िनशा क चीख को उसने अपने होटो से दबा दया. कुछ देर इसी हालत म रहने के बाद जब िनशा पर म ती सवार ई तो पू छो मत. उसने बेहयाई क सारी हद पार कर दी. वा िससकारी लेते ए बड़बड़ा रही थी. "हाई रे, मेरी योनी...मज़ा दे दया... कब से तेरे लंग... क .. प .. यासी थी. ठोक दे जान मुझे... आअह. आअह कभी मत िनकालना इसको ... मेरी योनी आह उधर महेश का भी यही हाल था.

उसक तो जैसे भगवान ने सुन ली. ज त सी िमल गयी थी उसको.. उ छल उ छल कर वो उसक योनी म लंग ठोके जा रहा था क अचानक िनशा ने ज़ोर से अपनी टांगे भ च ली. उसका सारा बदन अकड़ सा गया था. उसने उपर उठकर महेश को ज़ोर से पकड़ िलया. उसक योनी पानी छोडती ही जा रही थी. उससे महेश का काम आसान हो गया. अब वो और तेज़ी से ध े लगा रहा था.

पर अब िनशा िगडिगडाने लगी. लीज़ अब िनकाल लो. सहन नही होता. थोड़ी देर के िलए महेश क गया और िनशा के ह ठ और तन को चूसने लगा. वो एक बार फर अपने

िनतंब उछालने लगी. इस बार उसने िनशा को उ टा िलटा िलया. िनशा क िनतंब बेड के

कनारे थी और उसक मनमोहक योनी बड़ी यारी लग रही थी.

िनशा के घुटने ज़मीन पर थे और मुँह बेड क और. इस ि थित म जब महेश ने अपना लंग

िनशा क योनी म डाला तो एक अलग ही आनंद ा आ. अब िनशा को िहलने का

अवसर नही िमल रहा था. यूंक महेश ने उसको कस के पकड़ रखा था. पर मुँह से मादक

िससका रयाँ िनकल रही थी. हर पल उसे ज त तक लेकर जा रहा था. इस बार करीब

बीस िमिनट बाद वो दोन एक साथ के और महेश उसके उपर ढेर हो गया.....

सपन कं दुिनयासे अचानक महेश को किसक आहट ई और वह हड़बड़ाकर जाग गया.

उसके सामने जो भी था वह उसपर हमला करने के िलए तै यार होने से उसके चेहरे पर डर

झलक रहा था, पूरा बदन पसीना पसीना आ था. वह अपना बचाव करने के िलए उठने

लगा. ले कन वह कुछ करे इसके पहले ही उसने उसपर, अपने िशकार पर हमला बोल

दया था.

पूरे आसमान मे महेश क एक बड़ी, ददनाक, असहाय चीख गूँजी और फर सब तरफ फर

से स ाटा छा गया... ठीक पहले जैसा....

भाग **-1**

सुबह सुबह रा ते पर लोग क अपने अपने काम पर जाने क ज दी चल रही थी. इसिलए

रा ते पर काफ़ चहल-पहल थी. ऐसे मे अचानक एक पोलीस क गाड़ी उस भीड़ से दौड़ने

लगी. आस-पास का मौहाल पोलीस के गाड़ी के साइरन क वजह से गंभीर हो गया. रा ते

पर चल रहे लोग तुरंत उस गाड़ी को रा ता दे रहे थे. जो पैदल चल रहे थे वे उ सुकता से

और अपने डरे ए चेहरे से उस जाती ई गाड़ी क तरफ मूड मूड कर देख रहे थे. वह गाड़ी

िनकल जाने के बाद थोड़ी देर मौहाल तंग रहा और फर फर से पहले जैसा हो गया.

एक पोलीस क फ़ौरिसक टीम का मबर बेड म के खुले दरवाजे के पास कुछ छानबीन कर

रहा था. वह उसके पास जो बड़ा लस था उसमे से ज़मीन पर कुछ िमलता है या यह ढूँढ

रहा था. उतने मे एक अनुशासन मे चल रहे जूत का 'टक टक' ऐसा आवाज़ आ गया. वह

छानबीन करने वाला पलट कर देखने के पहले ही उसे कड़े वर मे पूछा आ सवाल सुनाई दया “बॉडी कधर है....?”

“सर इधर अंदर...” वह टीम मबर अदब के साथ खड़ा होता आ बोला.

इं पे टर कबीर , उ साधारण चालीस के आस पास, कड़ा अनुशासन, लंबा कद, कसा आ शरीर, उस टीम मबर के दखाए रा ते से अंदर गया.

इं पे टर कबीर जब बेड म मे घुस गया तब उसे महेश का शव बेड पर पड़ा आ िमल गया. उसक आँख बाहर आई ई और गदन एक तरफ ढूलक गयी ई थी. बेड पर सब तरफ खून ही खून फैला आ था.

उसका गला कटा आ था. बेड क ि थित से ऐसा लग रहा था क मरने के पहले महेश काफ़ तडपा होगा. इं पे टर कबीर ने बेड म मे चारो तरफ अपनी नज़र दौड़ाई.

फ़ौरिसक टीम बेड म मे भी तफ़तीश कर रही थी. उनमे से एक कोने मे श से कुछ सॉफ कर ने जैसा कुछ कर रहा था तो दूसरा कमरे मे अपने कॅमरा से त वीरे लेने मे त था.

एक फ़ौरिसक टीम मबर ने इं पे टर कबीर को जानकारी दी –

“सर मरनेवाले का नाम महेश है”

“ फंगर ं स वगैरे कुछ िमला या...?”

“नही कम से कम अब तक तो कुछ नही िमला...”

इं पे टर कबीर ने फोटो ाफर क तरफ देखते ए कहा, “कुछ छूटना नही चिाहए इसका ख़याल रखो...”

“यस सर...” फोटो ाफेर अदब के साथ बोला.

अचानक कबीर का यान एक अजीब अ यिाशत बात क तरफ आक षत आ.

वह बेड म के दरवाजे के पास गया. दरवाजे का कुंडी और आस-पास क जगह टूटी ई थी.

“इसका मतलब खूनी शायद यह दरवाजा तोड़ कर अंदर आया है..” कबीर ने कहा.

उसका एक टीम मबर पाठक आगे आया, “नही सर, असल मे यह दरवाज़ा मैने तोड़ा… य क हम जब यहाँ प चे तब दरवाज़ा अंदर से बंद था….” पाठक, लगभग तीस के आस पास, छोटा कद, मोटा शरीर.

“तुमने तोड़ा….?” कबीर ने आ य से कहा.

“यस सर….” पाठक ने कहा.

“ या फर से अपने पहले के ध दे शु तो नही कए ….?” कबीर ने मज़ाक मे ले कन चेहरे पर वैसा कुछ ना दखाते ए कहा. य क पाठक जो दरवाज़ा ना खुले उसे तोड़ कर ही अंदर दाखल हो जाता था.

“हाँ सर… मतलब नही सर….” पाठक हड़बड़ाते ए बोला.

कबीर ने पलट कर एकबार फर से कमरे मे अपनी पैनी नज़र दौड़ाई, खास कर िखड़ कय क तरफ देखा. बेड म मे एक ही िखड़क थी और वह भी अंदर से बंद थी. वह बंद रहना लाजमी था य क म एसी था.

“अगर दरवाज़ा अंदर से बंद था…. और िखड़क भी अंदर से बंद थी….तो फर क़ातल कमरे मे कैसे आया….”

सब लोग आ य से एक दूसरे क तरफ देखने लगे.

“और सब से मह वपूण बात क वह अंदर आने के बाद बाहर कैसे गया….?” पाठक ने कहा.

इं पे टर कबीर ने उसक तरफ िसफ़ घूर कर देखा.

अचानक सब का यान एक इ वि टगे टंग ऑफ सर ने अपनी तरफ ख चा. उसको बेड के आस पास कुछ बाल के टुकड़े िमले थे.

“बाल…? उनको ठीक से सील कर आगे के छानबीन के िलए लॅब मे भेजो…” कबीर ने आदेश दया.

सुबह 10 बजे इं पे टर कबीर अपने ऑफ स मे बैठा था. उतने मे एक ऑफ सर वहाँ आ गया. उसने पो टमाटम के काग़ज़ात कबीर के हाथ मे थमा दए. जब कबीर वह

काग़ज़ात उलट पुलट कर देख रहा था वह ऑफ सर उसके बगल मे बैठकर कबीर को छानबीन के बारे मे और पो टमाटम के बारे मे जानकारी देने लगा.

“मौत गला काट ने से ई है.. और गला जब काटा गया तब महेश शायद न द मे होगा ऐसा इसमे िलखा है ले कन क़ितल ने कौन सा हिथयार इ तेमाल कया गया होगा इसका कोई पता नही चल रहा है...” वह ऑफ सर जानकारी देने लगा.

“अमे ज़ंग...?” इं पे टर कबीर मानो खुद से ही बोला.

“और वहाँ िमले बालो का या....?”

“सर हमने उसक झांच क ... ले कन वे बाल आदमी के नही है...”

“ या आदमी के नही....?”

“ फर शायद कसी भूत के ह गे...” वहाँ आकर उनके बात चीत मे घुसते ए एक ऑफ सर ने मज़ाक मे कहा.

भले ही उसने वह बात मज़ाक मे कही हो ले कन वे एक दूसरे के मुँह को ताकते ए दो तीन पल कुछ भी नही बोले. कमरे मे एक अजीब सा स ाटा छाया आ था.

“मतलब वह क़ितल के कोट के या ज कन के हो सकते है....” कबीर के बगल मे बैठा ऑफ सर बात को संभालते ए बोला.

“और उसके मो टव के बारे मे कुछ जानकारी...?”

“घर क सारी चीज़े तो अपनी जगह पर थी... कुछ भी क मती सामान चोरी नही गया है... और घर मे कही भी महेश के हाथ के और उंगिलय के िनशान के अलावा और कसी के भी हाथ के और उंगिलय के िनशान नही िमले....” ऑफ सर ने जानकारी दी.

“अगर क़ितल भूत हो तो उसे कसी मो टव क या ज़ रत....?” फर से वहाँ खड़े ऑफ सर ने मज़ाक मे कहा.

फर दो तीन पल स ाटे मे गये.

“देखो ऑफ सर.... यहाँ सीरीयस मॅटर चल रहा है... आप कृपा करके ऐसी फालतू बाते मत करो...” कबीर ने उस ऑफ सर को ताक़ द दी.

“मैने महेश क फाइल देखी है... उसका पहले का रेकॉड कुछ उतना अ छा नही... उसके िखलाफ पहले से ही ब त सारे गुनाह के िलए मुक़दमे दज है... कुछ गुनाह सिाबत भी ए है और कुछ पर अब भी केसस जारी है.. इससे ऐसा लगता है क हम जो केस हडल कर रहे है वह कोई आपसी दु मनी या रंिजश हो सकती है...” कबीर फर से असली बात पर आकर बोला.

“क़ितल ने अगर कसी गुनहगार को ही मारा हो तो....” बगल मे खड़े उस ऑफ सर ने फर से मज़ाक करने के िलए अपना मुँह खोला तो कबीर ने उसके तरफ एक गु से से भरा कटा डाला.

“नही मतलब अगर वैसा है तो....अ छा ही है ना... एक तरह से वह अपना ही काम कर रहा है... शायद जो काम हम भी नही कर पाते वह काम वह कर रहा है...” वह मज़ाक करनेवाला ऑफ सर अपने श द तोलमोल कर बोला.

“देखो ऑफ सर.... हमारा काम लोग क सेवा करना और उनक िहफ़ाज़त करना है...”

“गुनहगार क भी....?” उस ऑफ सर ने

ंगा मक ढंग से कड़वे श दो मे पूछा.

इस पर कबीर कुछ नही बोला. या फर उसपर बोलने के िलए उसके पास कुछ ल ज नही थे. ले कन कबीर ने मन ही मन मे कहा "जहाँ चाह वहाँ राह" ज़ र िमलेगी.

सुबह 10 बज रहे थे, वहाँ कबीर अपनी मी टंग मे िबज़ी था और यहाँ राकेश अपने बेड म मे सोया था. उसक बेड म मतलब एक कबाड़ खाना था िजस मे इधर उधर फैला आ सामान, इ तेमाल कए पेपस, मॅगज़ी स, ि ह क क खाली बॉटल वह भी इधर उधर फैली ई. मॅगज़ीन के कवर पर यादा तर लड़ कय क न त वीरे दख रही थी और बेड म क सारी दीवार उसके हेरिोय स क न , अध न त वीर से भरी ई थी. महेश के और राकेश के बेड म मे काफ़ समानता थी.

फ़क िसफ़ इतना ही था क राकेश के बेड म को दो िखड़ कयाँ थी और वह भी अंदर से बंद और बंद म एसी थी इसिलए नही तो शायद सावधानी के तौर पे बंद थी. वो न द से

जागा और उसने अपना मोबाइल िनकाला और एक नंबर डाइयल कया.. फोन एक लड़क ने उठाया...वो उसको बोला म अभी दस पंधरा िमिनट मे तु हारे घर आ रहा ँ...

राकेश जब उसके घर के पास प चा और उसने दरवाजा खटखटाया.... पंक ने दरवाजा खोलने म एक सेकड क भी देर ना लगाई. िबना कुछ सोचे समझे, िबना कसी िहचक और िबना दरवाज़ा बंद कया वो उसक छाती से िलपट गयी.

" अरे, को तो सही, राकेश ने उसके गाल को चूम कर उसको अपने से अलग कया और दरवाजा बंद करते ए बोला, मैने पहले नही बोला था"

पंक जल िबन मछली क तरह तड़प रही थी. वो फर राकेश क बाह म आने के िलए बढ़ी तो राकेश ने उसको अपनी बाह म उठा िलया. और यार से बोला, मेडम जी, खुद तो तैयार होके बैठी हो, ज़रा म भी तो े श हो लूँ".

पंक ने यार से उसक छाती पर घूँसा जमाया और उसके गाल पर कस कया. राकेश ने उसको बेड पर िलटाया और अपने बॅग से टॉवेल िनकाल कर बाथ म म चला आया.

नाहकार जब वा बाहर आया तो उसने कमर पर टॉवेल के अलावा कुछ नही पहन रखा था. पानी उसके शानदार शरीर और बालो से चू रहा था.

पंक उसके मदाने शरीर को देखती ही रह गयी और बोली," तु हारी बॉडी तो एक दम म त है"... तो राकेश बोला " म् म ये िसफ़ तु हारे िलए ही तो है.."

"अ छा तो चलो यार करते है ना..." पंक इतना बोली ही थी क तब राकेश का फोन बज उठा... तो पंक ने गु से से उसके हाथ से फोन उठाया और बंद कर दया और ब त यार से बोली " लीज़ अब यार कर लो ज दी"

"अरे कर तो रहा ँ यार" राकेश ने उसके ह ठो को चूमते ए कहा.

" कहाँ कर रहे हो. इसम घुसाओ ना ज दी..." पंक ब त मादक आवाज़ मे बोली.

राकेश हँसने लगा" अरे या इसम घुसाने को ही यार बोलते ह"

"तो" पंक ने उ टा वाल कया!

देखती जाओ म दखाता ँ यार या होता है. कहते ए राकेश ने पंक को अपनी गोद म

बैठा िलया. राकेश ने उसके ह ठो को चूमना शु कर दया और बड़ी ि श त से चूमते ए उसे उसके बेड पर िलटा दया. उसका नाइट सूट नीचे से हटाया और एक एक करके उसके बटन खोलने लगा.

अब पंक के बदन पर एक पटी के अलावा कुछ नही था. राकेश ने अपना टॉवेल उतार दया और झुक कर उसक निाभ को चूमने लगा. पंक के बदन म ची टयाँ सी दौड़ रही थी. उसका मंन हो रहा था क िबना देर कए राकेश उसक योनी का मुँह अपने लंग से भरकर बंद कर दे. वो तड़पित रही पर कुछ ना बोली; उसको यार सीखना जो था.

धीरे धीरे राकेश अपने हाथो को उसक तन पर लाया और अंगुिलय से उसके तना को छेड़ने लगा. राकेश का लंग उसक योनी पर पटी के उपर से द तक दे रहा था. पंक को लग रहा था जैसे उसक योनी को कसी ने जलते तेल के कढाहे म डाल दया हो. वो फूल कर पकौड़े क तरह होती जा रही थी.

अचानक राकेश पीछे लेट गया और पंक को िबठा िलया. और अपने लंग क और इशारा करते ए बोला," इसे मुँह म लो." पंक त ाई ई थी,बोली," ज़ री है या.... पर ये मेरे मुँह म आएगा कैसे?

बचपन म कुलफ खाई है ना, बस ऐसे ही. पंक ने राकेश के लंग के सुपडे पर जीभ लगाई तो उसको करट सा लगा. धीरे धीरे उसने सुपडे को मुँह म भर िलया और चूसने सी लगी. उसको ब त मज़ा आ रहा था. राकेश यादा के िलए कहना चाहता था पर उसको पता था वो ले नही पाएगी. " मज़ा आ रहा है ना!"

" म् म" पंक ने सूपड़ा मुँह से िनकालते ए कहा"पर इसम खुजली हो रही है" अपनी योनी को मसलते ए उसने कहा." कुछ करो ना....

ये सुनकर राकेश ने उसको अपनी पीठ पर टाँग क तरफ मुँह करके बैठने को कहा. उसने ऐसा ही कया. राकेश ने उसको आगे अपने लंग क ओर झुका दया िजससे पंक क योनी और िनतंब राकेश के मुँह के पास आ गयी.

एकदम तना आ राकेश का लंग पंक क आँख के सामने सलामी दे रहा था. राकेश ने

जब अपने ह ठ पंक क योनी क फांको पर टकाए तो वह सी कार कर उठी. इतना अिधक आनंद उससे सहन नही हो रहा था.

उसने अपने ह ठ लंग के सुपडे पर जमा दए. राकेश उसक योनी को नीचे से उपर तक चाट रहा था. उसक एक उंगली पंक क ितंब के छेद को ह के से कुरेद रही तही. इससे पंक का मज़ा दोगुना हो रहा था.

अब वह ज़ोर ज़ोर से लंग पर अपने ह ठ और जीभ का जादू दखाने लगी. ले कन यादा देर तक वह इतना आनंद सहन ना कर पाई और उसक योनी ने पानी छोड दया जो राकेश क मांसल छाती पर टपकने लगा. पंक ने राकेश क टाँगो को जाकड़ िलया और हाँफने लगी.

राकेश का शेर हमले को तैयार था. उसने यादा देर ना करते ए कंबल क सीट बना कर बेड पर रखा और पंक को उस पर उ टा िलटा दया. पंक क ितंब अब उपर क और उठी ई थी. और तन बेड से टकरा रही थी.

राकेश ने अपना लंग उसक योनी के ार पर रखा और पेल दया. योनी रस क वजह से योनी गीली होने से लंग ' यूच' क आवाज़ के साथ पूरा उसम उतर गया. पंक क तो जान ही िनकल गयी. इतना मीठा दद! उसको लगा लंग उसक आंतिडय से जा टकराया है.

राकेश ने पंक क ितंब को एक हाथ से पकड़ कर ध े लगाने शु कर दए. एक एक ध े के साथ जैसे पंक ज त तक जाकर आ रही थी. जब उसको ब त मज़े आने लगे तो उसने अपनी ितंब को थोड़ा और चौड़ा करके पीछे क ओर कर िलया.

राकेश के जांघे उसक योनी के पास जैसे थ पड़ से मार रहे थे. राकेश क नज़र पंक क ितंब के छेद पर पड़ी. कतना सुंदर छेद था. उसने उस छेद पर थूक िगराया और उंगली से उसको कुरेदने लगा. पंक आनंद से करती जा रही थी.

राकेश धीरे धीरे अपनी उंगली को पंक क ितंब म घुसाने लगा."उहह, सीसी... या.... ार... रहे हो.. ज.. ज़ान!" पंक कसमसा उठी. देखती रहो! और राकेश ने पूरी उंगली ध े लगाते लगाते उसक ितंब म उतार दी. पंक पागल सी हो गयी थी. वह

नीचे क ओर मुँह करके अपनी योनी म जाते लंग को देखने क किोशश कर रही थी. पर कंबल क वजह से ऐसा नही हो पाया.

राकेश को जब लगा क पंक का काम अब होने ही वाला है तो उसने ध क पीड बढ़ा दी. सीधे गभाशय पे ध को पंक सहन ना कर सक और ढेर हो गयी.

राकेश ने तुरंत उसको सीधा िलटाया और वापस अपना लंग योनी म पेल दया. पंक अब ि◌ब कुल थक चुक थी और उसका हर अंग दुख रहा था, पर वो सहन करने क किोशश करती रही.

राकेश ने झुक कर उसके ह ठ को अपने ह ठ से ि◌चपका दया और अपनी जीभ उसके मुँह म घुसा दी. धीरे धीरे एक बार फर पंक को मज़ा आने लगा और वो भी सहयोग करने लगी. अब राकेश ने उसक तन को मसलना शु कर दया था.

पंक फर से मं◌िज़ल के करीब थी. उसने जब राकेश क बाह पर अपने दाँत गाड़ने शु कर दए तो राकेश भी और यादा पीड से ध े लगाने लगा. पंक क योनी के पानी छोड़ते ही उसने अपना लंग बाहर ि◌नकाल ि◌लया और पंक के मुँह म दे दया.

पंक के योनी रस से सना होने क वजह से एक बार तो पंक ने मना करने क सोची पर कुछ ना कहकर उसको बैठ कर मुँह म ले ही ि◌लया. राकेश ने पंक का ि◌सर पीछे से पकड़ ि◌लया और मुँह म वीय क बौछार सी कर दी. पंक गू...गूओ करके रह गयी पर या कर सकती थी. करीब 8-10 बौछारे वीय ने उसके मुँह को पूरा भर दया. राकेश ने उसको तभी छोडा जब वो सारा वीय गटक गयी.

दोन एक दूसरे पर ढेर हो गये. पंक गु से और यार से पहले तो उसको देखती रही. जब उसको लगा क वीय पीना कुछ खास बुरा नही था तो वो राकेश से ि◌चपक गयी और उसके उपर आकर उसके चेहरे को चूमने लगी...

यहाँ इ पे टर कबीर अपनी मी टंग ख़तम करके अपने अिस टट पाठक को तहक़ क़ात

करने के िलए बोला और खुद अपने घर चला आया. तब दोपहर हो रही थी... कबीर अपनी गाड़ी से उतर कर अपने घर क तरफ मुड़ा... और उसने घर क बेल बजाई... दरवाजा एक लड़क ने खोला बला क खूबसूरत लड़क थी...नाम था... हाना...! कबीर और हाना क शादी हो गयी थी... कबीर ने जब उसे पहली बार देखा था तभी से उसे उससे यार हो गया था... तभी उसने अपने माता िपता से बातचीत करके कहा क ये लड़क मुझे पसंद है... तब उसके माता िपता ब त खुश ए य क कबीर के िलए ब त सारे र ते आए थे.... पर अपना कबीर कहाँ मानने वाला था.... उसे तो हाना ही पसंद आई थी... एक दन उसने अपने घर ये बात बता दी..तो उसके घर वाल ने हाना के घर पर बातचीत कर के दोनो क शादी करा दी....

तो हाना ने दरवाज़ा खोला और सामने कबीर को देख कर कमर पे हाथ रख के बोली... आ गये आप... चलो े श होकर खाना खा लो... कबीर चुप चाप कमरे म आ गया और बाथ म जाकर े श हो गया... तब तक हाना ने खाना परोस दया था... कबीर खाना खाने बैठ गया.. और चुप चाप खाना ख़तम कर दया... आप सब लोग सोच रहे ह गे... इतना रौब जमाने वाला कबीर घर पर यूँ िब ली बन कर रहता था... यूंक हाना थी ही वैसी...तीखी िमच थी वह... इसिलए कबीर उसके यार मे पागल ए जा रहा था... उसने खाना ख़तम कया और अपने बेड म मे चला गया...

जब सब बतन और घर का सारा काम करके हाना े श होने बाथ म मे चली गयी.... े श होके वो अपने बेड म मे कबीर के पास गयी तो कबीर ने उसे झटके से अपनी बाह मे भर िलया... हाना ने उसके गालो पर यार से चपत लगाई... और बोली... हर बार आपको कुछ ना कुछ सूझता रहता है...

कबीर बोला तुम हो ही ऐसी....तब हाना बोली “अ छा..” "हां चलो यार करते है..." कबीर बोला... मौसम कतना सुहाना है... बाहर बादल िघर आए है... तब हाना बोली चुप बैठो जब देखो तो यही सूझते रहता है... बेचारा कबीर या करता मन मसोस कर के बैठ गया... मुँह फूला कर ... करवट ले कर सो गया.. हाना भी उसके बगल मे करवट ले

कर सो गयी...

ले कन कबीर कहाँ स करने वाला था... कबीर ने पलट कर हाना को देखा... हाना न द मे होने का नाटक कर रही थी... उसे पता था क उसके पित अब या करने वाले है... कबीर ने उसके गले को चूमना शु कया और फर कबीर ने उसे पलट कर अपनी तरफ उसका मुँह कया और कबीर ने उसे यार से अपनी बाह मे जकड़ िलया.

दोनो के ह ठ खुद-ब-खुद एक दूसरे से िमल गये और चुंबन का वो खेल शु आ जो ब त देर तक चलता रहा. साँसे भड़क रही थी दोनो क पर मज़ाल है क ह ठो से ह ठ हट जाए. जुड़े रहे यू ही ब त देर तक.

जब ह ठ एक दूसरे से जुदा ए तो दोनो हांप रहे थे. कबीर ने अब हाना को सीधा कया और उसके उपर आ गया. कबीर का लंग पूरे तनाव म था और हाना को वो अपनी यिोन के ठीक उपर महसूस हो रहा था.

“तुम तो ब त उ ेजना िलए ए हो.” हाना ने बोल कर अपना चेहरा हाथो म छुपा िलया.

कबीर ने हाना के हाथ एक तरफ हटाए और फर से उसके ह ठो को अपने ह ठो म जाकड़ िलया. कबीर के हाथ कब हाना के सुराही दार उभारो तक प ँच गये उशे भी नही पता चला. अब कबीर बहके बहके अंदाज म हाना के उभारो से खेल रहा था.

कबीर ने अपने कपड़े उतार दए परंतु हाना अपनी सारी नही उतार पाई. मदहोश जो रही थी.

कबीर समझ गया क हाना क सारी भी उसे ही उतारनी पड़ेगी. बस फर या था ख च ली उसने सारी. हाना क तो साँसे अटक गयी. एक एक करके कबीर ने सब कुछ उतार दया उसके शरीर से. हाना तो उ ेजना म थर-थर काँप रही थी. ब त कामुक पल थे वो दोनो के बीच. अब वो पूरी तरह न अव था म थे. कबीर बड़े यार से हाना के उपर लेट गया. जब कबीर का उ ेजत लंग हाना क यिोन से टकराया तो वो कराह उठी,

“आआहह...कबीर ”

शायद दोनो से ही कना असंभव हो रहा था. मगर कबीर अभी हाना के अंगो से खेलना चाहता था. उसने हाना के उभारो के तना को मूह म ले कर चूसना शु कर दया.

कमरे म िसस कयाँ गूंजने लगी.

उसने कबीर के सर को थाम िलया और उसके बालो को सहलाने लगी. शायद वो कहना चाहती थी क कबीर ऐसे ही करते रहो यार मुझे. कुछ देर कबीर उभारो को ही चू ता रहा फर अ ानक ना जाने उसे या सूझी वो नीचे क और सरकने लगा.

हाना भी हैरत म पड़ गयी क आिख़र कबीर करना या चाहता है. कबीर नीचे सरक कर हाना क योिन के उपर प ँच गया... उसके ह ठ िब कुल हाना क योिन के उपर थे. भगवान ने या योिन बनाई थी... गुलाब क पंखुड़ीयाँ जैसे एक के उपर के िचपक ई िबना बाल वाली योिन ब त ही कहर ढा रही थी कबीर के उपर. रोज इसी तरह वो योिन को देख के कह खो सा जाता था पर हाना ने अपनी योिन पर हाथ रख िलया.

“मुझे रसपान तो करने दीजए इस यारी सी चीज़ का.” कबीर ने कहा और हाना का हाथ एक तरफ हटा कर अपने ह ठो को उसक योिन के ह ठो पर टका दया. हाना के शरीर म तो बीजली क लहर दौड़ गयी जैसे और उसक साँसे तेज हो गयी. ब त गहरा चुंबन िलया कबीर ने हाना क योिन का.

कोई एक िमिनट तक कबीर के ह ठ हाना क योिन से जुड़े रहे. ब त ही कामुक पल था वो दोनो के बीच. कबीर ने योिन का चुंबन लेने के बाद उसक पंखिुड़य को ह ठो म दबा िलया और चूसने लगा. हाना क हालत देखने वाली थी. वो टांगे पटाकने लगी िब तर पर और उसक साँसे उखाड़ने लगी.

“बस कबीर बस....समझने क कोिशस करो...बस.” (ना जाने पहले कतने दन और कतनी रात उ होने ये कम

ड़ा क थी ले कन रोज उ हे इसमे कुछ अलग ही कार का

आनंद आता था... य क हाना थी ही ऐसी थोड़ी नमक न, थोड़ी लज़ीज़ या क ँ म

बस यार करते रहो ऐसा कबीर को लगता था... ले कन या करे िबज़ी जो रहता था

अपने काम क वजह से) अब हाना कैसे कहे क बस आ जाओ और समा जाओ मुझ मे.

अब वो एक सुंदर संभोग के िलए तैयार थी, ये बात कबीर समझ रहा था पर वो हाना के मुँह से सुनना चाहता था. उसे तो हाना क यिोन से खेलने म ब त आनंद आ रहा था.

“बस कबीर क जाओ...समझते य नही...” हाना ने फर कहा.

“ या आ... या आपको अ छा नही लग रहा.”

“ऐसा नही है. ब त अ छा लग रहा था. हालत खराब कर दी तुमने मेरी. अब समा भी जाओ मुझमे...म तरस रही ँ तु हारे िलए. कब तक तडपाओगे तुम” हाना ने बोल ही दी अपने दल क बात.

कबीर तो झूम उठा, “पहले य नही कहा आपने.”

“शरम नही आएगी या मुझे ये सब बोलते ए. पर तुमने बुलवा ही दया. ब त जिालम हो तुम.” हाना ने कबीर क छाती पर मु ा मारा.

“लिीजए अभी घु सा देता ँ आपके अंदर. म तो खुद तड़प रहा ँ.” कबीर ने कहा.

कबीर ने अपने लंग को हाथ म पकड़ा और टका दया यिोन पर. जब कबीर का लंग हाना क यिोन म थोड़ा सा घु सा तो वो कराह उठी.”आआहह” धीरे धीरे कबीर पूरा समा गया हाना म और इस तरह यार म डूबे दो दल जुड़ गये गहराई से एक दूसरे के साथ. फर या था उस कमरे म यार का वो बेवडर उठा िजसने कमरे म तूफान मचा दया. िब तर बुरी तरह िहल रहा था. लगता था जैसे क टूट जाएगा आज. हाना क िशस कयाँ गूँज रही थी कमरे म. उसने मदहोशी म िब तर क च र को मु ी म भीच िलया था.

“आअहह कबीर कही ये िब तर ना टूट के िबखर जाए. थोड़ा धीरे आआहह.”

“टूट जाने दो आज सब कुछ. यार का तूफान है ये. कुछ तो होगा ही. म खुद को नही थाम सकता. हमेशा मेरे साथ रहना तुम.”

“बीवी ँ तु हारी.... आहह... तु हारे साथ नही र ंगी तो कहाँ र ंगी.”

कबीर तो जैसे पागल हो गया था, िबना के हाना के साथ काम

ड़ा म लगा रहा.

हाना क तो हालत पतली हो गयी थी. ले कन वो कबीर के हर ध े पे खुद को ज त म महसूस करती थी. तूफान आता है तो थमता भी है.

कबीर ने ेम रस डाल दया हाना के अंदर और िनढाल हो कर िगर गया हाना के उपर. दोनो कुछ भी कहने क हालत म नही थे. साँसे फूल रही थी दोनो क . बस पड़े रहे चुपचाप. तूफान के बाद क शांित म खो गये थे दोनो. यार ही कुछ ऐसा था दोनो का.

उधर कबीर का संभोग चल रहा था तो इधर राकेश अपने दूसरे राउंड के िलए रेडी हो रहा था... वो लोग टीवी देख रहे थे.... उसने पंक को वापस अपनी बाह म उठा िलया और बेड पर ले जाकर पटक दया.

पंक क़ातिल िनगाह से उसको देखने लगी. राकेश भी कुछ सोचकर ही आया था," मेरी तु हारे साथ नहाने क बड़ी इ छा है. चल वो तो राकेश क दीवानी थी; कैसे मना करती," एक शत है?" "बोलो!" "तुम मुझे नहलाओगे!"

उसक शत म राकेश का भी भला था. "चलो! यह से शु आत कर देता ँ" कहकर राकेश पंक के शरीर का एक एक कपड़ा उतार कर अनावृत करने लगा. पंक गरम हो गयी थी. नंगी होते ही उसने राकेश को बेड पर नीचे िगरा िलया और तुरंत ही उसको भी नंगा कर दया. वह उसके उपर जैसे िगर पड़ी और उसके ह ठ पर अपनी मोहर लगाने लगी.

राकेश पलट कर उसके उपर आ गया, उसने उसक छाती को दबा दया.... पंक क िससक िनकल गयी. उसने राकेश का िसर अपनी तन पर दबा दया.

राकेश उस पर भूखे शेर क तरह टूट पड़ा, और िज म को नोचने लगा, वह सच म ही ब त से सी थी. राकेश उठा और अपना लंग उसको चखने के िलए पेश कया. पंक भी इस कुलफ को खाने को तरस रही थी.

उसने झट से मुँह खोलकर अपनी योनी के यार को अपने गरम ह ठ म क़ैद कर िलया. कमरे का टे परेचर बढ़ता जा रहा था. रह रह कर पंक के मुँह से जब उसका लंग बाहर िलकलता तो 'पंप' क आवाज़ होती.

पंक ने चूस चूस कर राकेश के लंग को एकदम िचकना कर दया था; अपनी कसी योनी के िलए तैयार! राकेश ने पंक को पलट दया. और उसके िनतंब को मसलने लगा. उसने पंक को बीच से उपर कया और एक त कये को वहाँ सेट कर दया. पंक क िनतंब उपर उठ गयी.....उसक दरार और खुल सी गयी.

पंक को ज द ही समझ आ गया क आज राकेश का इरादा ख़तरनाक है; वह िनतंब के टाइट छेद पर अपना थूक लगा रहा था.... " लीज़ यहाँ नही!" पंक को डर लग रहा था... फर कभी कर लेना...!" अभी नही तो कभी नही वाले अंदाज म राकेश ने अपनी उंगली उसक िनतंब म फँसा दी, ऐसा तो वो पहले भी उसको ठो े ए कर चुका था!

पर आज तो उसका इरादा असली औजार वहाँ इ तेमाल करने का लग रहा था. पंक को उंगली अंदर बाहर लेने म परेशानी हो रही थी. उसने अपनी िनतंब को और चौड़ा दया ता क कुछ राहत िमल सके. कुछ देर ऐसे ही करने के बाद राकेश ने े संग टेबल के ॉयर से को ड

म िनकाल ली," इससे आसान हो हो जाएगा"

जैसे ही को ड

म लगी ई उसक उंगली पंक क िनतंब क दरार से गुज़री, पंक को िचकनाई और ठंडक का अहसास आ, ये अपे ाकृत अिधक सुखदायी था. करीब 2 िमिनट तक राकेश उंगली से ही उसके 'दूसरे छेद' म उंगली करता रहा, अब पंक को मज़ा आने लगा था.

उसने अपनी िनतंब को थोड़ा और उँचा उठा िलया और रा ते और आसान होते गये; फर थोड़ा और.... फर थोड़ा और..... थोड़ी देर बाद वह कुितया बन गयी.....! इस ि थित म उसक िनतंब क आँख सीधे छत को देख रही थी, उंगली िनकालने पर भी वह थोड़ी देर खुली रहती थी.

राकेश ने उंगली का साइज़ बढ़ा दया; अब अंगूठा अपने काम पर लगा था. राकेश झुका और पंक क योनी का दाना अपने ह ठ म दबा िलया, वह तो 'हाइ मर गयी' कह बैठी

मरी तो वह नही थी ले कन राकेश को पता था वह मरने ही वाली है.

राकेश घुटने मोड़ कर उसक ितंब पर झुक गया, टारगेट सेट कया और 'फायर!'.....

पंक िच नक पड़ी, पहले ही वार म िनशाना सटीक बैठा था..... लंग आधा इधर.... आधा उधर.... पंक मुँह के बल िगर पड़ी, लंग अब भी फँसा आ था.... "

स.... लीज़....

क... जाओ! और नही"

पंक का ये कहना यूँही नही था... उसक ितंब फैल कर खुल चुक थी.....!

राकेश ने सैयम से काम िलया; उसक छातीया दबाने लगा..... कमर पर कस करने लगा.... !

पंक कुछ शांत ई, पर वह बार बार कह रही थी," िहलना मत....िहलना मत!"

राकेश ने उसको धीरे से उपर उठाया.... धीरे.... धीरे और उसको वापस चार पैर वाली बना दया.....कुितया कं तरह!

राकेश ने अपना लंग थोड़ा सा बाहर ख चा.... उसक ितंब के अ ुिन िह से को थोड़ी राहत ब शी और फर जुलम ढा दया... पूरा जुलम उसक ितंब म ही ढा दया.

पंक को काटो तो खून नही.... बदहवास सी होकर कुछ कुछ बोलने लगी, शायद बताना ज़ री नही!

राकेश ने काम चालू कर दया.... कमरे का वातावरण अजीबोगरीब हो गया था. पंक कभी कुछ बोलती.... कभी कुछ. कभी राकेश को कु ा कहती.... कभी कमीना कहती.... और फर उसी को कहती.....आइ लव यू जान.... जैसे मज़ा देने वाला कोई और हो और सज़ा देने वाला कोई और आिख़रकार पंक ने राहत क साँस ली....

उसका दद लगभग बंद हो गया.... अब तो लंग उसक ितंब म सटाक से जा रहा था और फटाक से आ रहा था.... फर तो दोन जैसे दूध म नहा रहे हो.... सारा वातावरण अस य हो गया था.... लगता ही नही था वो पढ़े िलखे ह.... आज तो उ होने मज़े लेने क हद तक मज़ा िलया..... मज़े देने क हद तक मज़ा दया.... और आिख़र आते आते दोन टूट चुके

थे..... हाई राम!

फर पंक उठी और उसको बोली... राकेश शाम हो गयी है... लीज़ उठो ज दी ज दी

तै यार हो जाओ और घर पर भागो... मेरे म मी डॅडी आते ही ह गे... राकेश उठ गया

और े श होकर चला गया... वो मन ही मन बोला मेरा काम तो हो गया है... अब म फर

कभी नही आउ गा इधर ऐसा मन ही मन सोचता वो घर क तरफ िनकल पड़ा...

रात को जब राकेश वहाँ से िनकला अपने घर के िलए तब उसे याद आया क अरे मेरा फोन

तो ि वच ऑफ.... तब उसे याद आया क हाँ ठुकाई के दरिमयाँ कसी का तो फोन आया

था और पंक ने उसे काट के फोन ि वच ऑफ कर दया था.

राकेश ने फोन ि वच ऑन कया और नंबर देखा... नंबर उसके एक दो त का था... उसने

वो फोन िमलाया और उससे बाते करने लगा... बाते करते करते उसके चेहरे का मानो जैसे

रंग ही उड़ गया था... उसने फर इधर उधर क बाते क और फोन काट दया...

वह अपने जड़े, मुलायम, रेशमी ग ी पर वैसा ही जड़ा, मुलायम, रेशमी त कया सीने से

िलपटा कर बराबर करवट बदल रहा था. शायद वह िड टब होगा... उसे रह रह कर यही

ख़याल आ रहे थे क कसने महेश को मारा होगा... काफ़ समय तक उसने सोने का यास

कया ले कन उसे न द नही आ रही थी. आिख़र करवट बदल बदल कर भी न द नही आ

रही थी इसिलए वह बेड के नीचे उतर गया. पैर मे ि लपर चढ़ाई.

या कया जाय...?

ऐसा सोच कर राकेश कचन क तरफ चला गया. कचन मे जाकर कचन का लाइट

जलाया.

ज से पानी क बॉटल िनकाली. बड़े बड़े घूँट लेकर उसने एक ही झटके मे पूरी

बॉटल खाली कर दी. फर वह बॉटल वैसी ही हाथ मे लेकर वह कचन से सीधा हॉल मे

आया. हॉल मे पूरा अंधेरा छाया आ था. राकेश अंधेरे मे ही एक कुस पर बैठ गया.

चलो थोड़ी देर टीवी देखते है...

ऐसा सोच कर उसने बगल मे रखा आ रमोट लेकर टीवी शु कया. जैसे ही उसने टीवी

शु कया डर के मारे उसके चेहरे का रंग उड़ गया, सारे बदन मे पसीने छूटने लगे और उसके हाथ पैर काँपने लगे.... डर के मारे उसका दल मुँह को आगेया था... उसके सामने अभी अभी शु ए टीवी क

न पर एक खून क लक र बहते ए उपर से नीचे तक

आई थी. हड़बड़ा कर वो एक दम खड़ा ही आ, और वैसे ही घबराई ए हालत मे उसने कमरे का ब ब जलाया.

कमरे मे तो कोई नही है....

उसने टीवी क तरफ देखा. टीवी के उपर एक माँस का टूटा आ टुकड़ा था और उसमे से अभी भी खून बह रहा था.

चलते, लड़खड़ाते ए वह टिलफोन के पास गया और अपने कपकपाते हाथ से उसने एक फोन नंबर डाइयल कया.

भाग - 2

सुबह का व कबीर अपने घर मे चाइ पी रहा था, तभी उसके सेल पर पाठक का फोन आया. पाठक क बात सुन कर एक पल को तो कबीर के चेहरे पर गु सा आ गया. ले कन खुद को संभाल कर कबीर ने कहा दस िमनट मे मुझे िपक अप करने आओ.

बाहर एक कॉलोनी के ले ाउंड पर छोटे ब े खेल रहे थे. इतने मे ज़ोर ज़ोर से साइरन क आवाज़ बजाती ई एक पोलीस क गाड़ी वहाँ से, बगल के रा ते से तेज़ी से गुजरने लगी. साइरन का आवाज़ सुनते ही कुछ खेल रहे छोटे ब े घबरा कर अपने अपने मा-बाप क तरफ दौड़ पड़े. पोलीस क गाड़ी आई उसी गित मे वहाँ से गुजर गयी और सामने एक मोड़ पर दाई तरफ मूड गयी.

पोलीस क गाड़ी साइरन बजाती ई एक मकान मे सामने आकर क गयी. गाड़ी क बराबर इं पे टर कबीर के ने व मे एक पोलीस का दल गाड़ी से उतर कर मकान क तरफ दौड़ पड़ा.

“तुम लोग ज़रा मकान मे आसपास देखो...” कबीर ने उनमे से अपने दो सिाथय को

िहदायत दी. वे दोनो बाक सिाथय को वह छोड़ कर एक दाई तरफ से और दूसरा बाई तरफ से इधर उधर देखते ए मकान के िपछवाड़े दौड़ने लगे. बाक के पोलीस पाठक और कबीर दौड़ कर आकर मकान के मु य ार के सामने इक ा हो गये.

उसमे के एक ने, पाठक ने बेल का बटन दबाया. बेल तो बज रही थी ले कन अंदर कुछ भी आहट नही सुनाई दे रही थी. थोड़ी देर राह देख कर पाठक ने फर से बेल दबाई, इसबार दरवाजा भी खटखटाया.

“हेलो.... दरवाजा खोलो...” उ ही मे से कसी ने दरवाजा खटखटा ते ए अंदर आवाज़ दी.

ले कन अंदर कोई हलचल या आहट नही थी. आिख़र िचढ़कर कबीर ने आदेश दया, “दरवाजा तोडो...”

पाठक और और एक दो साथी िमल कर दरवाजा ज़ोर ज़ोर से ठ क रहे थे.

“अरे इधर ध ा मारो...”

“नही अंदर क कु डी यहाँ होनी चिाहए... यहाँ ज़ोर से ध ा मारो...”

“और ज़ोर से....”

“सब लोग िसफ़ दरवाजा तोड़ने मे मत लगे रहो... कुछ लोग हमे गाड भी करो..”

सब गड़बड़ मे आिख़र दरवाजा ध े मार मार कर उ होने दरवाजा तोड़ दया.

दरवाजा तोड़ कर दल के सब लोग घर मे घुस गये. इं पे टर कबीर हाथ मे बंदूक लेकर सावधानी से अंदर जाने लगा. उसके पीछे पीछे हाथ मे बंदूक लेकर बाक लोग एक दूसरे को गाड करते ए अंदर घुसने लगे. अपनी अपनी बंदूक तान कर वे सब लोग तुरंत घर मे फैल ने लगे. ले कन हॉल मे ही एक िवदारक

य उनका इंतेज़ार कर रहा था. जैसे ही

उ होने वह

य देखा, उनके चेहरे का रंग उड़ गया था.

उनके सामने सोफे पर राकेश िगरा आ था, गदन कटी ई, सब चीज़े इधर उधर फैली ई, उसक आँख बाहर आई ई थी और सर एक तरफ धूलका आ था. ब त क ददनाक मंज़र

था. वहाँ पर खड़े सभी लोगो के र गटे खड़े हो गये थे ये

य देख कर. कबीर ने तो अपने

पूरे पोलीस और इं पे टर कॅ रयर मे भी ऐसा खून नही देखा था. ऐसा दल दहला

देनेवाला मंज़र था. उसका भी खून उसी तरह से आ था िजस तरह से महेश का. सारी

चीज़े इधर उधर फैली ई थी इससे ये तीत हो रहा था क यह भी मरने के पहले ब त

तडपा होगा.

“घर मे बाक जगह ढुंढ़ो...” कबीर ने आदेश दया.

टीम के तीन चार मबज़ मकान मे कितल को ढूँढ ने के िलए इधर फैल गये.

“बेड म मे भी ढुंढ़ो...” कबीर ने जाने वाल को िहदायद दी.

इं पे टर कबीर ने कमरे मे चारो तरफ एक नज़र दौड़ाई. कबीर को टीवी के

न पर

बहकर नीचे क और गयी खून क लक र और उपर रखा आ माँस का टुकड़ा दख गया.

कबीर ने छानबीन टीम के एक मबर को इशारा कया. वह तुरंत टीवी के पास जाकर वह

सबूत इक ा करने मे जुट गया. बाद मे कबीर ने हॉल क िखड़ कय क तरफ देखा. इसबार

भी सारी िखड़ कयाँ अंदर से बंद थी. अचानक सोफे पर िगरी कसी चीज़ ने कबीर का

यान ख च िलया. वह वहाँ चला गया.

जो था वह उठाकर देखा. वह एक बाल का गु छा था, सोफे पर बॉडी के बगल मे पड़ा

आ. वे सब लोग आ य से कभी उस बाल के गु छे क तरफ देखते तो कभी एक दूसरे क

तरफ देखते. छानबीन टीम के एक मबर ने वह बाल का गु छा लेकर लि टक के बॅग मे

आगे क तफ़तीश के िलए सील बंद कया.

पाठक गड़बड़ाया आ कभी उस बाल के गु छे को देखता तो कभी टीवी पर रखे उस माँस

के टुकड़े क तरफ. उसके दमाग़ मे... उसके ही य बाक लोग के दमाग़ मे भी एक ही

समय काफ़ सारे सवाल मंडरा रहे थे. ले कन पूछे तो कस को पूछे?

इं पे टर कबीर और पाठक कॅफे मे बैठे थे. उनमे कुछ तो गहन चचा चल रही थी. उनके

हावभाव से लग रहा था क शायद वे हाल ही मे ए दो खून के बारे मे चचा कर रहे ह गे. बीच बीच मे दोनो भी कॉफ के छोटे छोटे घूँट ले रहे थे. अचानक कैफे टीवी पर चल रही खबर ने उनका यान आक षत कया.

इं पे टर कबीर ने जी तोड़ कोशश क थी क मीडया हाल ही मे चल रहे खून को यादा ना उछाले. ले कन उनके लाख कोशश के बाद भी मीडीया ने जानकारी हासल क थी. आख़र इं पे टर कबीर क भी कुछ मयादाए थी. वे एक हद तक ही बाते मीडीया से छुपा सकते है और कभी कभी िजस बात को हम छुपाना चाहते है उसी को ही यादा उछाला जाता है.

टीवी युज रीडर बोल रहा था – "कातल ने क ल कए और एक श स क लाश आज तड़के पोलीस को िमली. िजस तरह से और िजस बेदद से पहला खून आ था उसी बेदद या यूँ कहए उससे भी यादा बेदद से... इस श स को भी मारा गया. इससे कोई भी इसी नतीजे पर प चेगा क इस शहर मे एक खुला सी रयल क लर घूम रहा है.... हमारे सू ने दए जानकारी के िहसाब से दोनो भी शव ऐसे कमरे मे िमले क़ जो जब पोलीस प िच तब अंदर से बंद थे. पोलीस को जब इस बारे मे पूछा गया तो उ होने इस मसले पर कुछ भी ट पणी करने से इनकार कया है. िजस इलाक़े मे खून आ वहाँ आस पास के लोग अब भी इस भारी सदमे से उभर नही पाए है.... और शहर मे तो सब तरफ दहशत का मौहाल बन चु ा है. कुछ लोग के कहे अनुसार िजन दो श स का खून आ है उनके नाम पर गंभीर गुनाह दिखल है. इससे एक ऐसा िन कष िनकाला जा सकता है को जो भी खूनी हो वह गुनहगार को ही सज़ा देना चाहता है.... इसक वजह से कुछ आम लोग तो कातल क वाह वाह कर रहे है..."

"अगर खूनी को मीडीया अटे षन चाहए था तो वह उसमे कामयाब हो चु ा है... हमने लाख कोशश क ले कन आख़र कब तक हम भी ेस से बाते छुपा पाएँगे..." इं पे टर कबीर ने पाठक से कहा. ले कन पाठक कुछ भी बोला नही. य क अब भी वह ख़बरे सुन ने मे

त था.

जो भी हो यह सब जानकारी अपने िडपाटमट के लोगो ने ही लीक क है..

ले कन अब कुछ भी नही कया जा सकता है...

एक बार धनुष से छूटा तीर वापस नही िलया जा सकता है...

कबीर सोच रहा था फर और एक िवचार कबीर के दमाग़ मे चमका –

कह ये उस दन यादा मेरा दमाग़ खराब कर रहा था उस ऑफ सर का तो काम नही...

जो सब जानका रयाँ लीक कर रहा हो...

पाठक अभी भी टीवी क ख़बरे सुन ने मे

त था.

शहर मे सब सारी तरफ दहशत फैल चुक थी.

एक सी रयल क लर शहर मे खुला घूम रहा है...

पोलीस अब भी उसको पकड़ने मे नाकामयाब....

वह और कतने क ल करनेवाला है...?

उसका अगला िशकार कौन होगा...?

और वह लोग को य मार रहा है..?

कुछ कारण बस या यूँ ही...?

इन सारे सवाल के जवाब कसी के पास भी नही थे.

शाम हो चुक थी कबीर और पाठक ने फर इधर उधर क बात क और अपने अपने घर

क तरफ िनकल पड़े.

शाम के 9 बज रहे थे जब कबीर अपने घर क तरफ बढ़ा अपनी गाड़ी से उतर कर. कबीर

ने बेल बजाई. हाना ने दरवाजा खोला... हाना का चेहरा देखते ही कबीर एकदम े श

महसूस करने लगा.... उसका सवाल से भरा दमाग़ एक पल तो शांत हो गया.

घर मे आकर कबीर े श आ और हाना ने खाना परोसा... खाना परोसने के बाद दोनो

ने िमलकर एक दूसरे को खाना िखलाया और कबीर बेड म मे चला गया. हाना सब

काम िनपटा कर जब बेड म मे घुसी तो कबीर को सोचता पाया... हाना ने पूछा क या हाल है जनाब इतना या िवचार कर रहे हो... कबीर आज घटी सारी घटनाए उसको बता दी... और बोला तुम छोड़ो ना ये सब और उसको बाह मे भर के उसके ह ठो पर खुद के ह ठ रख दए और एक गहरा चुंबन लेने लगा...

हाना ने कबीर क तरफ देखा इससे पहले के कुछ समझ पाती, कबीर ने एक हाथ से अपनी पट खोली और उसको एक तरफ फक दया और दूसरे हाथ से हाना का हाथ अपने लंग पे रख दया.

हाना ने हाथ हटाने क किोशश क पर कबीर ने उसका हाथ मज़बूती से पकड़ रखा था. कुछ पल दोनो यूँ ही के रहे और फर धीरे से हाना ने अपना हाथ लंग पे उपेर क ओर कया.

कबीर इशारा समझ गया क हाना मान गयी है और उसने अपना हाथ हटा िलया. कबीर के लंग को देखते ए अपना हाथ ज़ोर ज़ोर से उपेर नीचे कर रही थी.

थोड़ी देर बाद जब उसका हाथ थकने लगा तो उसने अपना दूसरा हाथ भी लंग पे रख दया और दोनो हाथ से लंग को िहलाने लगी जैसे कोई खंबा िघस रही हो.

कबीर का एक हाथ विापस उसक िनतंब पे जा चुका था और नीचे सारी के उपेर से उसक योनी को मसल रहा था. हाना दोनो हाथ से लंग पे मेहनत कर रही थी और नीचे कबीर क उंगिलयाँ उसक योनी को जैसे कुरेद रही थी. हाना ने हटने क कोई किोशश नही क थी. चुपचाप बैठी ई थी और योनी मसलवा रही थी.

उसका लाउस पसीने से भीग चुका था और उसके दोनो तना सॉफ नज़र आ रहे थे. कबीर ने दूसरा हाथ उठाके उसक छाती पे रख दया और उसक बड़ी बड़ी छातीय को रगड़ने लगा.

एक उंगली उसके लीवेज से होती दोनो तन के बीच अंदर तक चली गयी. फर उंगली बाहर आई और इस बार कबीर ने पूरा हाथ नीचे से उसके लाउस म घुसकर उसक नंगी छाती पे रख दया. ठीक उसी पल उ होने अपने दूसरे हाथ क उंगिलय को हाना क

योनी पे ज़ोर दबाया.

हाना को िज म म जैसे करंट दौड़ गया. वो ज़ोर से कबीर के हाथ पे बैठ गयी जैसे सारी फाड़ कर उंगिलय को अंदर लेने क कोिशश कर रही हो. उसके मुँह से एक लंबी आआआआआअहह िनकल पड़ी और उसक योनी से पानी बह चला.

अगले ही पल कबीर उठ बैठा, हाना को कमर से पकड़ा और िब तर पे पटक दया. इससे पहले के हाना कुछ समझ पाती, लंग उसके हाथ से छूट गया और कबीर उसके उपेर चढ़ बैठा.

उसक पहले से ही घुटनो के उपेर हो रखी सारी को ख चकर उसक कमर के उपेर कर दया. हाना आने से पहले ही ा और पटी उतारके आई थी इसिलए सारी उपेर होते ही उसक योनी उसके पित के सामने खुल गयी.

वो अब तक कबीर के अपनी योनी पे दबी उंगिलय के मज़े से बाहर ही ना आ पाई थी. जब तक हाना क कुछ समझ आया के या होने जा रहा है तब तक कबीर उसक दोनो टांगे खोलके घुटनो से मोड़ चुका था.

उसके दो पावं के पंजे कबीर के पेट पे रखे ए थे िजसक वजह से उसक योनी पूरी तरह से खुलके कबीर के सामने आ गयी थी. हाना रोकने क कोिशश करने ही वाली थी के कबीर ने लंग उसक योनी पे रखा और एक ध ा मारा.

उसका पूरा िज म अकड़ गया और उसने अपने दोनो पावं इतनी ज़ोर से झटके के कबीर क मज़बूत पकड़ म भी नही आए... तब तक कबीर उसके उपेर लेट चुका था. हाना ने अपने दोनो नाख़ून कबीर क पीठ म गाड़ दए.

उसके दाँत कबीर के कंधे म गढ़ते चले गये. इसका नतीजा ये आ के कबीर गु से म थोड़ा उपेर को आ और उसके लाउस को दोनो तरफ से पकड़के ख चा. खत, खत, खत, लाउस के सारे बटन खुलते चलये गये. ा ना होने के कारण हाना क दोनो छातयाँ आज़ाद हो गयी.

बड़ी बड़ी दोनो छातयाँ देखते ही कबीर उनपर टूट पड़ा. एक छाती को अपने हाथ म

पकड़ा और दूसरी का तना अपने मुँह म ले िलया. हाना के िज म म अब ची टयाँ दौड़ रही थी.

तभी उसे महसूस आ के कबीर अपना लंग बाहर ख च रहा ह पर अगले ही पल दूसरा ध ा पड़ा और इस बार हाना क आँख के आगे तारे नाच गये. योनी पूरी फेल गयी और उसे लगा जैसे उसके अंदर उसके पेट तक कुछ घुस गया हो.

कबीर के जांघे उसक िनतंब से आ लगे और उसे एहसास आ के पहले िसफ़ आधा लंग गया था इस बार पूरा घुसा है. उसक मुँह से ज़ोर से चीख िनकल गयी.

"आआआआहह कबीर " हाना ने कसकर दोनो हाथ से कबीर को पकड़ िलया और उससे िलपट सी गयी जैसे दद भगाने क किोशश कर रही हो. उसका पूरा बदन अकड़ चुका था. लग रहा था जैसे आज पहली बार ठुक रही हो. बि क इतना दद तो तब भी ना आ था जब कबीर ने उसे पहली बार ठोका था. उस रात कबीर ने उसे आराम से धीरे धीरे ठोका थां.ले कन आज क रात उसे या हो गया था उसे भी नही मालूम जानवर जैसा बरताव कर रहा था... तो कबीर ने तो िबना उसक मज़ क परवाह के लंग जड़ तक अंदर घुसा दया था..

कबीर कुछ देर यूँही का रहा. दद क एक हेर उसक छाती से उठी तो हाना को एहसास आ के दूसरा ध ा मारते ए उसके पित ने उसक एक छाती पे दाँत गढ़ा दया था. कबीर ने अब धीरे धीरे ध े मारने शु कर दए थे. लंग आधा बाहर िनकलता और अगले ही पल पूरा अंदर घुसा देता.

हाना के दद का दौर अब भी ख़तम नही आ था. लंग बाहर को जाता तो उसे लगता जैसे उसके अंदर से सब कुछ लंग के साथ साथ बाहर ख च जाएगा और अगले पल जब लंग अंदर तक घुसता तो जैसे उनक आँख बाहर िनकलने को हो जाती. उसक पलक से पानी क दो बूँद िनकालके उसके गाल पे आ चुक थी.

उसक घु ट घु ट आवाज़ म अब भी दद था िजससे बेख़बर कबीर उसे लगातार छोड़े जा रहे था. लंग वैसे ही उसक योनी म अंदर बाहर हो रहा था बि क अब और तेज़ी के साथ

हो रहा था.

कबीर के हाथ अब हाना क मोटी ितंब पे था िजसे उ होने हाथ से थोड़ा सा उपेर उठा रखा था ता क लंग पूरा अंदर तक घुस सके. वो उसके दोनो तना पे अब भी लगा आ था और बारी बारी दोनो चूस रहा था.

हाना क दोनो टाँग हवा म थी ि ज ह वो चाहकर भी नीचे नही कर पा रहे थी यूंक जैसे ही घुटने नीचे को मोडती तो जांघ क नसे अकड़ने लगती िजससे बचने के िलए उसे टांगे फर हवा म सीधी करनी पड़ती.

कमरे म बेड क आवाज़ ज़ोर ज़ोर से गूँज रही थी. हाना क ितंब पे कबीर के जांघे हर झटके के साथ आकर टकरा रहे थे. दोनो के ि ज म आपस म टकराने से ठप ठप क आवाज़ उठ रही थी.

कबीर के ध ो म अब तेज़ी आ गयी थी. आ नक एक ज़ोर का ध ा हाना के योनी पे पड़ा, लंग अंदर तक पूरा घुसता चला गया और उसक योनी म कुछ गरम पानी सा भरने लगा. उसे एहसास आ के कबीर थक चुका ह. मज़ा तो उसे या आता बि क वो तो शु मना रही थी क काम ख़तम हो गया.

कबीर अब उसके उपेर िगर गया था. लंग अब भी योनी म था, हाथ अब भी हाना के ितंब पे था और मुँह म एक तना िलए धीरे धीरे चूस रहा था. हाना ने एक लंबी साँस छोड़ी और गु से से कबीर को परे धकेल दया. कबीर तब अपनी तं ा से जगा और उससे माफ माँग ने लगा.

वो बोला क सौरी जान मुझे आज या आ मुझे ही पता नही चल रहा था. लीज़ बुरा मत मान ना. हाना कुछ नही बोली और चुप चाप पड़ी रही. कबीर को भी लगा अब इससे बात करना ठीक नही है कल सुबह देख लगे और वो भी चुप चाप पड़ा रहा कब उसे न द आ गयी पता ही नही चला.

ले कन उसके बगल मे पड़ी हाना सूबक रही थी... वो सोच रही थी ना जाने आज कबीर को या आ था... इस ठुकाई से वो भी थक चुक थी इसिलए उसे भी कब न द आ गयी

पता ही नही चला.

उधर कबीर क काम

ड़ा चल रही थी ले कन इधर एक श स ब त ि ड टब लग रहा था.

नाम ि नतीन, ऊ ि तस के आस पास, टाइि ल ट,, अपने बेड म मे सोया था. वह रह रह कर बेचैनी से अपनी करवट बदल रहा था. इससे ऐसा लग रहा था क आज उसका दमाग़ कुछ जगह पर नही था. यूँ ना हो ि जसके दो दो तो का क ल इतने बेरेहमी कया गया हो. थोड़ी देर करवट बदल कर सोने क कोिशश करने के बाद भी उसे न द नही आ रही थी यह देख कर वह बेड से उठ कर बाहर आ गया, इधर उधर एक नज़र दौड़ाई और फर से बेड पर जाकर बैठ गया.

उसने बेड के बगल मे रखा एक मॅगज़ीन उठाया और उसे खोल कर पढ़ते ए फर से बेड पर लेट गया. वह उसे मॅगज़ीन के प े, ि जस पर लड़ कय क न त वीरे छपी थी, पलट ने लगा.

से स ईज़ द बे ट वे टू डाइवट युवर माइंड.....

उसने सोचा. आ नक दूसरे कमरे से 'ध प' ऐसा कुछ आवाज़ उसे सुनाई दया. वह च क कर उठ बैठा, मॅगज़ीन बगल मे रख दया और वैसे ही डरे सहमे हाल मे वह बेड से नीचे उतर गया.

यह कैसी आवाज़ थी...

पहले तो कभी नही आई थी ऐसी आवाज़...

ले कन आवाज़ आने के बाद म इतना य च क गया...

या हो सकता है आज अपनी मन क ि थित पहले से ही अ छी ना होने से ऐसा आ होगा....

धीरे धीरे इधर उधर देखते ए वह बेड म के दरवाजे के पास गया. दरवाजे क कु डी खोली और धीरे से थोड़ा सा दरवाजा खोल कर अंदर झाँक कर देखा.

सारे घर मे ढूँढ ने के बाद ि नतीन ने हॉल मे वेश कया. हॉल मे घना अंधेरा था. हॉल मे

लाइट जला कर उसने डरते ए ही चारो तरफ एक नज़र दौड़ाई....

ले कन कुछ भी तो नही...

सब कुछ वह का वही रखा आ था...

उसने फर से लाइट बंद कया और कचन क तरफ िनकल पड़ा.

कचन मे भी अंधेरा था. वहाँ का लाइट जला कर उसने चारो तरफ एक नज़र दौड़ाई. अब

उसका डर काफ़ कम हो चुका था....

कह कुछ तो नही...

इतना डर ने कुछ ज़ रत नही थी...

वह पलट ने के िलए मुड़ने ही वाला था क कचन मे संक मे रखी कसी चीज़ ने उसका

यान आक षत कया. उसक आँख आ य और डर क वजह से बड़ी ई थी. एक पल मे

इतनी ठंड मे भी उसे पसीना आया था. हाथ पैर कांप ने लगे थे. उसके सामने संक मे खून

से सना एक माँस का टुकड़ा रखा आ था.

एक पल का भी समय ना गँवाते ए वह वहाँ से भाग खड़ा आ, या कया जाय उसे कुछ

सूझ नही रहा था. गड़बड़ाये और घबराए ए हाल मे वह सीधा बेड म मे भाग गया और

उसने अंदर से कु डी बंद कर ली थी.

भाग - 3

इं पे टर कबीर बॅड मंटन खेल रहा था. रोजमरा के तनाव से मु के िलए यह एक अ छा

उपाय उसने ढूँढा था. इतने मे अचानक कबीर का मोबाइल बजा. कबीर ने िडस ले देखा, ले कन फोन नंबर पहचान का नही लग रहा था. उसने एक बटन दबाकर फोन अटड कया,

“ यस...”

“इं पे टर मंजीत संह िहयर....” उधर से आवाज़ आया.

“हाँ बोलो मंजीत संह....” कबीर दूसरे स वस क तै या र करते ए बोला.

“मेरे जानकारी के िहसाब से आप हाल ही मे चल रहे सी रयल क लर केस के इंचाज

हो.... बराबर...?” उधर से मंजीत संह ने पूछा....

“जी हाँ...” कबीर ने सी रयल क लर का िज़कर होते ही अगला गेम खेलने का िवचार

याग दया और वह आगे या बोलता है यह यान से सुन ने लगा.

“अगर आपको कोई ऐतबारर ना हो... मतलब अगर आज आप

हो तो.... या आप

इधर मेरे पोलीस टेशन मे आ सकते हो...? मेरे पास इस केस के बारे मे कुछ मह वपूण

जानकारी है... शायद आपके काम आएगी...”

“ठीक है... कोई बात नही...” कबीर ने कहा.

कबीर ने मंजीत संह से फोन पर िमलने का व वगैरे सब तय कया.

पोलीस टेशन मे इं पे टर कबीर इं पे टर मंजीत संह के सामने बैठा आ था. इं पे टर

मंजीत संह इस पोलीस टेशन का इंचाज था. इं पे टर मंजीत संह का फोन आने के बाद

बॅड मंटन का अगला गेम खेलने क कबीर क इ छा ही ख़तम हो चुक थी. अपना सामान

इक ा कर वह ताबड़तोड़ तै या र कर अपने पोलीस टेशन मे जाने के बजाय इधर िनकल

आया था.

उनका ‘हाई हेलो’ – सब फरमॅिलटीस होने के बाद अब इं पे टर मंजीत संह के पास उसके

केस के बारे मे या जानकारी है यह सुन ने के िलए वह उसके सामने बैठ गया. इं पे टर

मंजीत संह ने सब जानकारी बताने के िलए पहले एक बिधया पिोझशन िलया. इं पे टर

कबीर भले ही अपने चेहरे पर नही आने दे रहा था फर भी सब जानकारी सुन ने के िलए

वह बेताब हो चुका था और उसक उ सुकता भी सातवे आसमान पर प च चुक थी.

इं पे टर मंजीत संह जानकारी देने लगा –

“कुछ दन पहले मेरे पास एक केस आया था.....

... एक सुंदर शांत गाव... गाव मे हरी भरी घास और हारे भरे पेड चार तरफ फैले ए थे

और उस ह रयाली मे रात मे तारे जैसे आकाश मे समूह – समूह से चमकते है वैसे छोटे

छोटे समूह मे इधर उधर फैले ए थे. उसी ह रयाली मे गाँव के बीचो बीच एक पुरानी

कॉलेज क िब डंग थी.

कॉलेज के गिलयारे मे टूड स क भीड़ जमी ई थी. शायद ेक टाइम होगा. कुछ टूड स

समूह मे ग पे मार रहे थे तो कुछ इधर उधर घूम रहे थे. मिोहत लग भग बीस साल का, माट हडसम कॉलेज का टूडट और उसका दो त आ द य दोनो साथ साथ बाक टूड स

के भीड़ से रा ता िनकलते ए चल रहे थे.

“आ द य चलो ि पाठी सर के लास मे जाकर बैठते है... ब त दन ए है हमने उसका

लास अटड नही कया है...” मिोहत ने कहा.

“ कस के ...? ि पाठी सर के लास मे..? तु हारी तबीयत तो ठीक है ना...?” आ द य ने

आ य से पूछा.

“अरे नही... मतलब अब तक वह जमा आ है या छोड़ कर गया यह देख कर आते है...”

मिोहत ने कहा.

दोनो एक दूसरे को ताली देते ए, शायद पहले का कोई क सा याद कर ज़ोर से हंस ने

लगे.

चलते ए अचानक मिोहत ने आ द य को अपनी कोहनी मारते ए बगल से जा रहे एक

लड़के क तरफ उसका यान आक षत करने का यास कया. आ द य

थक मु ा मे

मिोहत क तरफ देखा.

मिोहत धीमे आवाज़ मे उसके कान के पास बड़बड़ाया, “यही वह लड़का... जो आज कल

अपने हिॉ टल मे चो रयाँ कर रहा है...”

तब तक वह लड़का उनको ॉस होकर आगे िनकल गया था. आ द य ने पीछे मुड़कर देखा.

हिॉ टल मे आ द य क भी कुछ चीज़े भी गायब हो चुक थी.

“तु हे कैसे पता...” आ द य ने पूछा.

“उसके तरफ देख तो ज़रा... कैसा कसे ए चोर क ख़ानदान से लगता है साला...”

मिोहत ने कहा.

“अरे िसफ़ लगने से या होगा... हमे कुछ सबूत भी तो चिाहए...” आ द य ने कहा.

“मुझे रोहन भी कह रहा था... देर रात तक वह भूत क तरह हिॉ टल मे िसफ़ घूमता

रहता है...”

“अ छा ऐसी बात है... तो फर चल... साले को सीधा करते है...”

“ऐसा सीधा करगे क साला ज़ंदगी भर याद रखेगा...”

“िसफ़ याद ही नही... साले को बबाद भी करगे...”

फर से दोनो ने कुछ फ़ैसला कए जैसे एक दूसरे क ज़ोर से ताली बजाई और फर से ज़ोर से हंस ने लगे.

रात को हॉ टल के गिलयारे मे घना अंधेरा था, गिलयारे के लाइ स या तो कसी ने चोरी कए ह गे या लड़को ने तोड़ दए ह गे. एक काला साया धीरे धीरे उस गिलयारे मे चल रहा था, और वहाँ से थोड़ी ही दूरी पर मोिहत, आ द य और उसके दो दो त रोहन और एक साथी एक खंबे के पीछे छुप कर बैठे थे. उ होने प ा फ़ैसला कया था क आज कसी भी हाल मे इस चोर को पकड़ कर हॉ टल क लगभग रोज होने वाली चो रयाँ रोकनी है. काफ़ समय से वे वहाँ िछप कर चोर क राह देख रहे थे. आिख़र वह साया उ हे दखते ही उनके चेहरे पर खुशी क लहर दौड़ गयी.

चलो इतने देर से के.... आिख़र मेहनत रंग लाई...

खुशी के मारे उनमे खुसुर फुसुर होने लगी.

"आए चुप रहो... यही अ छा मौका है... साले को रंगे हाथ पकड़ने का" मोिहत ने सबको चुप रहने क िहदायत दी.

वे वहाँ से िछपते ए सामने जाकर एक दूसरे खंबे के पीछे छुप गये.

उ होने चोर को पकड़ ने क पूरी लॅ नंग और तै या र कर रखी थी. चार ने आपस मे काम बाँट िलया था. उन चार मे एक लड़का अपने कंधे पर एक काला लंकेट संभाल रहा था.

"देखो.... वह क गया.... साले क रपट ही करगे..."मोिहत धीरे से बोला.

वह साया गिलयारे मे चलते ए एक म के सामने क गया.

"अरे ये कस क म है वह...?" रोहन ने पूछा.

"सायली क ...." आ द य ने धीमे वर मे जवाब दया.

वह काला साया सायली के दरवाजे के सामने का और सायली के दरवाजे के क होल मे

अपने पास क चाबी डालकर घूमने लगा.

"देखो उसके पास चाबी भी है..." मिोहत फुसफुसाया.

"मा टर के होगी..." आ द य ने कहा.

"या

ि लकेट बनाकर ली होगी साले ने..." रोहन ने कहा.

"अब तो वह ि ब कुल मुकर नही पाएगा... हम उसे अब रंगे हाथ पकड़ सकते है..." मिोहत ने कहा.

मिोहत और आ द य ने पीछे मुड़कर उनके दो सिाथय को इशारा कया.

"चलो... यह एकदम सही व है..." आ द य ने कहा.

वह साया अब ताला खोलने क किोशश करने लगा.

सब लोग ने एकदम उस काले साए पर ह ला बोल दया. आ द य ने उस साए के शरीर पर उसके दो त के कंधे पर जो था वह लंकेट लपेट दया और मिोहत ने उस साए को लंकेट के साथ कस कर पकड़ ि लया.

"पहले साले को मारो..." रोहन ि च लाया.

सब लोग ि मल कर अब उस चोर क धुलाई करने लगे.

"कैसा हाथ आया रे साले..." आ द य ने कहा.

"आए साले... दखा अब कहाँ छुपा कर रखा है तूने हॉ टल का सारा चोरी कया आ माल..." रोहन ने कहा.

लंकेट के अंदर से 'आह उउउः' ऐसा दबा आ वर आने लगा.

अचानक सामने का दरवाजा खुला और सायली गड़बड़ाई ई दरवाजे से बाहर आगिय.

शायद उसे उसके म के सामने चल रहे धाँधली क आहट ई होगी. कमरे मे जल रही लाइट क रोशनी अब उस लंकेट मे ि लपटे चोर के शरीर पर पड़ गयी.

" या चल रहा है यहाँ..." सायली घबराए ए हाल मे ि ह मत बटोरती ई बोली.

"हमने चोर को पकड़ा है..." आ द य ने कहा.

"ये तु हारा कमरा

ि लकेट चाबी से खोल रहा था..." मिोहत ने कहा.

उस चोर को लंकेट के साथ पकड़े ए हाल मे मिोहत को उस चोर के शरीर पर कुछ अजीब सा लगा. धाँधली मे उसने या है यह टटोलने के िलए लंकेट के अंदर से अपने हाथ डाले. मिोहत ने हाथ अंदर डालने से उसक उस साए पर क पकड़ ढीली हो गयी और वह साया लंकेट से बाहर आगेया.

"ओह माइ गॉड पायल!" सायली िच लाई...

पायल उनके ही लास क एक सुंदर टूडट थी. हॉ टेल क पास हं पायल का घर थां.

पायल लंकेट से बाहर आई और अभी भी असमंजस के ि थित मे मिोहत उसके दोनो तन अपने हाथ मे कस कर पकड़ा आ था. उसने खुद को छुड़ा िलया और एक ज़ोर का तमाचा मिोहत के कान के नीचे जड़ दया.

मिोहत को या बोले कुछ समझ मे नही रहा था वह बोला, "आइ आम सौरी... आइ आम रयली सौरी..."

"वी आर सौरी..." आ द य ने भी कहा.

"ले कन इतने रात गये तुम यहाँ या कर रही हो...?" सायली पायल के पास जाते ए बोली.

"ईिडयट... आइ वाज़ कोिशश यंग टू स ाइज़ यू... तु हे ज म दन क शु कामनाए देने आई थी म.." पायल उसपर िचढ़ते ए बोली.

"ओ

ह.... थक यू... आइ मीन सौररी.... आइ मीन आर यू ओके...?" सायली को या बोले कुछ समझ नही आ रहा था.

सायली पायल को म मे ले गयी और मिोहत फर से माफ माँगने के िलए म मे जाने लगा तो दरवाजा उसके मुँह पर धडाम से बंद हो गया.

लास चल रहा था. लास मे मिोहत और आ द य पास-पास बैठे थे. मिोहत का ख़याल

िब कुल लास मे नही था. वह बैचेन लग रहा था और अ व थता से लास ख़ म होने क
राह देख रहा था उसने एकबार पूरे लास पर अपनी नज़र घुमाई, ख़ासकर पायल क
तरफ देखा. ले कन उसका कहाँ उसक तरफ यान था? वह तो अपनी नो स लेने मे
त
थी. कल रात का वाक़या याद कर मिोहत को फर से अपराधी जैसा लगने लगा.
उस बेचारी को या लगा होगा....?
इतने सारे लोग के सामने और सायली के सामने मैने...
नही मेने ऐसा नही करना चिाहए था....
ले कन जो भी आ वह ग़लती से आ....
मुझे या मालूम था क वह चोर ना होकर पायल थी...
नही मुझे उसक माफ माँगनी चिाहए....
ले कन कल तो मेने उसक माफ माँगने का यास कया था....
तो उसने धडाम से गु से से दरवाज़ा बंद कया था....
नही मुझे वह जब तक माफ़ नही करती तब तक माफ माँगते ही रहना चिाहए...
उसके दमाग़ मे िवचार का तूफान उमड़ पड़ा था. इतने मे पी रयड बेल बजी. शायद ेक
हो गया था.
चलो यह अ छा मौका है...
उससे माफ माँगने का....
वह उठकर उसके पास जाने ही वाला था इतने मे वह लड़ कय क भीड़ मे कह गुम हो
गयी थी.
ेक क वजह से कॉलेज के गिलयारे मे टूड स क भीड़ जमा हो गयी थी. छोटे छोटे समूह
बनाकर ग पे मारते ए टूड स सब तरफ फैल गये थे, और उस भीड़ से रा ता िनकालते
ए मिोहत और आ द य उस भीड़ मे पायल को ढूँढ रहे थे.
कहाँ गयी...?

अभी तो लड़ कय क भीड़ मे लास से बाहर जाते ए दखी थी..

वे दोनो इधर उधर देखते ए उसे ढूँढ ने क किोशश करने लगे. आख़र एक जगह कोने मे

उ हे अपने दो त के साथ बाते करती ई पायल दख गयी.

"चलो मेरे साथ..." मोहत ने अपने दो तो से कहा.

"हम कस िलए... हम यह कते है... तुम ही जाओ..." आ द य ने कहा.

"अबे... साथ तो चलो..." मोहत उनको लगभग पकड़कर पायल के पास ले गया.

जब मोहत और आ द य उसके पास गये तब उसका ख़याल इन लोग क तरफ नही था.

वह अपनी ग पे मारने मे मशगूल थी. पायल ने ग पे मारते ए एक नज़र उनपर डाली

और उनक तरफ यान ना देते ए अपनी बात मे ही

त रही. मोहत ने उसके और

पास जाकर उसका यान अपनी तरफ आक षत करने का यास कया. ले कन बार बार

वह उनक तरफ यान ना देते ए उ हे टालने का यास कर रही थी. उधर उनसे काफ़

दूर रोहन गिलयारे से जा रहा था वह मोहत क तरफ देख कर मु कुराया और उसने

अपना अंगूठा दखा कर उसे बे ट ऑफ लक िवश कया.

"पायल.... आइ म सौरी..." मोहत को इतने लड़को लड़ कय क भीड़ मे शम भी आ रही

थी. फर भी धाँढस बाँधते ए उसने कहा.

पायल ने एक कॅषुयल नज़र उसपर डाली.

मोहत क गड़बड़ी ई दशा देख कर उसके दो त ने अब िसचुयेशन अपने हाथ मे ली.

"आ

युयली हम एक चोर को पकड़ ने क किोशश कर रहे थे..." आ द य ने कहा.

"हाँ ना... वह रोज हॉ टल मे चोरी कर रहा था..." रोहन उनके करीब आता आ बोला.

मोहत अब अपनी गड़बड़ी भरी दशा से काफ़ उभर गया था. उसने फर से िह मत कर

अपनी बात जारी रखी, "पायल... आइ एम सौरी... आइ रयली िड न'ट मीन इट... म तो

उस चोर को पकड़ने क ..."

मिोहत हाथ के अलग अलग इशार से अपने भाव

करने क किोशश कर रहा था.

वह या बोल रहा था और या इशारे कर रहा था उसका उसको ही समझ नही आ रहा था. आिख़र वह एक हाव-भाव के ि थती मे का. जब वह का तब उसके ख़याल मे आया क, भले ही पश ना कर रहे हो, ले कन उसके दोनो हाथ फर से पायल के तन के आसपास थे. वह पायल के भी ख़याल मे आया. उसने झट से अपने हाथ पीछे ख च िलए. उसने गु से से भरा एक कटा उसके उपर डाला और फर से एक ज़ोर का थ पड़ उसके गालपर जड़ कर िचढ़कर बोली, "बदतमीज़...."

इसके पहले क मिोहत फर से संभाल कर कुछ बोले वह गु से से पैर पटकती ई वहाँ से चली गयी थी. जब वह होश मे आया वह दूर जा चुक थी और मिोहत अपना गाल सहलाते ए वहाँ खड़ा था.

शाम का समय था. अपनी शॉ पंग से लदी ई बॅग संभालती ई पायल फुटपाथ से जा रही थी. वैसे अब खरीदने को कुछ ख़ास नही ब ा था. िसफ़ एक-दो चीज़े खरीदने क बची थी. वह चीज़े खरीद ली के फर घर ही वापस जाना है...

वह बची ई एक-दो चीज़े लेकर जब वापस जाने के िलए िनकली तब लगभग अंधेरा होने को आया था और रा ते पर भी ब त कम लोग बचे थे. चलते चलते पायल के अचानक ख़याल मे आया क ब त देर से कोई उसका पीछा कर रहा है. उसक पीछे मुड़कर देखने क िह मत नही बन रही थी. वह वैसे ही चलती रही फर भी उसका पीछा जारी है इसका उसे एहसास आ. अब वह घबरा गयी. पीछे मुड़कर ना देखते ए वह वैसे ही ज़ोर से आगे चलने लगी.

इतने मे उसे पीछे से आवाज़ आई, "पायल..."

वह एक पल क और फर चलने लगी.

पीछे से फर से आवाज़ आया, "पायल..."

आवाज़ के लहजेसे नही लग रहा था क पीछा करने वाले का कोई ग़लत इरादा हो. पायल

ने चलते चलते ही पीछे मुड़कर देखा. पीछे मोहित को देखते ही वह क गयी. उसके चेहरे पर परेशानी के भाव दखने लगे.

यह इधर भी....

अब तो सर पटकने क नौबत आई है...

वह एक बड़ा फूल का गुलद ता लेकर उसके पास आ रहा था. वह देख कर तो उसे एक ण लगा भी क सचमुच अपना सर पटक ले. वह मोहित उसके नज़दीक आने तक क गयी.

" य तुम मेरा लगातार पीछा कर रहे हो...?" पायल नाकबीग़ी जताते ए गु से से बोली.

"मुझ पर एक एहसान कर दो और भगवान के िलए मेरा पीछा करना छोड़ दो..." वह गु से से हाथ जोड़ते ए, उसका पीछा छुड़ा लेने के अिवभाव मे बोली.

गु से से वह पलट गयी और फर से आगे पैर पटकती ई चलने लगी. मोहित भी बीच मे थोड़ा फासला रखते ए उसके पीछे पीछे चलने लगा.

मोहित फर से पीछा कर रहा है यह पता चलते ही वह गु से से क गयी.

मोहित ने अपनी िह मत बटोर कर वह फूल का गुलद ता उसके सामने पकड़ा और कहा, "आइ एम सौरी...."

पायल गु से से ितलिमलाई. उसे या बोले कुछ सूझ नही रहा था. मोहित को भी आगे या बोले कुछ समझ नही आ रहा था.

"आइ वेर, आइ मीन इट.." वह अपने गलेको हाथ लगाकर बोला.

पायल गु से मे तो थी ही, उसने झट से अपने चेहरे पर आ रही बाल क लत एक तरफ हटाई. मोहित को लगा क वह फर से जोरदार तम ा अपने गालपर जड़ने वाली है. डर के मारे अपनी आँख बंद कर उसने झट से अपना चेहरा पीछे हटाया.

उसके भी यह ख़याल मे आया और वह अपनी हँसी रोक नही सक . उसका वह डरा आ सहमा आ ब

के जैसा मासूम चेहरा देख कर वह िखल िखलाकर हंस पड़ी. उसका गु सा
कब का र फु च र हो गया था. मिोहत ने आँख खोल कर देखा. तब तक वह फर से रा ते
पर आगे चल पड़ी थी. थोड़ी देर चलने के बाद एक मोड़ पर मुड़ने से पहले पायल क
गयी, उसने पीछे मुड़कर मिोहत क तरफ देखा. एक नटखट मु कुराहट से उसका चेहरा
िखल गया था.
घबराये ए हाल मे, स
मे खड़ा मिोहत भी उसक तरफ देख कर मंद मंद मु कुराया.
वह फर से आगे चलते ए उस मोड़ पर मुड़कर उसके नज़र से ओझल हो गयी. भले ही
वह उसके नज़र से ओझल ई थी, फर भी मिोहत खड़ा होकर उधर म
मु ध होकर देख
रहा था. उसे रह रहकर उसक वह नटखट मु कुराहट याद आ रही थी.
वह सचमुच मु कुरई थी या मुझे वैसा आभास आ...
नही नही आभास कैसे होगा....
यह सच है क वह मु कुराइ थी...
वह मु कुराइ इसका मतलब उसने मुझे माफ़ कया ऐसा समझना चिाहए या..?
हाँ वैसा समझ ने मे कोई द त नही...
ले कन उसका वह मु कुराना कोई मामूली मु कुराना नही था....
उसके उस मु कुराहट मे और भी कुछ ग़ूढ अथ िछपा आ था...
या था वह अथ...?
मिोहत वह अथ समझ ने क किोशश करने लगा और जैसे जैसे वह अथ उसके समझ मे आ
रहा था उसके भी चेहरे पर वही, वैसी ही मु कुराहट फैलने लगी.
धीरे धीरे मिोहत और पायल एक दूसरे के नज़दीक ख चते चले गये. उनके दल मे कब ेम
का बीज पनपना शु हो गया उ हे पता ही नही चला. झगड़े से भी ेम क भावना पनप
सकती है यह वे खुद अनुभव कर रहे थे. कॉलेज मे कोई पी रयड खाली होने पर वे िमलते.

कॉलेज ख़ म होनेपर िमलते. लाइ री मे पढ़ाई के बहाने से िमलते थे. िमलने का एक भी मौका वे छोड़ना नही चाहते थे. ले कन सब िछप िछपकर चल रहा था. उ होने उनका ेम अभी तक कसी के ख़याल मे आने नही दया था. ले कन जो कसी के ख़याल मे नही आए उसे ेम कैसे कहे...? या फर एक व ऐसा आता है क ेमी इतने बंदास हो जाते है क उनका ेम कसी के ख़याल मे आएगा या कसी को पता चलेगा इस बात क फ करना वे छोड़ देते है. लोग को अपना ेम पता चले ऐसी भावना भी शायद उनके मन मे आती हो.

काफ़ रात हो चुक थी. अपनी बेटी अभी तक कैसे घर वापस नही आई यह चंता पायल के िपता को खाए जा रही थी. वे बैचेन होकर हॉल मे चहल कदमी कर रहे थे. वैसे उ होने पायल को पूरी छूट दे रखी थी. ले कन ऐसी गैर िज़ मेदाराना वह कभी नही लगी थी. कभी देर होती तो वह घर फोन कर बताती थी. ले कन आज उसने फोन करने क भी जहमत नही उठाई थी. इतने साल का उसके िपता का अनुभव कह रहा था क मामला कुछ गंभीर है...

पायल कसी ग़लत संगत मे तो नही फँस गयी...?

या फर स वैगेरह क लत तो नही लगी उसे...?

अलग अलग कार के अलग अलग िवचार उनके दमाग़ मे घूम रहे थे. इतने मे उ हे बाहर कोई आहट ई.

एक बाइक आकर घर के क पाउंड के गेट के सामने क . बाइक के पीछे क सीट से पायल उतर गयी. उसने सामने बैठे मोिहत के गाल का चुंबन िलया और वह गेट क तरफ िनकल दी.

घर के अंदरसे, िखड़क से पायल के िपता वह सब नज़ारा देख रहे थे. उनके चेहरे से ऐसा लग रहा था क वे गु से से आगबबूला हो रहे थे. अपनी बेटी का कोई बॉय दो त है यह उनको गु सा आने का कारण नही था. कारण कुछ अलग ही था.

हॉल मे सोफे पर पायल के िपता बैठे ए थे और उनके सामने गदन झुका कर पायल खड़ी

थी.

"इस लड़क के अलावा तु हे दूसरा कोई नही िमला या...?" उनका गु से से भरा गंभीर वर गूंजा.

पायल के मुँह से श द नही िनकल पा रहा था. वह अपने िपता से बात करने के िलए िह मत जुटाने का यास कर रही थी. उतने मे पायल का भाई अमोल, उ लगभग तीस के आस पास, गंभीर ि , हमेशा कसी सोच मे खोया आ, ढीला ढालसा रहन सहन, घर मे से वहाँ आ गया. वह पायल के बगल मे जाकर खड़ा हो गया. पायल के गदन अभी भी झुक ई थी. उसका भाई बगल मे आकर खड़ा होने से उसमे थोड़ा धाँढस बँध गया. वह गदन नीचे ही रख कर अपनी िह मत जुटाकर एक एक श द तोलमोल कर बोली, "वह एक अ छा लड़का है... आप उसे एक बार िमल तो लो..."

"चुप बैठो... मूख... मुझे उससे िमलने क िब कुल इ छा नही... अगर तु हे इस घर मे रहना है तो तुम मुझे दुबारा उसके साथ दखनी नही चािहए... समझी..." उसके िपता ने अपना अंितम फ़ैसला सुना दया.

पायल के आँख मे आँसू आगये और वहाँ से अपने िछपते ए वह घर के अंदर दौड़ पड़ी.

अमोल सहानुभूित से उसे अंदर जाते ए देखता रहा.

घर मे कसी क भी िपताजी से बहस करने क िह मत नही थी.

अमोल िह मत जुटाकर उसके िपताजी से बोला, "पॅपा.... आपको ऐसा नही लगता क आप थोड़े यादा ही कठोर हो रहे हो... आपने कम से कम पायल या बोलना चाहती है यह सुनना चािहए... और एक बार व िनकाल कर उस लड़के से िमलने मे या हज़ है..?"

"म उसका बाप ँ... उसका भला बुरा मेरे िसवा और कौन जान सकता है...? और तु हारी नसीहत तु हारे पास ही रखो... मुझे उसके तु हारे जैसे ए हाल देखने क िब कुल इ छा नही है... तुमने भी एक दूसरी जाती वाली लड़क से शादी क थी.. आिख़र या आ...? तु हारी सब ॉपट हड़प कर उसने तु हे भगवान भरोसे छोड़ दया..." उसके िपताजी तेज़ी से कदम बढ़ाते ए गु से से कमरे से बाहर जाने लगे.

"पॅपा आदमी का वाभाव आदमी-आदमी मे फ़क लाता है... ना क उसका रंग, या उसक जाती..." अमोल उसके िपताजी को बाहर जाते ए उनक पीठ क तरफ देख कर बोला.

उसके िपताजी जाते जाते अचानक दरवाजे मे क गये और उधर ही मुँह रखते ए कठोर लहजे मे बोले, "और तु हे उसक पैरवी करने क िब कुल ज़ रत नही... और ना ही उसे सपोट करने क ..."

अमोल कुछ बोले इसके पहले ही उसके िपताजी वहाँ से जा चुके थे.

इधर पायल के घर के बाहर अंधेरे मे िखड़क के पास िछप कर एक काला साया अंदर चल रहा यह सारा नज़ारा देख और सुन रहा था.

लास मे एक लेडी टीचर पढ़ा रही थी. लास मे कॉलेज के छा यान देकर उ हे सुन रहे थे. उ ही छा मे मोिहत और पायल बैठे ए थे.

"सो द मौरल ऑफ द टौरी ईज़... कुछ भी फ़ैसला ना लेते ए िबचमे ही लटकने से अ छा है कुछ तो एक फ़ैसला लेना..." टीचर ने अबतक पढ़ाए पाठ का िन कष सं ेप मे बताया.

पायल ने छुप कर एक कटा मोिहत क तरफ डाला. दोनो क आँख िमल गयी. दोनो भी एक दूसरे क तरफ देख मु कुराए. पायल ने एक नोटबुक का प ा मोिहत को दखाया. उस नोटबुक के प े पर बड़े अ र मे िलखा था 'लाइ री'. मोिहत ने हाँ मे अपना सर िहलाया.

उतने मे पी रयड बेल बजी. पहले टीचर और बाद मे छा धीरे धीरे लास से बाहर जाने लगे.

मोिहत हमेशा क तरह जब लाइ री मे गया तब ेक टाइम होने से वहाँ कोई भी छा नही थे. उसने पायल को ढूँढने के िलए इधर उधर नज़र दौड़ाई. पायल एक कोने मे बैठकर कताब पढ़ रही थी. या कम से कम वैसा दखावा करने क चे ा कर रही थी. पायल ने आहट होतेही कताब से सर उपर उठाकर उधर देखा.

दोनो क नज़रे िमलते ही वह वहाँ से उठ कर कताब के रॅक के पीछे जाने लगी. मोिहत भी उसके पीछे पीछे जाने लगा. एक दूसरे से कुछ भी ना बोलते ए या कुछ भी इशारा ना करते ए सबकुछ हो रहा था. उनका यह शायद रोज का दन म होगा. पायल कुछ ना

बोलते ए भले ही रॅक के पीछे जा रही थी ले कन उसके दमाग़ मे िवचार का तूफान

उमड़ पड़ा था.

जो भी हो आज कुछ तो आखरी फ़ैसला लेना ही है...

ऐसे कतने दन तक ना इधर ना उधर इस हाल मे रहगे...

टीचर ने जो पढ़ाए पाठ का सं ेप मे िन कष बताया था... वही सही था...

हमे कुछ तो ठोस िनणय लेना ही होगा...

आर या पार....

बस अब ब त हो गया...

उसके पीछे पीछे मोहत रॅक के पीछे कुछ ना बोलते ए जा रहा था. ले कन उसके दमाग़

मे भी िवचार का सैलाब उमड़ पड़ा था.

हमेशा पायल पी रयड होने के बाद लाइ री मे िमलने के िलए इशारा करती थी...

ले कन आज उसने पी रयड शु थी तब ही इशारा कया...

उसके घर मे कुछ अघ टत तो नही घटा...

उसके चेहरे से वह कसी दुिवधामे लग रही थी...

अपने घर के दबाव मे आकर वह मुझे छोड़ तो नही देगी...

अलग अलग कार के िवचार उसके दमाग़ मे घूम रहे थे.

रॅक के पीछे कोने मे कसी के नज़र मे नही आए ऐसी जगह पर पायल प ँच गयी और पीछे

से दीवार को अपना एक पैर लगा कर वह मोहत क राह देखने लगी.

मोहत उसके पास जाकर प ँचा और उसके चेहरे के भाव पढ़ने क कोशश करते ए

उसके सामने खड़ा हो गया.

“तो फर तय आ... आज रात 11 बजे तै यार रहो...” पायल ने कहा.

चलो मतलब अब भी पायल अपने घर के लोग के दबाव मे नही आई थी.

मोहत को सुकून सा महसूस आ.

ले कन उसने सुझाया आ यह दूसरा रा ता कहाँ तक सही है...?

यह एकदम चरम भूमका तो नही हो रही है...?

“पायल तु हे नही लगता क हम ज़रा ज दी ही कर रहे है.. हम कुछ दन कगे... और देखते है कुछ बदलता है या...” मोहत ने कहा.

“मोहत चीज़े अपने आप नही बदलती... हमे उ हे बदलना पड़ता है...” पायल ने दृढ़ता से कहा.

उनक ब त देर तक चचा चलती रही. मोहत को अभी भी उसक भूमका सही नही लग रही थी. ले कन एक तरह से उसका सही भी था. कभी कभी ताबड़तोड़ िनणय लेना ही अ छा होता है.. मोहत सोच रहा था.

ले कन इस फ़ैसले के िलए म अब भी पूरी तरह से तै यार नही ँ...

मुझे मेरे घर के लोग के बारे मे भी सोचना चाहए...

ले कन नही हम कतने दन तक इस तरह बीच मे लटके रहगे...

हमे कुछ तो ठोस कदम उठाना ज़ री है...

मोहत अपना एक फ़ैसले पर प चकर दृढ़ता से उसपर कायम रहने का यास कर रहा था.

उधर रॅक के पीछे उन दोनो क चचा चल रही थी और इधर दो रॅक छोड़ कर एक साया उन दोनो क सब बात सुन रह था.

मोहत के दमाग़ मे िवचार क कशमश चल रही थी. अब वह जो फ़ैसला लेनेवाला था उसक वजह से होनेवाले सब प रणाम के बारे मे वह सोच रहा था. पायल के साथ लाइ री मे कए चचा से दो-तीन बाते एकदम सॉफ हो गयी थी -

एक तो पायल भले ही उपर से ना लगे ले कन अंदर से वह ब त गंभीर और ज़बान क प है....

वह कसी भी हाल मे मुझे नही छोड़ेगी....

या फर वैसा सोचेगी भी नही....

ले कन अब उसे अपने आपका ही भरोसा नही लग रहा था...

म भी उसक तरह अंदर से गंभीर और प ा ँ या...?

बुरे व मे मेरा उसके ित ेम वैसा ही कायम रहेगा या...?

या बुरे व मे वह बदल सकता है...?

वह अब खुद को ही आजमा रहा था. व ही वैसा आया था क उसे खुद का ही िव ास नही लग रहा था.

परंतु नही...

मुझे ऐसा ढीला ढाला रहकर नही चलेगा...

मुझे भी कुछ ठोस फ़ैसला लेना होगा...

और एक बार िनणय िलया तो फर बाद मे उसके कुछ भी प रणाम हो, मुझे उसपर कायम रहना होगा...

मोहत ने आख़र मन ही मन एक ठोस फ़ैसला िलया...

अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर वह उसे िजसक ज़ रत पड़ेगी वह सारी चीज़ अपने बॅग मे भरने लगा...

सब कुछ ठीक तो होगा ना...?

मुझे मेरे घरवाल को सब बताना चाहए या...?

सोचते सोचते उसने अपनी सारी चीज़ बॅग मे भर दी...

कपड़े वगैरे बदल कर उसने कुछ बचा नही इसक तस ली क . आख़री बची ई एक चीज़ डालकर उसने बॅग क चैन लगाई. चैन का एक बस िह फ ऐसा आवाज़ आ. उसने वह बॅग उठाकर सामने टेबल पर रख दया और टेबल के सामने रखे कुरसीपर थोड़ा सुसताने के िलए बैठ गया. वह एक-दो पल ही बैठा होगा क इतने मे उसका मोबाइल हाय ेट हो गया. उसने जेब से मोबाइल िनकाल कर उसका िडस ले देख. िडस ले पर उसे 'पायल' ऐसे िडिजटल श द दखाई दए. वह तुरंत कुस से उठ खड़ा आ. मोबाइल बंद कया, बॅग उठाई और िधरेसे कमरे से बाहर िनकल गया.

इधर उधर देखते ए सावधानी से मोहत मु य दरवाजे से बाहर आ गया और उसने दरवाजा बाहर से ख चकर बंद कर िलया. फर जॉ गंग कए जैसे वह कंधे पर बॅग लेकर

क पाउंड के गेट के पास गया. बाहर रा ते पर उसे एक टॅ सी क ई दखाई दी.

क पाउंड के गेट से बाहर िनकल कर उसने गेट भी ख चकर बंद कर िलया. टॅ सी के पास प ँचते ही उसे टॅ सी मे िपछली सीट पर बैठकर उसक राह देख रही पायल दखाई दी. दोनो क नज़रे िमली. दोनो एक दूसरे क तरफ देख कर मु कुराए. झट से जाकर वह बॅग के साथ पायल के बगल मे टॅ सी मे घुस गया. टॅ सी के दरवाजे क यादा आवाज़ ना हो इसका ख़याल रखते ए उसने सावधानी से दरवाजा धीरे से ख च िलया. दोनो एक दूसरे क बाह मे घुस गये. उनके चेहरे पर एक िवजय हा य फैल गया था.

अब उनक टॅ सी घर से ब त दूर तेज़ी दौड़ रही थी. वे दोनो तेज़ी से दौड़ती टॅ सी के िखड़क से आ रहे तेज हवा के झ के का आनंद ले रहे थे. ले कन उ हे या पता था क एक काला साया पीछे एक दूसरी टॅ सी मे बैठकर उनका पीछा कर रहा था...

... इं पे टर मंजीत संह हक़ क़त बयान करते ए क गया. इं पे टर कबीर ने वह य का यह जान ने के िलए उसके तरफ देखा. इं पे टर मंजीत संह ने सामने रखा लास उठा कर पानी का एक घूँट िलया. तब तक ऑफ स बॉय चाइ पानी लाया था. इं पे टर मंजीत संह ने वह उसके सामने बैठे इं पे टर कबीर और उसके साथ आए पाठक को परोसने के िलए ऑफ स बॉय को इशारा कया.

ऑफ स बॉय चाइ पानी लेकर आने से मंजीत संह जो हक़ क़त बता रहा था उसमे वधान पड़ गया. कबीर को और उसके साथी पाठक को आगे क कहानी सुन ने क बड़ी उ सुकता हो रही थी. सब लोग का चाइ पानी होने के बाद इं पे टर मंजीत संह फर से आगे क कहानी बता ने लगा....

भाग - 4

मोिहत क और पायल क टॅ सी रेलवे टेशन पर प ँच गयी. दोनो टॅ सी से उतर गये. टॅ सी वाले का कराया चुका कर वे अपना सामान लेकर टकेट क िखड़क के पास चले गये. कहाँ जाना है यह उ होने अब तक तय नही कया था. बस यहाँ से िनकल जाना है इतना ही उ होने तय कया था. एक ेन लॅटफाम पर खड़ी ही थी. मोिहत ने ज दी से

उसी ेन का टकेट िनकाला.

लॅटफाम पर वे अपना टकेट लेकर अपना रेलवे िड बा ढूँढने लगे. िड बा ढूँढने के िलए उ हे यादा मश त नही करनी पड़ी. मु य दरवाजे से उनका िड बा नज़दीक ही था. ेन िनकल ने का समय हो गया था इसिलए वे तुरंत ड बे मे चढ़ गये. िड बे मे चढ़ने के बाद उ होने अपनी सी स ढूँढ ली. अपने सीट के पास आपना सारा सामान रख दया. उतने मे गाड़ी िहलने लगी. गाड़ी िनकलने का व हो चुका था. जैसे ही गाड़ी िनकलने लगी वैसे पायल मिोहत को लेकर िड बे के दरवाजे के पास गयी. उसे वहाँ से जाने से पहले अपने शहर को एक बार जी भर के देख लेना था...

ेन मे पायल और मिोहत एक दम पास पास बैठे थे. उ हे दोनो को एक दूसरे का सहारा चिाहए था. आिख़र उ होने जो फ़ैसला कया था उसके बाद उ हे बस एक दूसरे का ही तो सहारा था. अपने घर से सारे र ते, सारे बंधन तोड़कर वे ब त दूर जा रहे थे. पायल ने आपना सर मिोहत के कंधे पर रख दया.

" फर.... अब कैसा लग रहा है..." मिोहत ने माहौल थोड़ा ह का करने के उ े य से पूछा.

" ेट..." पायल भी झूठ मूठ हंसते ए बोली.

मिोहत समझ सकता था क भले ही वह उपर से दखा रही हो ले कन घर छोड़ने का दुख उसको होना लाजमी था. उसे साहारा देने के उ े य से उसने उसे कस कर पकड़ िलया...

"तु हे कुछ याद आ रहा है...?" मिोहत ने उसे और भी कस कर पकड़ते ए पूछा.

पायल ने

थक मु ा मे उसक तरफ देखा.

"नही मतलब कोई घटना कोई संग... जब मैने तु हे ऐसे ही कस कर पकड़ा था.."

"म कैसे भूल सकती ँ उस घटना को..."पायल उसने जब लंकेट से लपेट कर उसे कस कर पकड़ा था वह संग याद कर बोली.

"और तुम भी..."पायल उसके गाल पर हाथ मलते ए उसे मारे ए थ पड़ क याद देते ए बोली.

दोनो िखलिखला कर हंस पड़े.

जब दोनो का हँसना थम गया पायल इतराते ए उसे बोली, "आइ लव यू..."

"आइ लव यू टू..." उसने उसे और नज़दीक ख चते ए कहा.

दोनो भी कस कर एक दूसरे के आ लंगन मे बँध हो गये.

पायल ने ेन क िखड़क से झाँक कर देखा. बाहर सब अंधेरा छाया आ था. मोिहत ने पायल क तरफ देखा.

"तु हे पता है... तु हे माफ माँगते व वह फूल का गुलद ता म य लाया था...?"

मोिहत फर से उसे वह माफ माँग ने का संग याद दलाते ए बोला. वह संग वह कैसे भूल सकता था...? उसी पल मे तो ेम के बीज बोए गये थे.

"जािहर है माफ यादा एफि टव होना चािहए इसिलए..." पायल ने कहा...

"नही... अगर म सच क ँ तो तु हे िव ास नही होगा..." मोिहत ने कहा.

" फर ... य लाया था...?"

"मेरे हाथ फर से कोई अजीब इशारे कर गड़बड़ ना कर दे इसिलए... नही तो फर से शायद और एक थ पड़ िमला होता..." मोिहत ने कहा.

पायल और मोिहत फर से िखल िखलाकर हंस पड़े.

धीरे धीरे उनक हँसी थम गयी. फर थोड़ी देर सब स ाटा छाया रहा. िसफ़ रेलवे का आवाज़ आता रहा. उस स ाटे मे ना जाने यूँ पायल को लगा क कोई इस ेन मे बैठकर अपना पीछा तो नही कर रहा है...

नही...कैसे मुम कन है...

हम भाग जानेवाले है यह िसफ़ मोिहत और उसके िसवा और कसी को भी तो पता नही था...

रेलवे लॅटफाम पर जैसे लोग का सैलाब उमड़ पड़ा था. भीड़ मे लोग अपना अपना सामान लेकर बड़ी मु कल से रा ता िनकालते ए वहाँ से जा रहे थे. शायद अभी अभी कोई ेन आई हो. वही लॅटफाम पर एक कोने मे महेश, राकेश, िनतीन और सुलेमान प े

खेल रहे थे. उन चार मे सुलेमान, उसके हावभाव से और उसका जो तीनो पर एक भाव दख रहा था उससे, उनका लीडर लग रहा था. सुलेमान लगभग पचीस के आस पास, कसे ए और मजबूत शरीर का मिालक, एक लंबा चौड़ा युवक था.

"देखो अपनी गाड़ी आने मे अभी ब त व है.. कम से कम और तीन गेम हो सकते है..."

सुलेमान ने प े बाँट ते ए कहा.

"राकेश तुम इस काग़ज़ पर पायं स िलखो..." िनतीन ने एक हाथ से प े पकड़ते ए और दूसरे हाथ से जेब से एक काग़ज़ का टुकड़ा िनकाल कर राकेश के हाथ मे देते ए कहा.

"और, लालटेन यादा िशयारी नही चलेगी' राकेश ने महेश को ताक द दी. वे महेश को उसके च मे क वजह से लालटेन ही कहते थे. सुलेमान का यान प े खेलते व यूँ ही लॅटफाम पर उमड़ पड़ी भीड़ क तरफ गया.

भीड़ मे पायल और मोिहत एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कसी परदेसी अजनबी क तरह चल रहे थे.

उसने पायल क तरफ िसफ़ देखा और खुले मुँह देखता ही रह गया.

"बाप, या माल है..." उसके खुले मुँह से अनायास ही िनकल गया. राकेश, महेश और िनतीन भी अपना गेम छोड़ कर उधर देखने लगे. उनका भी देखते ए खुला मुँह बंद होने को तै यार नही था.

"सफेद कबूतरी कबूतर के साथ भाग आई है शायद..." सुलेमान के अनुभवी नज़र ने भाँप िलया.

'उस कबूतर के बजाय मुझे उसके साथ रहना चाहए था..." राकेश ने कहा.

"बकवास बंद कर , उसको देख एक बार. कतनी सुंदर हे साली ! मानो जैसे ज त से र नीचे उतरी हो.उसक चमडी देखी हे, दूध से यादा सफेद हे.तू उसको छू भ लेगा तो मैली हो जाएगी वो ." सुलेमान ने राकेश का मजाक उडाते ये कहा

"साला ऐसा गो त चखने को िमल जाए तो तो पूरे जनम क भूख िमट जाए" िनतन ने उनक बात म सुर िमलाया

" अब तो कोिशश करनी ही पड़ेगी या पता जीते जी ज त नसीब हो जाए."सुलेमान ने सबके पास से प े छीन कर लेते ए कहा, 'देखो, अब यह गेम बंद कर दो... हम अब एक दूसरा ही गेम खेलते है..."

सबके चेहरे खुशी से दमक ने लगे. वे सुलेमान के बोलने का िछपा अथ जानते थे. वैसे वे वह गेम कोई पहली बार नही खेल रहे थे. सब उ साह से भरे एक दम उठकर खड़े हो गये...

"अरे, देखो ज़रा ख़याल रहे.... साले कह घुस जाएँगे तो बाद मे िमलगे नही..." िनतीन ने उठते ए कहा.

फर वे उनके ख़याल मे ना आए इतना फासला रखते ए उनके पीछे पीछे जाने लगे.

"आए...लालटेन तुम ज़रा आगे जाओ... साले पहले ही तुझे च मे से ज़रा कम ही दखता है..." सुलेमान ने महेश को आगे धकेलते ए कहा. महेश पायल और मोिहत के ख़याल मे नही आए ऐसा सामने दौड़ते ए गया.

दन भर इधर उधर घूमने मे व कैसा िनकल गया यह मोिहत और पायल को पता ही नही चला. कुछ देर बाद शाम भी हो गयी. मोिहत और पायल एक दूसरे का हाथ पकड़ कर म त मज़े मे फुतपाथ पर चल रहे थे. सामने एक जगह रा ते पर हाट शेप के लाल गु बारे बेचनेवाला फेरीवाला उ हे दखाई दया. वे उसके पास गये. मोिहत ने गु बार का एक बड़ा सा द ता खरीद कर पायल को दया. पकड़ ने के िलए जो धागा था उसके िहसाब से वह द ता बड़ा होने से धागा टूट गया और वह द ता उड़कर आकाश क ओर िनकल पड़ा. मोिहत ने दौड़कर जाकर, उँची उँची छलांगे लगाकर उसे पकड़ने का यास कया ले कन वह धागा उसके हाथ नही आया. वे लाल गु बारे मानो एकदुसरे को ध े देते ए उपर आकाश मे जा रहे थे. मोिहत क उस धागे को पकड़ ने क जी तोड़ कोिशश देख कर पायल िखल िखलाकर हंस रही थी.

और उनके काफ़ पीछे सुलेमान, िनतीन, महेश और राकेश कसी के ख़याल मे नही आए इसका यान रखते ए उनका पीछा कर रहे थे.

पायल और मोिहत एक जगह आइ

म खाने के िलए क गये. उ होने एक क िलया और

उसमे ही दोनो खाने लगे. आइ

म खाते व पायल का यान मोिहत के चेहरे क तरफ

गया और वह िखलिखलाकर हंस पड़ी.

" या आ...?" मोिहत ने पूछा.

"आईने मे देखो.." पायल वही पास एक गाड़ी को लगे आईने क तरफ इशारा कर बोली.

मोिहत ने आईने मे देखा तो उसके नाक के िसरे को आइ

म लगा था. अपना वह िलया

देख कर उसे भी हँसी आ रही थी. उसने वह प छ िलया और एक ेम भरी नज़र से पायल

क तरफ देखा.

"सचमुच अपनी िच कतनी िमलती जुलती है..." पायल ने कहा.

" फर... वह तो रहने वाली है... य क... वी आर दा पफ ट मॅच..." मोिहत गव से बोल

रहा था.

आइ

म खाते ए अचानक पायल का ख़याल दूर खड़े सुलेमान क तरफ गया. सुलेमान

ने झट से अपनी नज़र फेर ली. पायल को उसक नज़र अजीब लगी थी और उसक

गितिविधयाँ भी..

"मोिहत मुझे लगता है अब हमे यहाँ से िनकलना चािहए..."पायल ने कहा और वह वहाँ से

िनकल पड़ी. मोिहत उलझन मे सहमा सा उसके पीछे पीछे जाने लगा...

वहाँ से आगे काफ़ समय तक चलने के बाद वे एक कपड़े के दुकान मे घुस गये. अब काफ़

रात हो चुक थी. पायल को शक था क कह वह पहले दखा आ लड़का उनका पीछा तो

नही कर रहा है. इसिलए उसने दुकान मे जाने के बाद वहाँ से एक स क र दरार से बाहर

झाँक कर देखा. बाहर सुलेमान उसके और दो साथी के साथ चचा करते ए इधर उधर देख

रहा था. मोिहत उन लोग को दख सके ऐसे जगह पर खड़ा था.

"मोहत पीछे मुड़कर मत देखो.. मुझे लगता है वह लड़के अपना पीछा कर रहे है..." पायल दबे वर मे बोली...

"कौन..? कधर..?" मोहत ने गड़बड़ाते ए पूछा...

"चलो ज दी यहाँ से हम िनकल जाते है... वे हम तक प ँचने नही चाहए..." पायल ने उसे वहाँ से बाहर िनकाला.

वे दोनो लंबे लंबे कदम डालते ए फुतपाथ पर चल रहे थे लोग क भीड़ से रा ता िनकालते ए वहाँ से जाने लगे.

अपना पीछा हो रहा है इसका अब पूरा यक न पायल और मोहत को हो चुका था. वे दोनो भी घबराए और सहमे ए थे. यह शहर उनके िलए नया था. वे उन चोर से बचने के िलए िजधर रा ता िमलता उधर जा रहे थे. चलते चलते वे एक ऐसे सुनसान जगह पर आए क जहाँ लोग लगभग नही के बराबर थे. वैसे रात भी काफ़ हो चुक थी. यह भी एक वहाँ लोग ना होने क वजह हो सकती थी. उसने पीछे मुड़कर देखा. सुलेमान और उसके दो त अभी भी उनका पीछा कर रहे थे. पायल का दल धड़कने लगा. मोहत को भी कुछ सूझ नही रहा था. अब या कया जाय, दोनो भी इस सहमे ए थे. वे तेज़ी से चल रहे थे और उनसे िजतना दूर जा सकते है उतनी कोिशश कर रहे थे. आगे रा ते पर तो और भी घना अंधेरा था. वे दोनो और उनके पीछे उनका पीछा कर रहे वे चार लड़के इनके अलावा उनको वहाँ और कोई भी नही दख रहा था.

"लगता है उनके ख़याल मे आया है क हम उनका पीछा कर रहे है..." महेश अपने सिाथय से बोला.

"आने दो.. वह तो कभी ना कभी उनके ख़याल मे आने ही वाला था..." सुलेमान ने बे फ अंदाज़ मे कहा.

"वे ब त डरे ए भी लग रहे है..." राकेश ने कहा.

"डरना तो चाहए... अब डर के वजह से ही अपना काम होनेवाला है.. कभी कभी डर ही आदमी को कमजोर बना देता है..." िनतीन ने कहा.

मिोहत ने पीछे मुड़कर देखा तो वे चार तेज़ी से उनक तरफ आ रहे थे.

"पायल.. चलो दौड़ो..." मिोहत उसका हाथ पकड़ते ए बोला.

एक दूसरे का हाथ पकड़ कर वे अब ज़ोर से दौड़ने लगे.

"हमे पोलीस मे जाना चिाहए या...?" पायल ने दौड़ते ए पूछा.

"अब यहाँ कहाँ है पोलीस.... और अगर हम ढूंढकर गये भी.. तो वे भी हमे ही ढूँढ रहे ह गे... अब तक तु हारे घरवाल ने पोलीस मे रपोट दज क होगी..." मिोहत दौड़ते ए कसी तरह बोल पा रहा था.

दौड़ते ए वे घने अंधेरे मे डूबे ए एक स क र गली मे घुस गये. सुलेमान और उसके दो त भी उनके पीछे ही थे. वे जब गली मे घुसने ही वाले थे क उतने मे एक बड़ा सा क रा ते से उनके और उस गली के बीच मे से गुजर गया. वे क पास होने तक क गये और जब क पास हो चुका तब उनको उस गली मे कोई नही दख रहा था. वे गली मे घुस गये. गली के दूसरे िसरे तक तेज़ी से दौड़ गये. वहाँ क कर उ होने आजूबाजू देखा. ले कन उ हे मिोहत और पायल कही नही देखाई दे रहे थे.

सुलेमान और उसके दो त इधर उधर देखते ए एक चोराहे पर खड़े हो गये. उ हे पायल और मिोहत कह भी नही दखाई दे रहे थे.

"हम सब लोग चारो तरफ फैलकर उ हे ढूँढते है.. वे हमारे हाथ से छूटने नही चिाहए..." सुलेमान ने कहा.

चार लोग चार दशा मे, चार रा ते से जाकर फैल गये और उ हे ढूँढ ने लगे.

पायल और मिोहत रा ते के कनारे पड़े एक ेनेज पाइप मे िछप गये थे. शायद ेनेज पाइ स नये डालने के िलए या बदल ने के िलए वहाँ लाकर डाले ह गे. इतने मे अचानक उ हे उनक तरफ दौड़ते ए आ रहे कसी के पैर क आहट हो गयी. वे अब वहाँ से िहल भी नही सकते थे. वे अगर इस हाल मे उ हे िमले तो उनके पास करने के िलए कुछ नही बचा था. उ होने िब ली के जैसे अपनी आँख मूंद कर अपने आपको िजतना हो सकता है उतना िसमटने क कोिशस क . इसके अलावा वे कर भी या सकते थे...?

अब उनके ख़याल मे आया क वह दौड़कर आनेवाला, उ ही चार मे से एक, अब उनके पाइप के पास प ँच गया है.. वह नज़दीक आते ही मोिहत और पायल एकदम शांत लगभग साँसे रोक कर कुछ भी हरकत ना करते ए वैसे ही िछपे रहे. वह अब पाइप के एकदम पास आकर प ँचा था.

वह उन चार मे से ही एक महेश था. उसने आजूबाजू देखा.

"साले कहाँ गायब हो गये...?" वह िचढ़कर अपने आप से ही बड़बड़ाया.

उतने मे महेश का पाइप क तरफ ख़याल गया.

ज़ र साले इस पाइप मे िछपे ह गे...

उसने अनुमान लगाया. वह पाइप के और करीब गया. वह अब झुक कर पाइप मे देखने ही वाला था. इतने मे....

"महेश... ज़रा इधर तो आओ... ज दी..." उधर से सुलेमान ने उसे आवाज़ दया.

महेश पाइप मे झुक कर देखते देखते क गया, उसने आवाज़ आई उस दशा मे देखा और मुड़कर दौड़ते ए उसे दशा मे चला गया.

जानेवाले पेरो क आवाज़ आते ही पायल और मोिहत ने सुकून क सांस ली.....!

होटेल के एक कमरे मे पायल और मोिहत बेड पर एक दुसरे के आमने सामने बैठे थे.पायल अभी अभी नहाकर बाहर िनकली थी. दनभर क भागंभाग क वजह से वो मुरजा सी गई थी.ले कन पानी के बौछार से उसक ताजगी वापस लौट आयी थी.अब वो कसी नाजुक फूल क तरह िखल गई थी. पायल ने नहाकर अपने कपड़े बदल िलए थे.लाल रंग क सलवार म उसक सफ़ेद काया बेहद आकषक दख रही थी.मानो कसी ने गुलाब क पंखिड़य म अ र क सफेद बूंदे डाल दी हो.पायल का यह मनमोहक प देखकर मोिहत को उसे छूने का मोह हो गया. उससे रहा नह गया.मोिहत ने पायल के चेहरे पर आती बाल क लटो को एक तरफ हटाया.

"मुझे तो डर ही लगा था क शायद हम उनके चुंगले मे ना फँस जाए..." पायल ने कहा.

वह अभी भी उसे भयानक मि थित से बाहर नही िनकल पाई थी..

"देखो... मेरे होते ए तु हे चंता करने क या ज़ रत...? म तु हे कुछ भी नही होने दँूगा... आइ ॉमस..." वह उसे सां वना देने क कोिशश करते ए बोला.

उसने मंद मंद मु कुराते ए उसके तरफ देखा.

सचमुच उसे उसके इस श दोसे कतना अ छा लगा था...

धीरे से मोहत उसके पास िखसक गया. पायल ने उसक आँख मे देखा. मोहत भी अब उसक आँख से अपनी नज़रे हटाने के िलए तै यार नही था. धीरे धीरे उनके सांसो क गित बढ़ने लगी. ह के ही मोहत ने उसे अपनी बाह मे ख च िलया. उसे भी मानो उसक सुरि त बाह मे अ छा लग रहा था.

मोहत ने धीरे से उसे बेड पर िलटाकर उसका चेहरा अपनी हाथ मे लेकर वह उसक तरफ एकटक देखने लगा. धीरे धीरे उसक तरफ झुकता गया और उसके गम ह ठ अब उसके तपते ह ठोपर टक गये. दोनो भी बेकाबू होकर एक दूसरे को आवेग मे चूमने लगे. इतने आवेग मे क वे दोनो 'ढ पक' से बेड के नीचे फशपर िगर गये. पायल नीचे और उसके उपर मोहत िगर गया. दद से कराहते ए पायल ने उसे दूर धकेला.

"मेरी या हि याँ तोड़ोगे...?" वह कराहते ए बोली.

मोहत झट से उठ गया और उसे उपर उठाने का यास करने लगा.

"आइ एम सौरी... आइ एम सो सॉरी..." वह बोला.

पायल ने उसे एक थ पड़ मारनेका अवीरभाव कया. उसने भी डर के मारे अपनी आँख बंद कर अपना चेहरा दूसरी तरफ हटाया. पायल मन ही मन मु कुराइ. कसी छोटे ब े क तरह मासूम भाव उसके चेहरे पर उभर आए थे. उसक इसी मासूम आड़ा पर तो वह फदा ई थी. उसने उसका चेहरा अपने हाथ मे िलया और उसक ह ठो को वह कस कर चूमने लगी. वह भी उसी तड़प, उसी आवेग के साथ जवाब मे उसे चूमने लगा. अब तो उ होने नीचे फशपर िबछे गिालचे से उठकर उपर जाने के भी जहमत नही उठाई. असल मे वे एक ण भी गवाना नही चाहते थे. वे नीचे गिलचे पर ही लेटकर एक दूसरे के उपर चुंबन क बरसात करने लगे. चूमने के साथ ही उनके हाथ एक दूसरे के कपड़े िनकल ने मे

त थे.

मिोहत अब उसके सारे कपड़े िनकाल कर उसमे समा जाने को बेताब आ था. वह धीरे धीरे बड़ी बड़ी सांसो के साथ पायल के उपर झुकने लगा. इतने मे.. इतने मे उनके कमरे के दरवाजे पर कसी ने नॉक कया. वे मानो जैसे थे वैसे बफ क तरह जम गये. गड़बड़कर वे एक दूसरे क तरफ देखने लगे.

हमे दरवाजा बजने का आभास तो नही आ...?

तब फर से एकबार दरवाजे पर नॉक सुनाई दी... इसबार थोड़ी ज़ोर से..

स वस बॉय तो नही होगा...

"कौन है...?" मिोहत ने पूछा.

"पोलीस...." बाहर से आवाज़ आए.

दोनो गिलचे से उठकर कपड़े पहन ने लगे.

पोलीस यहाँ तक कैसे प ँच गयी...?

मिोहत और पायल सोचने लगे.

उ होने अपने कपड़े पहन ने के बाद मिोहत सहमे ए ि थित मे दरवाजे तक गया. उसने फर से एक बार पायल क तरफ देखा. अब इस प रि थित का सामना कैसे कया जाए इसक वे मन ही मन तै यार करने लगे थे. मिोहत क होल से बाहर झाँक कर देखने लगा. ले कन बाहर अंधेरे के िसवा कुछ नज़र नही आ रहा था.

या उस क होल मे कुछ ा लम होगा...

सावधानी से, धीरे से उसने दरवाज़ा खोला और दरवाज़ा थोड़ा ितरछा करते ए बाहर झाँक ने का यास कर रहा था और तभी .... सुलेमान, िनतीन, राकेश और महेश दरवाज़ा ज़ोर से धकेलते ए कमरे मे घुस गये.

या हो रहा है यह समझने के पहले ही सुलेमान ने दरवाजे को अंदर से कु डी लगा ली थी. कसी चीते क फुत से िनतीन ने चाकू िनकाल कर पायल के गदन पर रख दया और दूसरे हाथ से वह िच लाए नही इसिलए उसका मुँह दबाया.

सुलेमान ने भी मानो पूविनयोजन क तहत उसका चाकू िनकाल कर मोिहत के गदन पर रखा और उसका मुँह दबाकर उसे दबोच िलया. मानो अब पूरी ि थित उनके क ज़े मे आई हो इस तरह से वे एकदुसरे क तरफ देख कर अजीब तरह से मु कुराए.

"महेश इसका मुँह बाँध..." सुलेमान ने महेश को आदेश दया.

जैसे ही पायल ने िच लाने क कोिशश क िनतीन ने उसका मुँह ज़ोर से दबाते ए और मजबूती से उसे दबोच िलया.

"राकेश इसका भी बाँध.."

महेश ने मोिहत के मुँह, हाथ और पैर टेप से बाँध दया. राकेश ने पायल के मुँह और हाथ बाँध दए.

उ होने िजस फुत से यह सब हरकत क उससे ऐसा तीत हो रहा था क वे ऐसे कामो मे बड़े तरबेज़ हो.

अब सुलेमान के चेहरे पर एक वहशी मु कुराहट छुपाए नही छुप रही थी.

"आए... इसके आख पर कुछ बाँध रे... बेचारे से देखा नही जाएगा..." सुलेमान ने कहा.

महेश ने उनके ही सामने से एक कपड़ा िनकाल कर मोिहत क आँख पर बाँध दया. अब मोिहत को िसफ़ अंधेरे के िसवा कुछ दखाई नही दे रहा था और िसफ़ सुनाई दे रहा था वह उन िगदडो क वहशी और रा शी हँसी और पायल का दब-दबाया आ ची कार...

" आओ मेरे शेरो ! इस सफेद लाश का लु त उठाओ. ऐसा गो त फर कब िमलेगा."

सुलेमान अपनी वहशी भाषा म दो तो को आमं ण दे रहा था

उसके बाद तो मानो हैिवानयत का नंगा नाच शु आ. सुलेमान ने एक एक कर पायल के सभी कपड़े फाड़ दए. मानो पायल के कपड़े उसके वाद म बाधा बन रहे थे.अब पायल उ ह द रंदो के सामने िब कुल न थ . उसक सफेद न काया को देख चारो भिडए जैसे बौखला गए.

एक एक कर चारो भिड़ए पायल के सफेद लाश पर तुंट पड़े. उन चार म जैसी भूख िमटाने क शत लगी हो. ले कन यह भूख इतनी ज दी िमटनी वाली कहा थ . पायल के रोने

िगड़िगड़ाने के साथ उनक भूख शु हो गई थी और अब पायल के शांत होने पर ही उनक भूख भी शांत होने वाली थी.हवस का यह विहशी खेल यूह चलता रहा.मानो एक पव के बाद यह िसलिसला क गया.

मिोहत को एकदम सबकुछ शांत और त ध होने का एहसास आ.

"ए उसके आख पर बँधा कपड़ा छोड़ रे...." सुलेमान िचढ़ा आ वर गूंजा.

मिोहत को उसके आख पर से कोई कपड़ा िनकाल रहा है इसका एहसास आ. उसका आ ोश आँसु के ारा बाहर िनकलकर वह कपड़ा पूरी तरफ गीला आ था.

जैसे ही उ होने उसके आँख से वह कपड़ा िनकाला, उसने सामने का य देखा. उसके

जबड़े कसने लगे, आँख अँगारे बरसाने लगी, सारा शरीर गु से से काँपने लगा था. वह खुद को छुड़ाने के िलए छटपटाने लगा. उसके सामने उसक पायल िनव पड़ी ई थी. उसक गदन एक तरफ लटक रही थी. उसक आख खुली थी और सफेद हो गयी थे. उसका सफेद शरीर अब खून से लाल हो गया था, िन ल हो चुका था.उसके ाण कब के जा चुके थे.कुछ देर पहले िजस पायल को देखकर मिोहत फ़ु लत हो उठा था अब उसका शरीर र दे ए गुलाब क पंखिुड़य क तरह लाल हो गया था. भिेड़य ने उसके शरीर का हर एक िह सा नोच िलया था. पायल के िवरोध करने पर उसके शरीर को चाकुसे ग द कर रख दया था. सफेद लाश का लु त उठाकर भिेड़ए तृ हो गए थे. िन ल पड़ी पायल क लाश के साथ खेल रहे थे.कोई पायल के तन को िनचोड़ता तो कोई जांघो को सहलाता.वो चार जैसे मिोहत को िचढ़ा रहे थे.उसे बताने क किोशश कर रहे थे क उसके िह से का मांस का टुकड़ा उ ह ने उससे चुरा िलया था. और उसके सामने ही उ ह ने दावत उठाई थी. मानो वे चार मिोहत को उसक बेबसी का एहसास करा रहे थे.

अचानक मिोहत को एहसास आ क उसके सरपार कसी भारी व तुका हार आ और वह धीरे धीरे होश खोने लगा.

जब मिोहत होश मे आया, उसे एहसास आ क अब वह बँधा आ नही था. उसके हाथ पैर

बंधन से मु थे. ले कन जहाँ कुछ देर पहले पायल क बॉडी पड़ी ई थी वहाँ अब कुछ भी

नही था. वह तुरंत उठकर खड़ा हो गया, उसने चारो और अपनी नज़र घुमाई.

वह मुझे िगरा आ कोई भयानक सपना तो नही था....

हे भगवान वह सपना ही हो...

वह मन ही मन ाथना करने लगा....

ले कन वह सपना कैसे होगा...

"पायल..." उसने एक आवाज़ दया.

उसे मालूम था क उसे कोई ितसाद आनेवाला नही है...

ले कन एक झु ट आस....

उसके सर मे पीछे क तरफ से ब त दद हो रहा था. इसिलए उसने सर को पीछे हाथ

लगाकर देखा. उसका हाथ लाल लाल खून से सन गया.

उन लोग ने हार कर उसे बेसु कया था उसका वह ज म और िनशानी थी. अब उसे

प ा िव ास आ था क वह कोई सपना नही था.

वह तिजसे म के बाहर दौड़ पड़ा. बाहर इधर उधर ढूँढते ए वह गिलयारे से दौड़ रहा

था. वह िल ट के पास गया और िल ट का बटन दबाया. िल ट मे घुसने से पहले फर से

उसने एक बार चार तरफ अपनी ढूँढती नज़र दौड़ाई...

कहाँ गये वे लोग...?

और पायल क बॉडी कधर है...?

क उ होने लगा दया उसे ठकाने...

वह होटेल के बाहर आकर अंधेरे मे पागल क तरह इधर उधर दौड़ रहा था. सब तरफ

अंधेरा था. आधी रात होकर गयी थी. रा ते पर भी आने जानेवाले ब त ही कम दखाई दे

रहे थे. एक कोने पर खड़ा एक टिं सवाला उसे दखाई दया.

उसे शायद पता हो...

वह उसे टॅ सी के पास गया, टॅ सी वाले से पूछा. उसने दाई तरफ इशारा कर कुछ तो कहा.

मिोहत टॅ सी मे बैठ गया और उसने टॅ सी वाले को टॅ सी उधर लेने को कहा....

िनराश, हताश आ मिोहत धीमे गित से चलता आ अपने म के पास वापस आ गया.

म मे जाकर उसने अंदर से दरवाज़ा बंद कर िलया.

उसने बेड क तरफ देखा... बेड शीट पर झु रया पड़ी ई थी. वह बेड पर बैठ गया...

या कया जाय...?

पोलीस के पास जाऊ तो वे मुझे ही िगर तार करगे...

और खून का इ ज़ाम मुझ पर ही लगाएँगे...

और वैसे देखा जाए तो म ही तो ँ उसके खून के िलए िज़ मेदार...

िसफ़ खून ही नही तो उसपर ई बला कार के िलए भी...

उसने आपने पैर मॉ कर घुटने पेट के पास िलए और घुटनो मे अपना मुँह िछपाया और वह फूटफूटकर रोने लगा.

रोते ए उसका यान वह कपाट के नीचे िगरे काग़ज़ के टुकड़े ने ख च िलया. वह खड़ा हो गया अपने आँसू अपने आ तीन से प छ िलए.

काग़ज़ का टुकड़ा...? यहाँ कैसे...?

उसने वह काग़ज़ का टुकड़ा उठाया...

काग़ज़पार चार अँ ेज़ी अ र िलखे ए थे - एसेच, ए, एस और सी और उन अ र के सामने कुछ नंबस िलखे ए थे. शायद वे कोई प

के गेम के पायं स ह गे...

उसने वह काग़ज़ उलट पुलटकार देखा. काग़ज़ के पीछे एक नंबर था. शायद मोबाइल नंबर होगा.

वह दृढ़तापूवक खड़ा हो गया -

"िनतीन.... म तु हे छोड़ूँगा नही..." वह गरज़ उठा.

इं पे टर कबीर इं पे टर मंजीत संह के सामने बैठकर सब सुन रहा था. वह कब क कहानी पूरी कर चुका था. ले कन वह ददभरी कहानी सुनकर कमरे मे सारे लोग इतने दद

से अिभभूत हो गये थे क ब त देर तक कोई कुछ नही बोला. कमरे मे एक अनस गक स ाटा छाया था.

एक ेम कहानी का ऐसा भयानक ददनाक अंत होगा...?

कसी ने नही सोचा था...

पायल और मोिहत क ेम कहानी किंबन मे उपि थत सभी लोग के दल को छू गयी थी.

थोड़ी देर बाद इं पे टर कबीर ने अपनी भावना को काबू मे करते ए पूछा,

" या मोिहत ने पोलीस टेशन मे रपोट दज़ क थी...?"

"नही..."

" फर... यह सब तु हे कैसे पता...?"

" य क पायल का भाई... अमोल ने रपोट दज़ क थी..."

"ले कन उसने भी रपोट कैसे दज़ क ...? मेरा मतलब है उसे वह सबकुछ पता कैसे चला...? या मोिहत उसे िमला था...?" कबीर ने एक के बाद एक सवाल क छड़ी लगा दी.

"नही... मोिहत उसे उस घटना के बाद कभी नही िमला..." मंजीत संह ने कहा.

" फर उसे खूनी कौन है यह कैसे पता चला...?" कबीर को अब उसे सता रहे सारे सवाल के जवाब िमलने क ज दी हो रही थी..

"कुछ महीने पहले मोिहत ने पायल के भाई को इस घटना के बारे मे खत िलख कर सब जानकारी िलखी थी... उसमे उसने उन चार लोग के नाम पते भी िलखे थे.."

" फर रपोट का नतीजा या िनकला...?" कबीर ने अगला सवाल पूछा.

"... इस केस पर हमने ही तहक़ क़ात क थी... ले कन ना पायल क डेड बॉडी िमली थी.. ना मोिहत िमला जो क इस घटना का अकेला और ब त अहम च मदीद गवाह था... इसिलए केस िबना कुछ नतीजे के वैसी ही लटका रहा... और अभी भी वैसे ही लटका पड़ा है..."

"अ छा... मोिहत का कुछ अता पता ?" कबीर ने पूछा.

"उसके बारे मे कसी को भी कुछ पता नही चला... उस घटना के बाद वह कभी उसके अपने घर भी नही आया... वह जंदा है या मरा... इसका भी कुछ पता नही चला... िसफ़ उसके अमोल को आए खत से ऐसा लगता है क वह जंदा होना चिाहए... ले कन अगर वह जंदा है तो िछप यो रहा है...? यही एक बात समझ मे नही आती..."

"उसका कारण सीधा है..." इतनी देर से यान देकर सुन रहे पाठक ने कहा.

"हाँ... उसका एक ही कारण हो सकता है क... हाल ही मे जो दो क ल ए उसमे मिोहत का ही हाथ हो सकता है.. और इसिलए ही मेने तु हे यहाँ बुलाकर यह सब जानकारी तु हे देना मुनिासब समझा..." मंजीत संह ने कहा.

"बराबर है तु हारा... इस खून मे मिोहत का हाथ हो सकता है ऐसा मान लेने क काफ़ गुंजाइश है.. ले कन मुझे एक बात समझ मे नही आती है क.. जब वह कमरा या मकान अंदर से और सब तरफ से बंद होता है तब वह खूनी अंदर प चता कैसे है..? वह सारे क ल कैसे कर रहा है यह एक ना सुलझनेवाली पहेली बन चुक है..."

"अ छा अब पायल के भाई को इस घटना के बारे मे पता चला तो उसक ित
या या
थी..? और अब केस के नतीजे मे देरी हो रही है इसके बारे मे उसक ित
या कैसी है...?"

"वह आदमी पागल जैसा हो चुका है... इस पोलीस टेशन मे उसका हमेशा च र रहता है.. और केस का आगे या आ यह वह हमेश पूछता रहता है.. वह यह सब फोन करके भी पूछ सकता है.. ले कन नही वह खुद यहाँ आकर पूछता है.. मुझे तो उसपर ब त तरस आता है.. ले कन अपने हाथ मे िजतना है उतना ही हम कर सकते है..." मंजीत संह ने कहा.

"इसका मतलब हाल ही मे जो दो खून ए उसका कितल पायल का भाई अमोल भी हो सकता है..." कबीर ने कहा.

"आपने उसे देखना चिाहए... उसक तरफ देख कर तो ऐसा नही लगता..." मंजीत संह ने कहा.

"ले कन यह एक संभावना है िजसे हम झुटला नही सकते..." कबीर ने ितवाद कया.

इं पे टर मंजीत संह ने थोड़ी देर सोचा और फर हाँ मे अपना सर िहलाया...

भाग - 5

लगभग आधी रात को िनतीन और सुलेमान हॉल मे िव क पी रहे थे. एक के बाद एक उनके दो सिाथय का क ल आ था. पहली बार जब महेश का खून आ तभी उ हे शक आ था क हो ना हो यह मामला पायल के खून से संबंिधत है. ले कन बाद मे राकेश क ल के बाद उनका शक यक न मे बदल गया था क यह पायल के खून क वजह से ही हो रहा है.. कुछ भी हो जाय हम घबराएँगे नही ऐसा ठान लेने के बाद भी उनको रह रहकर अगला

नंबर उन दोनो मे से ही कसी एक का प पसे दख रहा था. इसिलए उनके चेहरे से चंता और डर हटने के िलए तै यार नही था. वे िव क के एक के बाद एक ना जाने कतने लास खाली कर रहे थे और अपना डर िमटाने क कोिशश कर रहे थे.

"मेने नही कहा था तु हे...?" सुलेमान ने आवेश मे आकर कहा.

िनतीन ने

थक मु ा मे उसक तरफ देखा.

"उस साले हरामी को जंदा मत छोड़ कर के... उसको हमने तभी ठकाने लगाना चािहए था.. उस लड़क के साथ..." सुलेमान िव क का कड़वा घूँट लेते ए बूरासा मुँह बनाते ए बोला.

उ हे शक नही.. प ा यक न था क मोिहत का ही इन दो वारदात मे हाथ होगा..

"हमे लगा नही क साला इतना डजरस िनकलेगा..." िनतीन ने कहा.

"इंतकाम... इंतकाम आदमी को डजरस बना देता है.." सुलेमान ने कहा.

"ले कन एक बात मेरे ख़याल मे नही आ रही है क वह सारे क ल कैसे कर रहा है.. पोलीस जब वहाँ प चती है तब घर अंदर से बंद कया आ रहता है और बॉडी अंदर पड़ी ई...

और यही नही तो राकेश के गलेका तोड़ा आ माँस का टुकड़ा मेरे कचन मे कैसे आया...?

और खास बात तब मैने मेरा घर िखड़ कयाँ, दरवाजे सब कुछ अ छी तरह से बंद कया था..." िनतीन आ य जताते ए बोला...

िनतीन कही शु य मे देख कर सोचते ए बोला,

"यह सब देखते ए एक बात मुम कन लगती है.."

"कौन सी...?" सुलेमान ने िव क का खाली आ लास भरते ए पूछा.

"तु हारा भूत पर िव ास है...?" िनतीन ने बोले या ना बोले इस मन क ि धा ि थित मे पूछा. य क उसने तो वो नज़ारा खुद देखा था ले कन कैसे ना कैसे करके िनतीन बच िनकला था..

"मूख क तरह कुछ भी मत बको.. उसके पास कुछ तो क है िजसको इ तेमाल करके वह

इस तरह से क ल कर रहा है..." सुलेमान ने कहा.

"मुझे भी वही लगता है... ले कन कभी कभी अलग अलग तरह के शक मन मे आते है..."

िनतीन ने कहा.

" चंता मत करो... वह हमारे तक प ँचने के पहले ही हम उसके पास प ँचते है और उसको

ठकाने लगाते है..." सुलेमान उसे सां वना देने के कोिशश करते ए बोला...

"हमे पोलीस ोटे न लेना चािहए..." िनतीन ने सोच कर कहा.

"पोलीस ोटे न...? पागल हो गये हो या...? हम उ हे या बोलने वाले है.. क सरकार

हमने उसे लड़क को मारा है.. हमारे से ग़लती हो गयी... सॉरी.. ऐसी ग़लती हमारे से फर

नही होगी.. कृपया हमारा र ण क िजए...सरकार" सुलेमान दा के नशे मे माफ माँगने

के हावभाव करते ए बोला.

"वह बाद क बात हो गयी... पहले अपना ोटे न सबसे अहम है.. वह या है क... सर

सलामत तो पगड़ी प ास..." िनतीन ने कहा.

"ले कन पोलीस के पास जाकर उनसे ोटे न माँगना.... कुछ..."

पोलीस ोटे न का ख़याल आते ही िनतीन अपने डर से काफ़ उभर गया था.

"उसक चंता तुम मत करो.. वह सब मुझपर छोड़ दो..." िनतीन ने उसका वा य बीच मे

ही तोड़ते ए बड़े आ मिव ास से कहा...

कबीर अपने किॅबन मे सर नीचे झुकाकर सोच मे डूबा आ बैठा था. इतने मे, पाठक उसका

अिस टट वहाँ आगया.

"सर... वह कितल क ल क जगह कैसे प ँचता होगा और फर कैसे बाहर जाता होगा...

इसके बारे मे मेरे दमाग़ मे एक आइिडया आया है.." पाठक ने उ साह भरे वर मे कहा.

कबीर ने अपना सर उपर उठाया और पाठक क तरफ देखा.

पाठक दरवाजे के बाहर गया और उसने दरवाजा ख चकर बंद कया.

"सर दिखए अब..." वह बाहर से ज़ोर से िच लाया.

कबीर ने देखा क दरवाजे क अंदर क कु डी धीरे धीरे िखसक कर बंद हो गयी. कबीर

भौच ा देखता ही रह गया.

"सर आपने देखा या...?" उधर से पाठक का आवाज़ आया.

फर धीरे धीरे दरवाज़े क कु डी दूसरी तरफ िखसकने लगी और थोड़ी ही देर मे कु डी

खुल गयी..

कबीर को ब त आ य हो रहा था.

पाठक दरवाज़ा खोलकर अंदर आया, उसके हाथ मे पीछे क और कुछ तो िछपाया आ

था.

"तुमने यह कैसे कया...?" कबीर ने उ सुकतासे पूछा.

पाठक ने एक बड़ा सा मॅगनेट अपने पीछे छुपाया था वह िनकाल कर कबीर के सामने टेबल

पर रख दया.

"यह सब करामात इस चुंबक क है य क वह दरवाजे क कु डी लोहे क बनी ई है..."

पाठक ने कहा.

"पाठक फोर युवर काइंड इ फ़ौरमेशन... घटना थलपर िमली सब दरवाज़े क कु डी

अ यूिमिनयम क थी..." कबीर ने उसे बीच मे टोकते ए कहा.

"ओ ह... अ यूिमिनयम क थी..." फर और कोई आइिडया दमाग़ मे आए जैसे उसने

कहा, "कोई बात नही.. उसका हल भी है मेरे पास..."

कबीर ने अिव ास से उसक तरफ देखा.

पाठक ने अपने गले मे पहना एक टो स का नेकलेस िनकालकर उसका धागा तोड़ दया, सब टो स एक हाथ मे लेकर उसमे से िपरोया आ नाइलॉन का धागा दूसरे हाथ से ख च

िलया. उसने हाथ मे जमा ए सारे टो स जेब मे रख दए. अब उसके दूसरे हाथ मे वह

नाइलॉन का धागा था.

कबीर असमंजस क ि थित मे उसक तरफ वह या कर रहा है यह देखने लगा.

"अब दिखए यह दूसरा आइिडया... आप िसफ़ मेरे साथ कमरे के बाहर आईए..." पाठक ने

कहा.

कबीर उसके पीछे पीछे जाने लगा.

पाठक दरवाज़े के पास गया. दरवाज़े के कु डी मे उसने वह नाइलॉन का धागा अटकाया.

धागे के दोनो िसरे एक हाथ मे पकड़ कर उसने कबीर से कहा, "अब आप दरवाज़े से बाहर जाइए..."

कबीर दरवाज़े के बाहर गया. पाठक भी अब धागे के दोनो िसरे एक हाथ मे पकड़ कर दरवाज़े से बाहर आगया और उसने दरवाज़ा ख च िलया.

दरवाज़ा बंद था ले कन वह धागा जो पाठक के हाथ मे था दरवाज़े के दरार से अब भी अंदर क कु डी को अटकाया आ था. पाठक ने धीरे धीरे उसे धागे के दोनो िसरे ख च िलए और फर धागे का एक िसरा हाथ से छोड़कर दूसरे िसरे के सहारे धागा ख च िलया.

पूरा धागा अब पाठक के हाथ मे था.

"अब दरवाज़ा खोलकर दिखए..." पाठक ने कबीर से कहा.

कबीर ने दरवाज़ा धकेलकर देखा और आ य क बात दरवाज़ा अंदर से बंद था.

कबीर भौच ा सा पाठक क तरफ देखने लगा.

"अब मुझे पूरा िव ास होने लगा है..." कबीर ने कहा.

" कस बात का...?" पाठक ने पूछा.

" क इस नौकरी के पहले तुम कौन से ध दे करते ह गे..." कबीर ने मज़ाक मे कहा.

दोनो एक दूसरे क तरफ देख मु कुराए.

"ले कन एक बता..." कबीर ने कहा.

पाठक ने

थक मु ा मे कबीर क तरफ देखा.

" क अगर दरवाज़े को अंदर से अगर ताला लगा हो तो...?" कबीर ने पूछा.

"नही... उस हाल मे... फर एक ही संभावना है..." पाठक ने कहा.

"कौन सी...?"

" क वह दरवाज़ा खोलने के िलए कसी अमानवी शि का ही होना ज़ री है..." पाठक ने कहा.

पोलीस टेशन के का फरे स म मे मी टंग चल रही थी. सामने दीवार पर टाँगे ए सफेद नपर ोजे टर से एक लेआउट डाइय ॅम ॅॉजे ट कया था. उस डाइय ॅम मे दो मकान के लेआउट एक के पास एक िनकले ए दख रहे थे. लाल ले सर पायंटर का इ तेमाल का इं पे टर कबीर सामने बैठे लोग को अपने लान क जानकारी दे रहा था...

“िम टर. सुलेमान और िम टर. िनतीन ...” कबीर ने शु आत क सामने बाक पोलीस के लोग के साथ सुलेमान और िनतीन बैठे ए थे. वे लोग कबीर जो कुछ जानकारी दे रहा था वह यान देकर सुन रहे थे.

“... आपके घर मे इस जगह हम कॅमरा िबठाने वाले है.. बेड म मे तीन और घर मे दूसरे जगह तीन ऐसे कुल िमलाकर 6 कॅमरा दोनो घर मे िबठाए जाएँगे... वह कॅमरा स कट टीवी से जोड़ दए जाएँगे जहाँ हमारी टीम घर के सारी हरकत पर लगातार नज़र रखी ई होगी.

“आपको लगता है इससे कुछ होगा...?” सुलेमान िनतीन के कान मे ंगतपूवक

फुसफुसाया.

िनतीन ने सुलेमान क तरफ देखा और कुछ ित

या

नही क और फर कबीर से

पूछा, “अगर खूनी कॅमरा से दूर रहा तो...?”

“जट मेन हम घर मे मू वंग कॅमरा लगाने वाले है.. िजसक वजह से आपका पूरा घर हमारी टीम के िनगरानी के नीचे रहनेवाला है... और हाँ... म आपको िव ास दलाता ँ क यह सबसे कारगर और एफि टव उपाय हम खूनी को पकड़ने के िलए इ तेमाल कर रहे है.. क़ितल ने अगर अंदर घुसने क कोिशश क तो वह कसी भी हालत मे हमसे बच नही पाएगा.. हमारे टे

कल टीम ने रात दन काफ़ मश त कर यह ॅप तै यार कया है...”

“अ छा वह सब ठीक है.. और अगर इतना करने बाद अगर क़ितल आपके हाथ मे आता है तो आप उसके साथ या करने वाले हो...?” सुलेमान ने पूछा.

“जिाहर है हम उसे कोट के सामने पेश करगे... और क़ानून के िहसाब से जो भी सज़ा उसे ठीक लगे वह कोट तय करेगा...” कबीर ने कहा.

“और अगर वह छूट कर भाग गया तो...?” सुलेमान ने आगे पूछा.

“जैसे पायल के क़ितल उसका खून कर भाग गये वैसे...” पाठक ने ं तापूवक कहा.

सुलेमान और िनतीन ने उसक तरफ गु से से देखा.

“तु हे या हम खूनी लगते है...” िनतीन ने उसे गु से से ित कया...

“याद रखो अबतक हम कोट गुनहगार सिाबत नही कर पाया है..” सुलेमान गु से से िचढ़कर बोला.

“िम टर. िनतीन & िम टर. सुलेमान... ईज़ी...ईज़ी... मुझे लगता है हम असली मु े से भटकते जा रहे है... फलहाल असली मु ा है क आप लोग को ोटे न कैसे दया जाय... आप लोग पायल के खून के िलए िज़ मेदार हो या नही यह बाद का मु ा आ..” कबीर ने उ हे शांत करने के उ े य से कहा.

“आप लोग भी पहले हमारे ोटे न के बारे मे सोचो... बाक बाते बाद मे देखी जाएगी...” सुलेमान अिधकार वाणी से खांस कर पाठक के तरफ देख कर बोला, िजसने उसे छेड़ा था. पाठक को इन दो लोग के ोटे न के िलए तैनात टीम मे शिामल कया था, यह बात कुछ खल नही रही थी. कबीर ने भी पाठक को शांत रहने का इशारा कया. पाठक गु से से उठकर वहाँ से चला गया. उसके जाने से मौहाल थोड़ा ठंडा हो गया और कबीर फर से अपनी योजना के बारे मे सब लोग को िव तृत जानकारी देने लगा.

सुलेमान और िनतीन पोलीस उनका ोटे न कर पाएँगे क नही इसके बारे मे अभी भी संजीदा थे. ले कन उ हे उनके ोटे न क िज़ मेदारी उनपर सौपने के आलवा दूसरा कुछ चारा भी तो नही था.

पोलीस टेशन मे कबीर के खाली कुस के सामने एक आदमी बैठा आ था. कबीर ज दी ज दी वहाँ आकर अपनी कुरसीपर बैठ गया.

“हाँ... तो आपके पास इस केस के स दभ मे कुछ मह वपूण जानकारी है...?” कबीर ने पूछा.

“हाँ... साहब”

कबीर ने एकबार उस आदमी को उपर से नीचे तक देखा और फर वह या बोलता है यह सुनने लगा.

“साहब हमारे पड़ोस मे वह लड़क पायल, िजसका खून होगया ऐसा बोलते है, उसका भाई रहता है...” उस आदमी ने शु आत क और वह आगे पूरी कहानी कथन करने लगा.....

एक चो ल मे एक घर था, उस घर को चारो तरफ काँच क िखड़ कयाँ ही िखड़ कयाँ थी. इतनी क उस घर मे या चल रहा है वह पड़ोसी को भी पता चले. एक िखड़क से हॉल मे पायल का भाई अमोल बैठा आ दख रहा था. अब वह पहले से कुछ यादा अजीब और पागल जैसा लग रहा था. दाढ़ी बढ़ी ई, बाल िबखरे ए. म तक पर एक बड़ा सा कसी चीज़ का टीका लगा आ. वह फाइय लस के सामने हाथ मे एक कपड़े का गु ा लेकर बैठा आ था. शायद वह गु ा उसने ही बनाया आ होगा. बगल मे रखे ले स से उसने हाथ से कुछ उठाया और वह कुछ त

-म

जैसे श द बड़बड़ाने लगा.

“एबेस ती बा रास कितन तत...”

उसने लेट से जो उठाया था वह सामने फाइय लस के आग मे फक दया. आग भड़क उठी. फर से वह वैसे ही कुछ िविच त

म

बोलने लगा.

“कातसी... नतंदी...वानशारपट...रेरवरत टता...”

फर से उसने उस लेट से धान जैसा कुछ अपने हाथ मे उठाकर उस आग के वाधीन कया. इस बार आग और ज़ोर से भड़क उठी.

उसने अपने हाथ से वह गु ा वह बगल मे रख दया, आगे के सामने झुक कर, फशपर अपना म तक िघसा.

एक आदमी पड़ोस से अमोल के घर मे या चल रहा है यह उ सुकतावश देख रहा था.

म तक िघसने के बाद अमोल उठकर खड़ा आ और अजीब तरह से ज़ोर से चीखा. जो पड़ोस से झाँक कर देख रहा था वह भी एक पल के िलए डर से और सहम गया. अमोल ने झुक कर बगल मे रखा आ वह गु ा उठाया और फर से एक बार ज़ोर से अजीब तरह से िच लाया. सब तरफ एक अजीब, भयानक स ाटा छा गया.

“अब तू मरने के िलए तै यार हो जा महेश...” अमोल ने उस गु े से कहा.

“नही... नही... मुझे मरना नही है इतनी ज दी.. अमोल म तु हारे पैर पड़ता ँ... मुझे माफ़ कर दे... आइ एम सॉरी.. मेने जो कया वह ग़लत कया... मुझे अब उसका एहसास हो गया है.. म तु हारे िलए तुम जो कहोगे वह क ँ गा... ले कन मुझे माफ़ कर दो...”

अमोल मानो वह गु ा बोल रहा है वैसे उस गु े के संवाद बोल रहा था.

“तुम मेरे िलए कुछ भी कर सकते हो...? तुम मेरी बहन को वापस ला सकते हो..?” अमोल ने अब उसके खुद के संवाद बोले.

“नही... म वह कैसे कर सकता ँ..? वह अगर मेरे हाथ मे होता तो म ज़ र करता.. वह एक चीज़ छोड़कर कुछ भी माँगो... म तु हारे िलए क ँ गा...” अमोल गु े के संवाद बोलने लगा.

“अ छा.... तो फर अब मरने के िलए तै यार हो जाओ...”अमोल ने उस गु े से कहा.

वह पड़ोस का आदमी अब भी अमोल के िखड़क से छुपकर अंदर झाँक रहा था.

आधी रात होकर उपर काफ़ समय गुजर चु ा था. बाहर रा ते पर कोई भी दख नही रहा था. अमोल धीरे से अपने घर से बाहर आया, चारो और एक नज़र घुमाई. उसके हाथ मे

एक थै ली थी िजसमे उसने वह गु ा ठंूस दया और दरवाज़े को ताला लगा कर वह बाहर
िनकल गया. क पाउंड के बाहर आते ए उसने फर से अपनी पैनी नज़र चारो और दौड़ाई.
सामने रा ते पर िजधर देखो उधर अंधेरा ही अंधेरा छाया आ दख रहा था. अब रा ते से
वह तेज़ी से अपने कदम बढ़ाते ए चलने लगा. उस पड़ोस के आदमी ने अपने िखड़क से
छुपकर अमोल को बाहर जाते ए देख िलया. जैसे ही अमोल रा ते पर आगे चलने लगा
वह आदमी अपने घर से बाहर आ गया वह आदमी उसे कुछ आहट ना हो या वह उसे
दखाई ना दे इसका ख़याल रख रहा था. अमोल तेज़ी से अपने कदम आगे बढ़ाते ए चल
रहा था. अमोल काफ़ आगे िनकल जाने के बाद वह आदमी उसके पीछा करते ए उसके
पीछे पीछे जाने लगा.

वह आदमी अमोल का पीछा करते ए कि

तान तक प ँच गया, कि

तान के आसपास

घने पेड थे. शायद उसे पेड़ो मे छुपकर उ लू मुद क राह देखते ह गे.. काफ़ दूर कु

के

रोने जैसे अजीब सी आवाज़े आ रही थी. उस आदमी को इस सारे माहौल मे डर लग रहा
था. ले कन उसे अमोल यहाँ कस िलए आया है यह जानना था. अमोल कि

तान मे घुस

गया और वह आदमी बाहर ही क पाउंड वॉल के पीछे छुपकर अमोल या कर रहा है यह
देखने लगा. चाँद के रोशनी मे उस आदमी को अमोल का साया दखा रहा था. अमोल ने
एक जगह तय क और वह वहाँ खोदने लगा. एक ग ा खोदने के बाद उसने उसके थै ली से
वह गु ा िनकाला. उस गु े को अमोल ने ऐसा दफ़न कया क मानो वह गु ा ना होकर
कोई शव हो. वह उपर से म ी डालने लगा और म ी डालते व भी उसका कुछ म

त

जैसे बड़बड़ाना अब भी जारी था. उस गु े के उपर म ी डालने के बाद जब वह ग ा म ी से

भर गया तो अमोल उस म ी पर खड़ा होकर उसे अपने पैर से दबाने लगा...

.... वह आदमी कथन कर रहा था और कबीर यान देकर सुन रहा था, उस आदमी ने आगे कहा –

“दूसरे दन जब मुझे पता चला क महेश का क ल हो चुका है तब मुझे ि व ास नही आ...”

काफ़ देर तक कोई कुछ नही बोला. अब इन सारी बात ने एक नया ही मोड़ ि लया था. कबीर सोच ने लगा.

“तु हे या लगता है अमोल खूनी होगा...?” कबीर ने अपने इनवि टगेटर क भिूमका मे वेश करते ए पूछा.

“नही... मुझे लगता है क वह उसका काला जादू इन सारे क ल करने के ि लए इ तेमाल करता होगा.. य क ि जस दन राकेश का क ल आ उसके पहले दन रात को अमोल ने वैसा ही एक गु ा बनाकर उसे कि
तान मे दफ़न कया था...” उस आदमी ने कहा.

“तुम इन सारी चीज़ मे ि व ास रखते हो..?” कबीर ने थोड़ा ंगा मक ढंग से ही पूछा.

“नही.. म ि व ास नही रखता... ले कन जो अपनी खुली आँख से सामने दख रहा हो उन चीज़ पर ि व ास रखना ही पड़ता है...” उस आदमी ने कहा.

कबीर का पा नर जो इतनी देर से दूर से सब उनक बात सुन रहा था, चलते ए उनके पास आकर बोला –

“मुझे पहले ही शक था क क़ितल कोई आदमी ना होकर कोई हानी ताक़त है...”

सारे कमरे मे एक स ाटा फैल गया.

“अब उसने और एक नया गु ा बनाया आ है...” उस आदमी ने कहा.

भाग - 6

अमोल के मकान के ि खड़क से अंदर का सबकुछ दख रहा था. आज भी वह फाइय लस के

सामने बैठा आ था. उसने अपने हाथ से वह गु ा बगल मे ज़मीन पर रख दया और झुककर आग के सामने फशपर अपना म तक रगड़ने लगा. यह सब करते ए उसका कुछ बड़बड़ाना जारी ही था. थोड़ी देर से वह खड़ा हो गया और अजीब ढंग से ज़ोर से कसी पागल क तरह चीखा. इतना अचानक और ज़ोर से चीखा क बाहर िखड़क से झाँक रहे कबीर , पाठक और उनको साथ मे जो लेकर आया था वह आदमी, स लोग च क कर सहम से गये. उस चीख के बाद वातावरण मे एक अजीब भयानक स ाटा छा गया.

"िम टर. िनतीन अब तु हारी बारी है..." अमोल वह नीचे रखा आ गु ा अपने हाथ मे लेते ए बोला.

ले कन इतने मे दरवाज़े के बेल बजी. अमोल ने पलटकर दरवाज़े क तरफ देखा. गु ो को फर से नीचे ज़मीन पर रख दया और उठकर दरवाज़ा खोलने के िलए सामने आ गया. दरवाज़ा खोला, सामने कबीर और पाठक था, वह तीसरा आदमी शायद वहाँ से पहले ही िखसक गया था.

"िम टर. अमोल हम आपको महेश और राकेश के क ल के एक स पे ट के तौर पर िगर तार करने आए है... आपको चुप रहने का पूरी तरह हक है.. और कुछ बोलने के पहले आप अपने वक ल के साथ संपक कर सकते है.. और ख़याल रहे क आप जो भी बोलेगे वह कोट मे आपके िखलाफ इ तेमाल कया जाएगा..." कबीर ने दरवाज़ा खोलते ही बराबर एलान कर दया.

अमोल का चेहरा एकदम भावशू य था, वह बड़े इि तनान के साथ उनके सामने आ गया. उसे अरे ट करने के पहले कबीर ने कुछ सवाल पूछने क ठान ली.

"यहाँ आपके साथ कौन-कौन रहता है...?"कबीर ने पहला सवाल पूछा.

"म अकेला ही रहता ँ..." उसने जवाब दया.

"ले कन हमारी जानकारी के अनुसार आपके साथ आपके िपताजी भी रहते थे..."

"हाँ रहते थे... ले कन... अब वे इस दिुनया मे नही रहे..."

"ओ ह... सॉरी.. यह कब आ...? मतलब वे कब गुजर गये..?"

"पायल क मौत क खबर सुनने के बाद कुछ दन मे ही वे चल बसे..."

"अ छा आप महेश और राकेश को पहचानते थे या...?"

"हाँ उन हैवानो को म अ छी तरह से पहचानता ँ..."

महेश और राकेश का नाम लेने के बाद कबीर ने एक बात गौर क क उनके उपर का गु सा और ेष उसके चेहरे पर सॉफ झलक रहा था. या फर उसने वह िछपाने क कोिशश भी नही क थी..

अब कबीर ने सीधे असली मु े पर उससे बात करने क ठान ली...

"आपने महेश और राकेश का खून कया या...?"

"हाँ..." उसने ठंडे वर मे कहा.

कबीर को लगा था क वह आनाकानी करेगा... ले कन उसने कुछ भी आनाकानी ना करते ए सीधे बात कबुल कर ली...

"कैसे कया आपने उनका क ल...?" कबीर ने अगला सवाल पूछा.

"मेरे पास के काले जादू से मेने उ हे मार दया..." उसने कहा.

अमोल पागल क तरफ दखता तो था ही ले कन उसके इस जवाब से कबीर को िव ास हो चला था.

"आपके इस काले जादू से आप कसी को भी मारकर बता सकते हो...?" कबीर ने ंगा मक ढंग से पूछा.

" कसी को भी म य मा ँ गा...? िजसक मुझ से दु मनी है उसको ही म मा ँ गा..."

"अब आगे आप इस काले जादू से कस को मारने वाले हो...?"

"अब िनतीन का नंबर है..."

"अब अभी इसी व आप उसे मारकर बता सकते हो...?" कबीर ने उसका काला जादू और वह दोनो का भी झूठ सिाबत करने के उ े य से पूछा.

"अब नही... उसका व अब जब आएगा तब उसे ज़ र मा ँ गा.." उसने कहा.

उसका यह जवाब सुनकर कबीर को अब फलहाल उसे और सवाल पूछने मे कोई

दलच पी नही रही थी. वे दोनो अमोल को हथकड़ी पहनाने के िलए सामने आ गये. इस बार भी उसने कोई ितकार ना करते ए पूरा सहयोग कया.

कबीर को लग रहा था क या तो यह आदमी पागल होगा या अित चालाक...

ले कन वह जो कहता है वह अगर सच हो तो...?

पल भर के िलए य ना हो कबीर के दमाग़ मे यह िवचार क ध गया...

नही.. ऐसे कैसे हो सकता है...?

कबीर ने अपने दमाग़ मे आया िवचार झटक दया.

कबीर के पा नर पाठक ने अमोल को जैल क एक कोठरी मे बंद कया और बाहर से ताला लगाया. कबीर बाहर ही खड़ा था. जैसे ही कबीर और उसका पा नर वहाँ से जाने के िलए मुड़े, अमोल आवेश मे आकर िच लाया -

"तुम लोग मूख हो... भले ही तुमने मुझे जैल क इस कोठरी बंद कया फर भी मेरा जादू यहाँ से भी काम करेगा..."

कबीर और पाठक क गये और मुड़कर अमोल क तरफ देखने लगे.

कबीर को अमोल पर अब दया आ रही थी..

बेचारा...

बहन का इस तरह से अंत होने से इस तरह झुंझलाना जायज़ है...

कबीर सोचते ए फर से अपने साथी के साथ आगे चलने लगा. थोड़ी दूरी तय करने के बाद फर से मुड़कर उसने अमोल क तरफ देखा. वह अब नीचे झुक कर फशपर माथा रगड़ रहा था और साथ मे कुछ म

बड़बड़ा रहा था.

"इसके उपर यान रखो और इसे कसी भी िविज़टर को िमलने क अनुमित मत दो..."

कबीर ने िनदश दया.

"यस सर..." कबीर का पा नर आ याकारी ढंग से बोला.

िनतीन का घर और आसपास का इलाक़ा पूरी तरह रात के अंधेरे मे डूब गया था. बाहर

आसपास झ गुरा का क रर.... ऐसी आवाज़ और दूर कह कु

के रोने जैसे आवाज़ आ रही

थी. अचानक घर के पास एक पेड पर आसरे के िलए बैठे पंछी डर के मारे फड़फड़ा कर

उड़ने लगे.

दो पोलीस मबज़ टीवी के सामने बैठकर िनतीन के घर मे चल रही सारी हरकत का

िनरी ण कर रहे थे. िनतीन के घर के बगल मे ही एक गे ट म मे उ हे जगह दी गयी थे.

उन दो पोलीस मबज़ के सामने टीवी पर बैचेनी से करवट बदल ता और सोने क किोशश

कर रहा िनतीन दख रहा था.

"इससे अ छा कसी शादीशुदा जोड़े क टीवी पर िनगरानी करना मैने कभी भी पसंद

कया होता..." उनमे से एक पोलीसवाले ने मज़ाक मे कहा.

और दूसरे पोलीस वाले को उसके मज़ाक मे िब कुल दलच पी नही दख रही थी.

तभी अचानक एक मॉनीटौर पर कुछ हरकत दखाई दी. एक काली िब ली बेड म मे

दौड़ते ए इधर से उधर गयी थी.

"आए देख वहाँ िनतीन के बेड म मे एक काली िब ली है..." एक ने कहा.

"यहाँ या हम कु े िबि लय के हरकत पर नज़र रखने के िलए बैठे है...? मेरे बाप को

अगर पता होता क एक दन म ऐसे मॉिनटूर पर कु े िबि लय क हरकत पर नज़र रखे

बैठने वाला ँ... तो वह मुझे कभी पोलीस मे नही जाने देता..." एक पोलीस ऑफ सर ने

ताना मारते ए कहा.

अचानक उस िब ली ने कोने मे रखे एक चोरस िड बेपार छलाँग लगाई... और इधर इन

दोनो के सामने रखे ए सारे मॉनीटौस लक हो गये.

"ए या आ...?" एक ऑफ सर कुस से उठकर खड़ा होते ए बोला.

उसका दूसरा साथी भी कुस से उठकर खड़ा हो गया था.

दोनो का मज़ाक करना कब का ख़ म हो चुका था. उनके चेहरे पर अब चंता और

हड़बड़ाहट दख रही थी.

"चल ज दी... या गड़बड़ी ई यह देख के आते है..." दोनो ज दी ज दी कमरे से बाहर
िनकले...

बेड म मे धुंधली रोशनी फैली ई थी और बेड पर कोई साया सोया आ दखाई दे रहा
था. अचानक बेड के बगल मे रखा टिलफोन लगातार बजने लगा. उस बेड पर सोए साए ने
न द मे ही अपना हाथ बढ़ाकर वह टिलफोन उठाया.

"येस..." वह साया कोई और नही कबीर था.

उधर से उस पोलीस ऑफ सर क आवाज़ आई, "सर िनतीन का भी उसी तरह से क ल हो
चुका है..."

" या...?" कबीर एकदम से बेड से उठकर बैठ गया.

उसने बेड के बगल मे एक बटन दबाकर बेड म का ब ब जलाया. उसक न द पूरी तरह से
उड़ चुक थी... लाइट जलते ही बगल मे लेटी हाना भी जाग गयी थी.... और कबीर या
बोल रहा है सुन रही थी..

" या कहा...?" कबीर को वह जो सुन रहा था उसपर िव ास नही हो रहा था.

"सर िनतीन का भी क ल हो चुका है..."

"इतने कॅमरा लगाकर मॉनटर पर लगाकर तुम लोग लगातार िनगरानी कर रहे थे... तब
भी...? तुम लोग वहाँ िनगरानी कर रहे थे या झक मार रहे थे...?" कबीर ने िचढ़कर कहा.

"सर वह या आ... एक िब ली ने ांस मीटर के उपर छलाँग लगाई और सारे मॉनीटौर
एकदम से बंद हो गये... तो भी हम रपेर करने के िलए वहाँ गये थे... और वहाँ जाकर देखा
तो तब तक क ल हो चुका था..." ऑफ सर अपनी तरफ से सफाई देने का यास कर रहा
था.

जैसे ही ऑफ स का फोन आया, तै यार करके कबीर हाना को एक कस करके तुरंत
िनतीन के घर क तरफ रवाना आ.

इतना फुल ूफ इतजाम होने के बाद भी िनतीन का क ल होता है... इसका मतलब या...?
पहले ही पोलीस क इमेज लोग मे काफ़ खराब हो चुक थी...

और इसबार पूरा ि व ास था क क़ातल अब इस कॅमरा के जाल से छूटना नामुम कन है...

फर कहाँ गड़बड़ ई...?

गाड़ी पीड से चलते ए कबीर के ि वचार भी तेज़ी से दौड़ रहे थे.

कबीर ने बेड म मे वेश कया. बेड म मे ि नतीन क डेड बॉडी उसी हाल मे बेड पर पड़ी ई थी. सब तरफ खून ही खून फैला आ दख रहा था. कबीर ने बॉडी क ाथिमक झांच क और फर कमरे क झांच क . वो दोनो पोलीस ऑफ सर भी वह थे. पोलीस क इ वि टफेशन टीम जो वहाँ अभी अभी प ँच गयी थी, अपने काम मे त थी.

"ि मल रहा है कुछ...?" कबीर ने उ हे पूछा.

"नही सर... अब तक तो कुछ नही..." कबीर का एक पा नर उनक तरफ से बोला.

कबीर ने बेड म मे आराम से चलते ए और सबकुछ यानपूवक ि नहाराते ए एक च र मारा. च र मारने के बाद कबीर फर से बेडके पास आकर खड़ा हो गया और उसने बेड के नीच झुक कर देखा.

बेड के नीचे से दो चमकती ई आँख उसक तरफ घुरकर देख रही थी. एक पल के ि लए य ना हो कबीर डर कर थोड़ा पीछे हट गया. वे चमकती ई आँख फर धीरे धीरे उसक दशा मे आने लगी और अचानक हमला कया जैसे उसपर झपट पड़ी. वह झट से वहाँ से हट गया. उसे एक गले मे प ा पहनी ई काली ि ब ली बेड के नीचे से बाहर आकर दरवाज़े से बेड म के बाहर दौड़ कर जाते ए दखाई दी. दरवाज़े से बाहर जाते ही वह ि ब ली एकदम क गयी और उसने मुड़कर पीछे देखा. कमरे मे एक अजीब सा स ाटा छा गया था. उस ि ब ली ने एक दो पल कबीर क तरफ देखा और फर से मुड़कर वह वहाँ से भाग गयी. दो तीन पल कुछ भी ना बोलते ए गुजर गये.

"यही वह ि ब ली है... सर..." एक ऑफ सर ने कमरे मे स ाटे को भंग कया.

" ॅ सिमशन बॉ स कधर है....?" ि ब ली से कबीर को याद आ गया.

"सर यहाँ..." एक ऑफ सर ने एक जगह कोने मे इशारा करते ए कहा.

वह बॉ स नीचे ज़मीन पर िगरा आ था. कबीर नज़दीक गया और उसने वह बॉ स उठाया. वह टूटा आ था. कबीर ने वह बॉ स उलट पुलट कर गौर से देखा और वापस जहाँ से उठाया था वह रख दया. तभी बेड म के दरवाज़े क तरफ कबीर का यूँही ख़याल गया. हमेशा क तरह दरवाज़ा तोड़ा आ था. ले कन इसबार अंदर के कु डी को चैन लगाकर ताला लगाया आ था.

"पाठक... ज़रा इधर तो आओ..." कबीर ने पाठक को बुलाया.

पाठक ज दी से कबीर के पास चला गया.

"यह इधर देखो.. और अब बोलो तु हारी थेऔरी या कहती है.. क ल करने के बाद दरवाज़ा बंद कर अंदर से चैन लगाकर ताला कैसे लगाया होगा...?" कबीर ने उस कु डी को लगाए चैन और ताले क ओर उसका यान ख चते ए कहा.

पाठक ने उस चैन और ताला लगाए कु डी क तरफ यान से देखते ए कहा, "सर.. अब तो मुझे प ा ि व ास होने लगा है..."

" कस बात का...?"

" क क़ितल कोई आदमी ना होकर कोई हानी ताक़त हो सकती है..." पाठक पागल क तरह कह शु य मे देखते ए बोला.

सब लोग ग़ूढ भाव से एक दूसरे क तरफ देखने लगे.

कबीर पोलीस टेशन मे बैठकर एक एक बात के उपर गौर से सोच रहा था और अपने पा नर के साथ बीच बीच मे चचा कर रहा था.

"एक बात तु हारे ख़याल मे आ गई या...?" कबीर ने शु य मे देखते ए अपने पा नर से पूछा.

"कौन सी ...?" उसके पा नर ने पूछा.

"अबतक तीन क ल ए है.... बराबर...?"

"हाँ.... तो...?"

"तीनो क ल के पहले अमोल को यह अ छी तरह से पता था क अगला क ल कसका

होनेवाला है..." कबीर ने कहा.

"हाँ बराबर..."

"और तीसरे क ल के व तो अमोल क टडी मे बंद था..." कबीर ने कहा...

"हाँ बराबर है..." पा नर ने कहा...

"इसका मतलब या...?" कबीर ने मानो खुद से सवाल पूछा हो..

"इसका मतलब सॉफ है क उसका काला जादू जैल के अंदर से भी काम कर रहा है..."

पा नर मानो उसे एकदम सही जवाब िमला इस खुशी से बोला...

"बेवकूफ़ क तरह कुछ भी मत बको..." कबीर उसपर गु से से िच लाया.

"ऐसी बात बोलो क वह कसी भी तकसंगत बिु को हजम हो..."कबीर अपना गु सा

काबू मे रखने क कोिशश करते ए उससे आगे बोला...

बहरहाल कबीर के पा नर का खुशी से दमकता चेहरा मुरझा गया.

काफ़ समय िबना कुछ बात कए शांित से बीत गया.

कबीर ने आगे कहा, "सुनो, जब हम अमोल के घर गये थे तब एक बात हमने बड़ी प से

गौर क ..."

"कौन सी...?"

" क अमोल के मकान मे इतनी िखड़ कयाँ थी क उसके पड़ोस मे कसी को भी उसके घर

मे या चल रहा है यह प प से दख और सुनाई दे सकता है.."कबीर ने कहा..

"हाँ बराबर..." उसका पा नर कुछ ना समझते ए बोला...

अचानक एक िवचार कबीर के दमाग़ मे क ध गया. वह एकदम उठकर खड़ा हो गया.

उसके चेहरे पर गु थी सुलझाने का आनंद झलक रहा था.

उसका पा नर भी कुछ ना समझते ए उसके साथ खड़ा हो गया.

"चलो ज दी..."कबीर ज दी ज दी दरवाज़े क तरफ जाते ए बोला...

उसका पा नर कुछ ना समझते ए िसफ़ उसके पीछे पीछे जाने लगा...

एक दम ेक लगे जैसे कबीर दरवाज़े मे क गया.

"अ छा तुम एक काम करो... अपने टीम को पेशल िमशन के िलए तै यार रहनेके िलए बोल दो..." कबीर ने अपने पा नर को आदेश दया.

उसका पा नर पूरी तरह गड़बड़ा गया था. उसके बॉस को अचानक या आ यह उसके समझ के परे था....

पेशल िमशन...?

मतलब कह क़ातल िमला तो नही...?

ले कन उनक जो अभी अभी चचा ई थी उसका और क़ातल िमलने का दूर दूर तक कोई वा ता नही दख रहा था...

फर पेशल िमशन कस िलए..?

कबीर का पा नर सोचने लगा. वह कबीर को कुछ पूछने ही वाला था इतने मे कबीर दरवाज़े के बाहर जाते जाते फर से क गया और पीछे मुड़कर बोला,

"चलो ज दी करो..."

उसका पा नर तुरंत हरकत मे आगया.

जाने दो मुझे या करना है...?

पेशल िमशन तो पेशल िमशन...

कबीर के पा नर ने पहले टेबल से फोन उठाया और एक नंबर डाइयल करने लगा.

पोलीस क गाड़ी ॅ फक मे रा ता िनकालते ए साइरन बजाते ए तेज़ी से दौड़ रही थी और उस गाड़ी के पीछे और चार पाँच गिड़य का झुंड जा रहा था. साइरन के आवाज़ क वजह से ॅ फक अपने आप हटकर उन गिड़य को रा ता दे रही थी. उस आवाज़ के वजह से और इतना बड़ा पोलीस क गिड़य का झुंड देख कर आसपास के वातावरण मे एक अलग ही उ सुकता और डर फैल गया था. ॅ फक से रा ता िनकालते ए और रा ते से तेडे मेडे मोड़ लेते ए आख़र वो गिड़याँ अमोल के घर के आस पास आकर क गयी. गिड़य से पोलीस क एक बड़ी टीम तेज़ी से ले कन एक अनुशासन के साथ बाहर िनकल गयी.

"चलो ज दी... पूरे ए रया को घेर लो...

क... क़ितल कसी भी हाल मे अपने हाथ से

िनकलना नही चिाहए..." कबीर ने अपने टीम को आदेश दया.

पोलीस का वह समूह एक एक करते ए बराबर अनुशासन मे पूरी ए रया मे फैल गया और उ होने पूरे ए रया को चारो तरफ से घेर िलया. इतने बड़े पोलीस के समुहके जूत क आवाज़ से पूरे ए रया मे वातावरण तनाव पूण आ था. अडोस पड़ोस के लोग कोई िखड़क से तो कोई पद के पीछे से झाँककर बाहर या चल रहा है यह डर से देख रहे थे.

दो तीन पोलीस वालो को लेकर कबीर एक घर के पास गया. िजस आदमीने पहले अमोल क कहानी बयान क थी वह सकते क ि थित मे वह खड़ा था.

"ज़रा बताइए तो कौन कौन से घर से अमोल के घर क सारी हरकते दखती है और सुनाई देती है..." कबीर ने उस आदमीसे पूछा.

उस आदमीने कबीर को दो-तीन मकान क तरफ उंगली से इशारा करते ए कहा,

"वे दो... और मेरा एक तीसरा..."

"हमे यह ए रया पूरी तरह से सील करना पड़ेगा..." कबीर अपने टीम को उन मकान क तरफ ले जाते ए बोला.

कबीर ने उन तीन घर के आलवा और दो-चार मकान अपने काय े मे िलए. एक के बाद एक ऐसे वह हर घर क तरफ अपने दो-तीन लाग को ले जाता और घर अगर बंद हो तो उसे नॉक करता था. कुछ लोग जब दरवाज़ा खोलकर बाहर आते थे तो उनके चेहरे पर आ य और डर के भाव दखाई देते थे. बीच - बीच मे कबीर अपने सिाथयो को वाइयरलेस पर द रहने के िलए कहता था. ऐसे एक एक घर क तलाशी लेते ए वे आिख़र एक मकान के पास प ँच गये. दरवाज़ा नॉक कया. काफ़ देर तक कने के बाद अंदर से कोई ि त

या दख नही रही थी. कबीर के साथ मे जो थे वे सब लोग अलट हो

गये. अपनी अपनी गन लेकर तै यार हो गये. फर से उसने दरवाज़ा नॉक कया, इसबार ज़रा ज़ोर से.. फर भी अंदर से कोई ि त

या नही आई...

ले कन अब कबीर का स जवाब दे गया,

"दरवाज़ा तोडो..." उसने आदेश दया.

पाठक जो ऐसे कारनाम मे तरबेज़ था, हमेश दरवाज़ा तोड़ने मे आगे रहता था, उसने और और दो चार लोग ने िमलकर ध े दे-देकर दरवाज़ा तोड़ दया. दरवाज़ा टूटने के बाद खबरदारी के तौर पर पहले सब लोग पीछे हट गये अब फर धीरे धीरे सतकता के साथ अंदर जाने लगे.

लगभग सारा घर ढूँढ िलया. ले कन घर मे कोई होने के कोई आसार नही दख रहे थे. कचन, हॉल खाली पड़े थे. आिख़र उ होने बेड म क तरह उनका ख़ कया. बेड म का दरवाज़ा पूरी तरह खुला पड़ा था. उ होने अंदर झाँककर देखा. अंदर कोई नही था, िसफ़ एक टेबल एक कोने मे पड़ा आ था.

जैसे ही कबीर और उसके साथ एक दो पोलीस बेड म मे गये वे आ य के साथ आँख फाड़ कर देखते ही रह गये. उनका मुँह खुला का खुला ही रह गया. बेड म मे एक कोने मे रखे उस टेबल पर माँस के टुकड़े और खून फैला आ था. सब लोग एक दूसरे क तरफ आ य और डर से देखने लगे. सब के दमाग़ मे एक साथ ना जाने कतने सवाल उमड़ पड़े थे.

ले कन कसी क एकदुसरे को भी पूछने क िह मत नही बन पा रही थी. कबीर ने बेड म क िखड़क क तरफ देखा. िखड़क पूरी तरह खुली थी..

"यहाँ कौन रहता है...? मालूम करो..."कबीर ने आदेश दया.

उनमे से एक पोलीस बाहर गया और थोड़ी देर बाद जानकारी इक ा कर वापस आ गया.

"सर मैने इस मकान मिालक से अभी अभी संपक कया था.. वह थोड़ी ही देर मे यहाँ प चेगा.. ले कन लोग क जानकारी के िहसाब से यहा कोई रमेश नाम का आदमी कराए से रहता है..."वह पोलीस बोला.

"वह आए बराबर उसे पहले मुझ से िमलने के िलए कह दो... फ़ौरिसक लोग को बुलाओ.. और इस अपाटमट मे जब तक सारे सबूत इक ा कए नही जाते तब तक और कोई भी ना

आ पाए इसका ख़याल रखो..." कबीर ने िनदश दए..

थोड़ी देर मे बाहर जमा ई लोग क भीड़ मे मकान मिालक आगया और मकान मिालक आया... मकान मिालक आया ऐसी खुसुर फुसुर शु हो गयी.

"कौन है मकान मिालक...?" कबीर ने उस भीड़क तरफ जाते ए पूछा.

एक अधेड़ उ आदमी सामने आकर डरते ए दबे ए वर मे बोला, "म ँ..."

"तो आपके पास इस आपके करायेदार का अतापता वगैरे सारी जानकारी होगी ही...?" कबीर ने उससे पूछा...

"हाँ है..." मकान मिालक एक कागज का टुकड़ा कबीर को थमाते ए बोला.

कबीर ने वह काग़ज़ का टुकड़ा िलया. उसपर रमेश का अ ेस, फोन जैसी सारी जानकारी मकान मिालक ने िलख कर दी थी.

"ले कन यह सब देखते ए यह जानकारी जाली और झु ट होगी ऐसा लगता है..." मकान मिालक डरते ए बोला...

"मतलब...? आपने उसक सारी जानकारी जाँच कर नही देखी थी...?" कबीर ने पूछा.

"नही... मतलब.. वह म करने ही वाला था..." मकान मिालक फर से डरते ए बोला...

इं पे टर कबीर ने अपने बज रहे मोबाइल का िडस ले देखा. फोन उसके ही पा नर का था. एक बटन दबाकर उसने वह अटड कया,

"यस..."

"सर हमे पायल का दो त मोिहत का पता चल चुका है..." उधर से उसके पा नर का आवाज़ आई.

"गुड वेरी गुड..." कबीर खुशी होकर बोला.

कबीर के पा नर ने उसे एक अ ेस दया और तुरंत उधर आने के िलए कहा.

.... मोिहत बेड पर पड़ा आ था और ज़ोर ज़ोर से खांस रहा था. उसक दाढ़ी बढ़ चुक थी और सर के बढ़े ए बाल भी िबखरे ए दख रहे थे. ना जाने कतने दनो से वह बेड पर इसी हाल मे पड़ा आ था. उसका घर से बाहर आना जाना भी बंद हो चुका था.

जब उसक ि य पायल का बला कार और क ल हो गया था तब वह इतना िनराश और हतबल हो चुका था क उसे आगे या करे कुछ सूझ नही रहा था. उन गुनहगार को सज़ा हो ऐसा उसे तहे दल से लग रहा था. ले कन कैसे वह कुछ समझ नही पा रहा था. ऐसे मायूस और हतबल अव था मे वह शहर मे रात के अंधेरे मे पागल क तरफ िसफ़ घूमता रहता तो कभी शाम को बीच पर जाकर डूबते सूरज को लगातार िनहारती रहता. शायद उसे अपनी खुद क जंदगी भी कुछ उस डूबते सूरज क तरह लगती हो. दन रात पागल क तरह इधर उधर भटकना और फर थकने के बाद बार मे जाकर म दरा मे डूब जाना. ऐसे उसक दनचया रहती थी. ले कन ऐसा कतने दन तक चलनेवाला था. आगे आगे तो उसका घूमना फरना भी कम होकर पीना बढ़ गया. इतना बढ़ गया क अब उसक तबीयत खराब होकर वह ना जाने कतने दन से बेड पर पड़ा आ था. ि ब तर पर पड़ी अव था मे भी उसका पीना जारी था. थोड़ी भी नशा उतर जाता तो उसे वह भयानक बला कार और क ल का

य याद आता था और वह फर से पीने लगता था.

अचानक उसे फर से खाँसी का दौर पड़ गया. वह उठने का यास करने लगा. ले कन वह इतना ीण और कमजोर हो गया था क वह उठ भी नही पा रहा था. कैसे तो दीवार का सहारा लेकर वह बेड से उठ खड़ा आ. ले कन अपना संतुलन खोकर नीचे ज़मीन पर ि गर गया. उसका खांस ना लगातार शु था. खाँसते खाँसते उसे एक बड़ा दौरा पड़ गया और उसके मुँह से खून आने लगा. उसने मुँह को हाथ लगाकर देखा. खून दखते ही वह घबरा गया.

उठकर डॉ टर के पास जाना चिाहए....

ले कन वह उठ भी नही पा रहा था....

ि च लाकर लोग को जमा करना चिाहए...

ले कन उसमे उतनी ि च लाने क भी शि बाक नही थी...

या कया मिोहत...?

आख़र उसने एक िनणय मन ही मन प ा कया और वह उसके हाथ मे लगे खून से फशपर कुछ िलखने लगा...

एक आदमी फोन पर बोल रहा था, "हेलो पोलीस टेशन...?"

उधर से जवाब आने के िलए वह बीच मे क गया.

"साहब... हमारे पड़ोस मे कोई एक आदमी रहता है... मतलब रहता था.. उसे हमने लगभग 7-8 दन से देखा नही... उसका दरवाज़ा भी अंदर से बंद है.. हमने उसका दरवाज़ा नॉक करके भी देखा... ले कन अंदर से कोई ित
या नही है... उसके घर से लगातार
कसी चीज़ के सड़ने क दुगध आ रही है.. मुझे लगता है आप लोग मे से कोई यहाँ आकर देखे तो अ छा होगा..."

फर से वह उधर के जवाब के िलए का और "थक यू... " कहकर उसने फोन नीचे रख दया.

पोलीस क एक टीम इं पे टर राणे के ने ृ व मे उस आदमी ने फोनेपर दए पते पर ब त ज दी प ँच गये. वह आदमी उनक राह ही देख रहा था. वे वहाँ प ँचते ही वह आदमी उनको एक लॅट के बंद दरवाजे के सामने ले गया. वहाँ प ँचते ही एक कसी सड़ी ए चीज़ क दुगध उनके नाक मे घुस गयी. उ होने तुरंत माल िनकालकर अपनी अपनी नाक को ढँक िलया. उ होने उस दुगध के ोत को कड़ने क कोिशश क तो वह दुगध उस घर से ही आ रही थी. उ होने दरवाज़ा धकेल कर देखा. दरवाज़ा शायद अंदर से बंद था. उ होने दरवाज़े को नॉक कर देखा. अंदर से कोई ित
या नही थी. िजस आदमी ने फोन पर
पोलीस को इ ला कया था वह बार बार वही हक़ कत उ हे सुना रहा था. आख़र पोलीस ने दरवाज़ा तोड़ दया. दरवाज़ा तोड़ने के बाद तो वह सड़ी ई दुगध और ही ती ता से आने लगी. मुँह पर और नाक पर कस कर माल लगाकर वे धीरे धीरे अंदर जाने लगे.

पोलीस क टीम जब बेड म मे प ँच गयी तब उ हे सड़ने क

या शु ए मिोहत का

मृत शरीर ज़मीन पर पड़ा आ िमला. नाक को माल से कसकर ढँकते ए वे उस डेड बॉडी के पास गये. वहाँ ज़मीन पर मरने के पहले उसके खून से कुछ िलखा आ दखाई दे रहा था. उनमे से एक पोलीस ने वह नज़दीक जाकर पढ़ा,

"पायल... मुझे माफ़ कर देना.. म तु हे बचा नही पाया... ले कन चंता मत करो... उन बदमाश का... एक एक करके बदला िलए िबना मुझे शांित नही िमलेगी.."

कबीर और उसका पा नर िजस पोलीस अिधकारी ने मिोहत क मौत का केस हडल कया था उस अिधकारी, इं पे टर राणे के सामने बैठे थे.

इं पे टर राणे मिोहत के बारे मे जानकारी देने लगा, "म दरा के यादा सेवन क वजह से उसे ोकई टज़ होकर वह मर गया..."

"ले कन आपको उसक पहचान कैसे िमली...?" कबीर ने पूछा.

"िजस कमरे मे उसका मृत शरीर िमला उस कमरे कुछ उसके कागजात भी िमले... उससे हमे उसक पहचान हो गयी... और उसका एक फोटो इं पे टर मंजीत संह ने जैसे सारे पोलीस थानोपर भेजा था वैसा हमारे पास भी भेजा था..."

राणे ने अपने ॉयर से मिोहत का फोटो िनकाल कर कबीर के सामने रखा.

"इस फोटो क वजह से और इं पे टर मंजीत संह ने भेजी जानकारी के वजह से हमे उसका अ ेस और घर वगैरे िमलने मे मदद हो गयी..." राणे ने कहा.

"आपने उसके घर के लोगो से संपक कया था या...?" कबीर ने पूछा...

"हाँ... उनके घर के लोगो को भी यहाँ बुलाया था... उ होने भी बॉडी अपने क ज़े मे लेने से पहले मिोहत क पहचान कर ली थी और पो टमाटम मे भी उसक पहचान मिोहत ऐसी ही तय क गयी है..." राणे ने कहा.

"वह कब मरा होगा... मतलब शव िमलने से कतने दन पहले..." कबीर ने पूछा.

"पो टमाटम के अनुसार माच महीने के शु आत के दो तीन दन मे उसक मौत ई होगी..." वह अिधकारी बोला...

"अल ...माच... मतलब पहला खून होने के ब त पहले..." कबीर ने सोचकर कहा.

"इसका मतलब हम जैसे समझ रहे थे वैसे वह क़ितल नही है..."कबीर ने आगे कहा.

"हाँ वैसा लग तो रहा है..." राणे ने कहा.

काफ़ समय शांित से गुजर गया.

मतलब मुझे जो शक था वह सच होने जा रहा है...

कबीर को पायल का दो त मोिहत का अता पता िमलने क खबर उसके पा नर से फोनेपर िमलते ही वह ब त खुश हो गया था...

उसे लगा था चलो एक बार क बला तो टली... जो केस सॉ व हो गया... और क़ितल थोड़ी ही देर मे उनके क ज़े मे आनेवाला है...

ले कन यहाँ आकर देखता ँ तो केस ने और एक अलग ही मोड़ िलया था...

मोिहत के मरने का समय देखा जाय तो उसका इन खुनो से संभंध होने क कोई गुंजाइश नही थी...

"मोिहत अगर क़ितल नही है.. तो फर क़ितल कौन होगा...?"कबीर ने जैसे ही खुद से ही सवाल कया.

कमरे क तीनो लोग िसफ़ एक दूसरे क तरफ देखने लगे.... य क उस सवाल का जवाब उन तीनो के पास नही था.

इतने मे राणे ने उसके ॉयर से और एक त वीर िनकाल कर कबीर के सामने रख दी.

कबीर ने वह त वीर उठाई और वह उस त वीर क तरफ एकटक देखने लगा. उस त वीर मे मोिहत ज़मीन पर पड़ा आ दख रहा था और उसके सामने फशपर खून से बड़े अ र मे िलखा आ था,

"पायल मुझे माफ़ करना... म तु हे बचा नही सका... ले कन चंता मत करो म एक एक को चुनकर मारकर बदला लूँगा..."

कबीर को एक अंदाज़ा हो गया था क यह त वीर दखा कर राणे उसे या कहना चाहता है...

"म सुन सुनकर थक गया ँ क इस क़ ल मे कसी आदमी का हाथ ना होकर कसी हानी ताक़त का हाथ हो सकता है.. यह त वीर दखा कर कह तु हे भी तो यही कहना नही है...?" कबीर ने राणे को पूछा.

राणे ने कबीर और उसके पा नर के चेहरे क तरफ देखा.

"नही मुझे ऐसा कुछ कहना नही है... िसफ़ घट रही घटनाए और मोिहत का फशपर िलखा आ मेसेज दोनो कैसे एकदम िमलते जुलते है... इसी ओर मुझे तु हारा यान ख चना है..."राणे ने श दो को तोलमो कर इ तेमाल करते ए कहा.

भाग - 7

जैल मे चारो और अंधेरा फैला आ था. अमोल एक कोठरी मे गु सुम सा कसी सोच मे डूबा आ एक कोने मे बैठा आ था. अचानक वह उठ खड़ा आ और अपने पहने ए कपड़े पागल क तरह फाड़ने लगा. कपड़े फाड़ने के बाद उसने कोठरी मे इधर उधर पड़े फटे कपड़ेके टुकड़े जमा कए. उस टुकड़ का वह फर से एक गु ा बनाने लगा. गु ा तै यार होने के बाद उसके चेहरे पर एक रह य भरी, डरावनी हँसी फैल गयी.

“िम टर. सुलेमान... अब तु हारी बारी है... समझे..” वह पागलो क तरह उस गु े से बोलने लगा.

वहाँ

ूटी पर तैनात पोलीस वाला काफ़ समय से अमोल क हकतो पर बराबर नज़र रखे ए था. जैसे ही उसने अमोल क बातचीत सुनी वह तेज़ी से उठकर फोन के पास गया – अपने व र अिधकारी को इ ला करने के िलए..

सुलेमान अपने घर मे, हॉल मे पीते ए बैठा था. साथ ही वह चेहरे पर काफ़ सारी चंताए लेकर एक के बाद एक लगातार िसगरेट िपए जा रहा था. थोड़ी देर से वह उठ खड़ा आ और सोचते ए कमरे मे धीरे धीरे चहल कदमी करने लगा. उसक चाल से वह काफ़ थका आ मालूम पड़ रहा था, या फर म दरा के चढ़े ए नशे से वह वैसा लग रहा होगा. थोड़ी देर चहल कदमी करने के बाद वह फर से कुरसीपर बैठ गया और अपनीही सोच मे डूब

गया. अचानक उसे घर मे कसी क उपि थित का एहसास आ. कोई कचन मे बतनोसे छेड़खानी कर रहा हो ऐसा लग रहा था.

कचन मे इस व कौन होगा...?

सब दरवाज़े िखड़ कयाँ तो बंद है...

या यह भी कोई आभास है...?

अचानक एक बड़ा बतन फशपर िगरने क आवाज़ आई. सुलेमान एकदम उठकर खड़ा हो गया.

या आ होगा...?

उसका दल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा.

म फालतू ही घबरा रहा ँ... कोई ि ब ली वगैरे होगी...

उसने खुद को समझाने क किोषश क और धीरे धीरे चलते ए, कोई आहट आती है या यह सुनते ए, वह कचन मे जाने लगा.

कचन से अब आवाज़े आना बंद आ था. कुछ आहट भी नही थी. वह कचन के दरवाजे के पास गया और धीरे से कचन का दरवाज़ा ितरछा करते ए उसने अंदर झाँककर देखा.

कचन मे तो कोई नही दख रहा है.

वह कचन मे घुस गया. अंदर जाने के बाद उसने इधर उधर नज़र दौड़ा कर देखा, पूरे कचन का एक राउंड लगाया..

कह ...? कुछ तो नही...

या मुझे िसफ़ आभास हो रहे है...

ले कन ज़मीन पर एक खाली बतन पड़ा आ था.

वह म क ि थित मे कचन से वापस जाने के िलए मुडाही था क उसे अब हॉल से कुछ टूटने क आवाज़ आ गयी. सुलेमान च क गया और दौड़ते ए हॉल मे चला गया.

हॉल मे उसे उसका ि ह क का लास नीचे ज़मीन पर िगरकर टूटा आ िमला. ि ह क नीचे िगर कर इधर उधर फैली ई थी. उसने आसपास नज़र दौड़ाई. कोई नही था.

सुलेमान का नशा पूरी तरह उतर चुका था.

साला कोई तो नही...

यह या हो रहा है मुझे...?

लास नीचे कैसे िगर गया...

वह सोचते ए फर से कुरसी पर बैठ गया... अब उसने पूरी क पूरी बॉटल ही मुँह को लगाई थी.

कबीर सुबह सुबह हॉल मे बैठकर चाय पीते ए टीवी देख रहा था. एक एक घूँट धीरे धीरे पीते ए मानो वह चाय का आनंद ले रहा हो. देखने के िलए तो वह टीवी क तरफ देख रहा था ले कन उसके दमाग़ मे कुछ अलग ही िवचार का तूफान मचा आ था. शायद वह उस क़ितल के केस के बारे मे ही सोच रहा होगा. जैसे जैसे उसके िवचार दौड़ रहे थे वैसे वैसे वह रमोट के बटन बदल कर तेज़ी से चॅने स बदल रहा था. आख़र वह काटून चॅनेल पर आकर का. थोड़ी देर काटून चॅनेल देखकर शायद उसने खुदको लगर टे ष स, चंता इससे हटाकर फर से ताज़ा कया हो. फर से उसने चॅनेल बदला और अब वह िड कवरी चॅनेल देखने लगा. शायद िड कवरी पर चल रहे ो ाम मे उसे इंटेरे ट आने लगा था. उसने रमोट अपने हाथ से बगल मे रख दया और वह ो ाम बड़े यान देकर देखने लगा. िड कवरी चॅनेल पर चल रहे ो ाम मे एक चूहा दखाया जाने लगा. उस चूहे के गले मे एक छोटा प ा दख रहा था. और िसर पर एकदम छोटे छोटे वाइस लगाए दख रहे थे.

फर टीवी आंकर बोलने लगा –

“जब कोई जीवजंतु कोई

या करता है उसे वह

या करनेके िलए उसके दमाग़ को एक

िस ल जाता है. अगर हम एकदम वैसाही िस ल उसके दमाग़ को बाहर से देने मे कामयाब हो गये तो हम उस जीवजंतु को अपने क ज़े मे कर सकते है और उसे बाहर से सब

िस

स देकर उससे हमे जो चिाहए वह

या करवा के ले सकते है..”

फर टीवी पर एक कं यूटर दखने लगा, कं यूटर के सामने एक साइं ट ट बैठा आ था.

कबीर टीवी पर चल रहा ो ाम एकदम यान लगाकर देखने लगा.

वह कं यूटर के सामने बैठा साइं ट ट बोलने लगा –

“इस कं यूटर के ारा हम अलग अलग िस

स इस िचपपर, जो क इस चूहे के गले मे लगे

प े मे बँधी ई है, उसपर ॅनि मट कर सकते है, इस िचप के ारा यह संगल चूहे के

दमाग़ तक प चगे, और फर जो जो िस

स हम उसे इस कं यूटर के ारा दगे उसके

िहसाब से वह चूहा अलग अलग काय करने लगेगा...”

फर टीवी पर वह चूहा एकदम नज़दीक से दखाया गया. एक छोटी से िचप उसके गले मे

प ा बाँध कर उसमे लगाई गयी थी.

कबीर टीवी पर चल रहा ो ाम देख रहा था. उसके चेहरे पर आ य के भाव दख रहे थे.

टीवी पर वह साइं ट ट आगे बोलने लगा –

“इस कार हम अलग अलग तरह के आदेश इस िस ल ॅ सिमशन के ारा उस चूहे को दे

सकते है. अब फलहाल हम कुछ दो चार आदेश ही उसे देने मे कामयाब ए है...”

फर कं यूटर के मॉनीटौर पर चल रहे सॉ टवेर मे उस साइं ट ट ने माउस क सहायता से

‘राइट’ बटन दबाया और या आ य वह चूहा राइट क तरफ मुड़कर दौड़ने लगा.

कं यूटर पर उस साइं ट ट ने ‘ टॉप’ यह बटन दबाया और वह चूहा एकदम दौड़ते ए क

गया.

फर उसने ‘ले ट’ बटन दबाया और वह चूहा बाई तरफ मुड़कर दौड़ने लगा.

आगे उसने ‘जंप’ यह बटन दबाया और उस चूहे ने दौड़ते ए छलाँग लगाई.

फर से ‘ टॉप’ बटन दबाया और वह चूहा एक खाने के जंनस के सामने प ँच गया था

वही क गया.

साइं ट ट ने 'ईट' बटन दबाया और वह चूहा उसके सामने रखा आ खाने का जंनस खाने लगा.

फर से उसने ' टॉप' बटन दबाया और उस चूहेने खाना बंद कया.

अब साइं ट ट ने 'अटॅक' बटन दबाया और वह चूहा उसके सामने रखे ए खाने के जंनस ना खाते ए उसके तोड़ तोड़कर टुकड़े करने लगा.

यह सब देखते ए अचानक कबीर के दमाग़ मे एक िवचार क ध गया.

उसे एक एक घटना याद आने लगी...

... दो पोलीस मबर क टीम िनतीन के घर क स यूट टीवी पर जब िनगरानी कर रहे थे तब एक िब ली ने स यूट ॅनि मट यिूनट पर छलाँग लगाई थी और उसक वजह से िनतीन के बेड म क सब हरकते टीवी पर दखना बंद आ था. और जब तक वो दोनो बेड म मे प ँचते नही तब तक क़ ल हो चु ा था.

कबीर अपनी सोच मे डूबा आ टीवी के सामने से उठ गया. उसे अगला संग याद आने लगा....

... जब कबीर और उसक टीम छानबीन के िलए िनतीन के बेड म मे गये थे और छानबीन करते व सामने बेड के नीचे झुक कर देखा था. तब उसे बेड के नीचे दो चमकती ई आँख दखाई दी थी.

जब वह आँखो ने धीरे धीरे उसक तरफ आकर अचानक हमला कया जैसे उसपर झपट पड़ी थी, उसने झट से वहाँ से हटकर अपना बचाव कया था और बाद मे देखा तो गले मे काला प ा पहनी ई काली िब ली बेड के नीचे से बाहर आकर दरवाजे से बेड म के बाहर दौड़कर जाते ए दखाई दी थी.

अब कबीर के दमाग़ मे एक एक गु थी एकदम सॉफ सुलझ रही थी.

अब मुझे समय गँवाना नही चिाहए...

मुझे जो कुछ भी करना है ज दी करना चिाहए...

सोचते ए कबीर अगली कायवाही के िलए तेज़ी से घर के बाहर िनकल पड़ा.

कबीर का फरे स म मे पोिडयम पर डे क के पीछे खड़ा था, उसके सामने सुलेमान, दूसरे पोलीस अिधकारी और उसका पा नर बैठा आ था.

“अब मुझे पता चल चु ा है क क़ातल सारे क़ ल कैसे करता होगा...” कबीर ने एक ि थित िलया और चारो तरफ अपनी नज़र दौड़ाते ए वह बोलने लगा –

“इसिलए मैने एक लान बनाया है.. िजससे हमे क़ातल को तो पकड़ना है ही साथ ही हमे क़ातल का अगला िशकार सुलेमान का र ण करना है.. अब इस लान से मुझे नही लगता है क इस बार भी क़ातल अपने िशकंजे से बच पाएगा..” कबीर आ मिव ास के साथ बोल रहा था.

“िपछले बार भी आपने ऐसा ही कहा था और फर भी क़ातल िनतीन का क़ ल करने मे कामयाब आ...” सुलेमान ने कटुता से कहा.

“िम टर. सुलेमान मुझे लगता है आपने पहले मेरा लान सुनना चािहए और बाद मे उसपर ट पणी करनी चािहए...” कबीर भी उसे वैसाही जवाब देते ए बोला.

कबीर ने ोजे टर ऑन कया, सामने

नपर एक आकृित दखने लगी.

“अब तक जो भी क़ ल ए है उसमे क़ातल एक िब ली का इ तेमाल कर रहा होगा ऐसा लग रहा है... मतलब मुझे वैसा यक न है...” कबीर ने कहा.

कबीर ने फर से अपने हाथ मे पकड़े रमोट का एक बटन दबाया.

न पर एक िब ली

क त वीर और एक आदमी कं यूटर पर काम कर रहा है ऐसी त वीर दखने लगी.

“इसके पहले ए क़ ल के छानबीन मे िमले कुछ त य से म इस नतीजेपर प ँचा ँ क क़ ल करने का िसफ़ यही एक तरीका हो सकता है... िजसके अनुसार क़ातल यहाँ कं यूटर पर बैठकर िब ली को सारे आदेश देता है... और वे सब आदेश वाइयरलेस टे ालजी के तहत यहाँ इस िब ली तक भेजे जाते है.. यह जो बे ट िब ली के गदन मे दख रहा है...

उसमे एक िचप है, िजसमे रसीवर फट कया आ है.. वे सारे िस

स इस रसीवर के

ारा रसीव कए जाते है... बाद मे वे िस

स ि ब ली के गले मे पहने प े से ि ब ली के

दमाग़ तक प ँचाए जाते है... और उन सब िस

स के ारा ि मले आदेशो को अमल मे

लाकर वह ि ब ली अपने ि शकार पर हमला करती है.. और अबतक ए सारे क़ ल इसी

तरीके का इ तेमाल कर के ए ह गे यह म दावे के साथ कह सकता ँ..."

कबीर ने फर से अपने हाथ मे रखे रमोट का बटन दबाया.

सामने रखा

न लक हो गया.

"यह हो गया क़ ल करने का तरीका और अब अपने लान के बारे मे ..." कबीर एक सांस

लेकर थोड़ी देर क गया, उसने अपने हाथ से रमोट बाजू रख दया.

"अपना लान मैने दो ि ह सो मे ि वभागत कया है..." सामने बैठ लोगो क ित

या

देखते ए कबीर आगे बोलने लगा," अपने लान का पहला ि ह सा है उस ि ब ली को

ि डटे ट कर उसे िस

स कहाँ से आ रहे है है यह ेस करना... इस कार हम खूनी का

अतापता ढूँढ पाएँगे..." कबीर फर से एक ण क कर आगे बोला, " और दूसरा लान

का दूसरा ि ह सा यह है क ि ब ली को ि मलनेवाले सारे िस

स रोकना ता क हम सुलेमान

का र ण कर सके..."

कबीर ने फर से अपने बगल मे रखा रमोट उठाकर उसका एक बटन दबाया. सामने

न पर एक मकान का न शा दखने लगा.

“यह सुलेमान के घर का न शा... इसे भी हमे दो िह सो मे बाँटना है...” कबीर ने न शे मे दो एक छोटा और दूसरा बड़ा ऐसी दो संकडरी सक स िनकाले ए थे वह ले सर बीम से िनदिशत कए.

“िजस तरह से इस आकृित मे बताया गया है.. यह जो पहला बाहर का बड़ा सकल है वह पहला िह सा और यह जो अंदर का छोटा सकल है वह दूसरा िह सा...” कबीर ने दोनो सकल पर एक के बाद एक ले सर बीम डालते ए कहा.

“ जब वह िब ली बाहर के िह से मे प चेगी, हमे वह िब ली घर मे आने का संकेत िमलेगा य क वहाँ हमने िस ल ॅकस और िस ल रसीवर िडटे टस लगाए ए है...” कबीर अपने हाथ मे रखे रमोट का ले सर बीम बंद करते ए कहा.

“िस ल ॅकस से हमे उन आनेवाले िस
स का ोत िमलेगा... और एकबार हमे उन
िस
स का ोत िमलने के बाद उस क़ितल को लोकेट कर हम राइड हडेड पकड़ सकते है...” कबीर ने ले सर बीम शु कर बाहर के सकल क तरफ िनदश करते ए कहा.

“जब वह िब ली दूसरे अंदर के छोटे सकल मे प चेगी, वहाँ रखे ए िस ल लॉकस उसे क़ितल क तरफ से िमलने वाले सारे िस
स और आदेश लॉक करगे.. मतलब बाद मे
उसका उस िब ली पर कोई िनयं ण नही होगा...” कबीर ले सर बीम अंदर के सकल क तरफ िनदिशत करते ए बोला.

कबीर ने अपने पूरा लान सब को समझाया और बोड म मे बैठे सब लोग पर अपनी नज़र घुमाई... सामने बैठे ए सारे ऑफस और पोलीस टाफ कबीर के इस लान के बारे मे संतु लग रहे थे.

“ कसी को कोई शंका...?” कबीर ने सामने बैठे ए लोग को, ख़ासकर सुलेमान क तरफ देखते ए कहा.

“देखते है..” सुलेमान ने कंधे उचका कर कहा, वह इस लान के बारे मे उतना संतु नही लग रहा था.

सच कहो तो वह अंदर से इतना टूट चुका था क वह कोई भी लान समझकर लेने के मि थित मे नही था और वह लाजमी भी था य क उसे क़ितल के िल ट मे अपना अगला नंबर प प से दख रहा था.

“तो चलो अब इस लान के िहसाब से अपने अपने काम पर लग जाओ... मैने पाठक के पास कसे या या करना है इसक िल ट दी ई है.. इसे कोई शंका हो तो मुझे पिूछएगा...”

कबीर अपने टीम क तरफ देखते ए बोला.

भाग - 8

सुलेमान के मकान के बगल मे एक गे ट म था. उस म मे दो पोलीस ऑ फसस टीवी पर सुलेमान के बेड म क िनगरानी कर रहे थे.

अचानक कं ोल बोड पर ‘बीप’ बजी.

“आए देखो तो... कुछ हो रहा है...” एक ऑफ सर ने का.

एक मॉनीटौर पर कुछ हरकत दखाई दी. एक काली िब ली चलते ए दखाई देने लगी.

“देखो फर से िब ली...” दूसरे ऑफ सर ने कहा.

“देखो उसके गले मे प ा भी बँधा आ है...” पहले ऑफ सर ने कहा.

“मतलब... जैसे हमारे साहब कहते है वैसे उस प े मे रसीवर है शायद...” दूसरे ऑफ सर ने कहा.

“और वह रसीवर िडटे ट आ है शायद... उसक ही तो बीप बजी है...” पहले ऑफ सर ने कहा.

उनमे से एक ने वाइयरलेस उठाया और वह वाइयरलेस पर बोलने लगा.

“सर... गले मे प ा पहने ई िब ली घर मे आई है...” उस ऑफ सर ने उसके बॉस को जानकारी दी.

“गुड... अब वह िस

स कहाँ से आ रहे है यह ेस करने क किोशश करो...” कबीर ने

उधर से उ हे िनदश दया.

उतने मे उ होने घर मे िस

स ेस क जो यं णा िबठाई थी उसने भी कं यूटर पर िस ल

ेस होने का संकेत दशाया.

“सर संगल का ोत भी िमल चुका है...” एक ऑफ सर ने कं यूटर क तरफ देखते ए

तुरंत कबीर को जानकारी दी.

“ ेट जॉब.. म िनकला ही ँ... लगभग 5 िमिनट मे प ँच जाउ गा...” कबीर ने कहा और

उधर से फोन कट होगया.

दो ऑफ सर और कबीर सामने रखे स यूट टीवी क तरफ देख रहे थे. उस टीवी पर िब ली

क सारी हरकते दख रही थी.

कं यूटर के मॉनटर पर अब शहर का न शा दखने लगा. उस न शे मे एक जगह एक लाल

पॉट लगातार चमक रहा था.

एक ऑफ सर पॉट क तरफ िनदश करते ए बोला, “ उस िब ली को सब िस

स और

िनदश ये यहाँ से आ रहे है...”

“जहाँ से िस ल आ रहे है वह जगह यहाँ से कतनी दूर होगी...” कबीर ने पूछा.

दूसरे ऑफ सर ने कहा, “सर, वह जगह अपने यहाँ से पूरब क तरफ लगभग 5 कमी

होगी...”

“हाँ.. हो सकता है एक मीटर इधर या एक मीटर उधर...” दूसरा ऑफ सर बीच मे ही

बोल पड़ा.

कबीर सुलेमान के मकान के सामने खड़ा होकर वाइयरलेस पर अपनी पूरी टीम को आदेश

और िनदश दे रहा था,

“मुझे लगता है सब को अपनी अपनी पिोझश स अ छी तरह समझ मे आई है.. अपने पास अब िसफ़ यही एक मौका है. अब कसी भी हाल मे क़ातल अपने िशकंजे से बचकर िनकलना नही चिाहए... तो िजस िजसको िजस िजस जगह पर तैनात कया गया है वे अपनी जगह मत छिोड़ए और िबना वजह अंदर बाहर करने क भी ज़ रत नही है..

इसिलए ही मैने अंदर क और बाहर क िज़ मेवारी अलग अलग स प दी है... और बाक बचे ए तुरंत यहाँ मकान के सामने जीप के पास इक ा हो जाओ...”

लगभग 15-20 टीम मबज़ जीप के पास जमा हो गये. वहाँ से िनकल ने से पहले कबीर ने उनको सं ेप मे ेफ कया.

“जहाँ से क़ातल ऑपरेट कर रहा है वह जगह हमे िमल चुक है.. इलसीए मैने अपनी टीम को दो िह सो मे बाँट दया है... 7 लोग पहले ही यहाँ सुलेमान का र ण करने के िलए तैनात कए गये है.. और बाक बचे 18 मतलब आप और मे... हमे ऑपरेशन का दूसरा िह सा यानी क क़ातल को पकड़ ने का काम करना है..”

कबीर अब ज दी ज दी आपनी गाड़ी क तरफ जाने लगा. गाड़ी क तरफ जाते जाते उसने सबको आदेश दया, “ अब ज द से ज द अपनी अपनी गाड़ी मे बैठो... हमारे प ँचने वह क़ातल वहाँ से िखसकना नही चिाहए...”

सब लोग ज दी ज दी अपने अपने गाड़ी मे बैठ गये और सब गिाडया धुँआ उड़ाती ई वहाँ से तेज़ी से िनकल पड़ी – खूनी जहाँ से ऑपरेट कर रहा था वहाँ. सब गिाड़याँ जब वहाँ से चली गयी तब वहाँ उड़ी ई धूल का बादल धीरे धीरे नीचे आने लगा था.

सुलेमान के मकान के बगल मे एक क़िबन था और उस क़िबन मे दो कॉ टेब स कं यूटर के सामने बैठे ए थे. उनमे से एक कं यूटर के क बोड क बट स दबाकर कुछ कर रहा था.

अचानक कं ोल बोड पर फर से ‘बीप’ ‘बीप’ ऐसी आवाज़ आने लगी. दोनो ने भी पहले कं ोल बोड क तरफ और फर टीवी

न पर देखा, िब ली बेड म के पास प ँची ई

टीवी

न पर दख रही थी.

“मुझे लगता है ि ब ली ि स ल लॉ कंग ए रया मे आ गयी है...” एक कॉ टेबल मानो खुद से ही बोला.

अब ‘बीप’ ‘बीप’ आवाज़ और ज़ोर से आने लगी.

“देख... देख... ि ब ली संगल लॉक कन ए रया मे प ँच गयी है...” एक कॉ टेबल ने झट से वाइयरलेस उठाया और कं ोल पॅनल पर एक लंक हो रहे लाइट क तरफ इशारा करते ए कहा.

“सर... ि ब ली अब ि स ल लॉ कंग के ए रया मे प ँच गयी है...” एक ने कबीर को इ फ़ौरम कया.

“अ छा... अब उसपर अ छी तरह से नज़र रखो...” उधर से कबीर का मेसेज आया.

“यस सर...” कॉ टेबल ने कहा.

“म इधर क़ितल के पीछे लगा ँ और यान रहे क उधर क पूरी ि ज़ मेदारी तु हारी है...” कबीर ने उसे ताक़ द दी.

“यस सर...” कॉ टेबल ने कहा.

और उधर से कबीर ने फोन कट कर दया.

“ि स ल लॉकर ने सब ि स ल लॉक कए है और अब उस क़ितल का एक भी आदेश उस ि ब ली तक प चेगा नही” एक कॉ टेबल मॉनटर और टीवी क तरफ देखते ए फर से उ ि जत होकर बोला.

टीवी मॉनटर पर अब वह ि ब ली ि मत ई दख रही थी. वह कभी आगे जा रही थी तो कभी पीछे.. शायद उसे कहाँ जाना है कुछ समझ मे नही आ रहा हो.

अचानक उनके सामने रखे स यूट टीवी पर दखाई दया क उस ि ब ली का कसी बॉ ब क तरह एक बड़ा ि व फोट होकर बड़ा धमाका आ है.. इतना बड़ा क उनक कॅिबन भी काफ़ दूर होते ए भी थरा उठी...

कॅिबन मे रखा आ कं यूटर और स यूट टीवी बंद हो गया.

दोनो पुिलस वालो को भी यह अ यािशत आघात था.... उनको यह कैसे आ कुछ समझ नही आ रहा था... वे गड़बड़ा कर इधर उधर दौड़ने लगे...

“यह अचानक या आ...?” एक कॉ टेबल घबराकर बोला.

वह इतना घबराया आ था क उसक सांस फूल गयी थी.

“टेर र ट अटॅक तो नही...?” उस कॉ टेबल ने अपनी सांसोपर ि◌नयं ण करने क कोिशश करते ए बोला.

“बेवकूफ़ क तरह कुछ भी बको मत... देखा नही... उस ि◌ब ली का ि◌व फोट हो गया है..” दूसरे कॉ टेबल ने कहा.

“चल ज दी... उधर या आ है यह हमे देखना पड़ेगा...” दौड़ते ए कॉ टेबल ने कहा.

वे दोनो जब सुलेमान के बेड म मे प ँच गये. उ होने देखा क ि◌व फोट क वजह से बेड म बेड म नही रहा था. वहाँ ि◌सफ़ इंट.. प थर, सेमट का ढेर बना आ था और टूटा आ समान इधर उधर फैला आ था. उस ढेर मे उ हे सुलेमान के शरीर का कुछ ि◌ह सा दखाई दया. दोनो कॉ टेबल तुरंत वहाँ प च गये. उ होने सुलेमान क बॉडी से समान हटाकर उसे ढेर से बाहर ि◌नकाला. एक ने उसक न ज़ टटोली. ले कन न ज़ बंद थी. उसक जान शायद जब ि◌व फोट आ तब ही गयी होगी.

अब वो दोनो बेड म के घर के बाक ि◌ह स क तरफ रवाना हो गये. जहाँ जहाँ उनके साथी तैनात थे, उनको वे ढूँढ ने लगे. कुछ लोग ज म से कराह रहे थे, वहाँ वे उनके मदद के ि◌लए दौड़ पड़े.

इतनी गड़बड़ मे एक ने अपने जेब से मोबाइल ि◌नकाला और एक नंबर डाइयल कया.

इं पे टर कबीर और उसक टीम क गािड़याँ तेज़ी से रा ते पर दौड़ रही थी... क़ातल का ठकाना तो उ हे पता चल चुका था ले कन अब ज द से ज द वहाँ जाकर वह र फु च र होने से पहले उसे पकड़ना ज़ री था. गािड़य क गित के साथ कबीर का दमाग़ भी दौड़ रहा था. वह मन ही मन सारी संभावनाए टटोलकर देख रहा था और हर ि◌ थित मे अपनी या ॅटजी रहेगी यह तय कर रहा था. उतने मे उसके मोबाइल क बेल बजी. उसके

िवचार क शृंखला टूट गयी.

उसने मोबाइल के िडस ले क तरफ देखा और झट से फोन अटड कया, “हाँ बोलो...”

“सर यहाँ एक सीरीयस ा लम हो गया है...” उधर से उस कॉ टेबल क आवाज़ आई.

‘सीरीयस ा लम हो गया’ यह सुना और कबीर िनराश होने लगा... उसके दमाग़ मे तरह तरह के िवचार आने लगे.

“ या..?... या आ...?” कबीर ने उ िजत होकर पूछा.

वह अपनी िनराशा को अपने उपर हावी होने देना नही चाहता था.

“सर उस िब ली का यहाँ कसी बॉ ब क तरह िव फोट आ है...” कॉ टेबल ने जानकारी दी...

“ या...? िव फोट आ...?” कबीर के मुँह से आ य से िनकला..

उसपर एक एक आघात हो रहे थे.

“ले कन कैसे...?” कबीर ने आगे पूछा.

“सर उस िब ली के गले मे पहने प े मे लि टक ए स लोिसव लगाया होगा... मुझे लगता है क िस ल लॉक होते ही उसका िव फोट हो जाय इस तरह उसे ो ाम कया होगा, ता क क़ितल का िशकार कसी भी हाल मे उसके िशकंजे से ना छूटे...” कॉ टेबल ने अपनी राय बयान क ...

“सुलेमान कैसा है...? उसे कुछ आ तो नही...?” आख़र इतना करने के बाद भी हम उसे बचा सके या नही यह जान ने क ज दी कबीर को ई थी.

“नही सर वह उस िव फोट मे ही मर गया...” उधर से कॉ टेबल ने कहा.

“िशट...?” कबीर के मुँह से गु से से िनकल गया, “और अपने लोग...? वे कैसे है..?” कबीर ने आगे पूछा...

“दो लोग ज़ मी हो गये है.,. हम लोग उ हे हॉ पटल मे ले जा रहे है...” कॉ टेबल ने जानकारी दी.

“कोई सीरीयस तौर पर ज़ मी तो नही ...” कबीर फर से तस ली करने के िलए पूछा.

“नही सर... ज म वैसे मामूली ही है...” उधर से आवाज़ आई.

“सुनो, उधर क पूरी ि ज़ मेदारी म तु हारे उपर स पता ँ... हम लोग इधर जहाँ से ि स ल आ रहे थे उसके आस पास ही है.. थोड़ी ही देर मे हम वहाँ प ँच जाएँगे... उधर का तुम दोनो ि मलकर अ छी तरह से संभाल लो...”

“यस सर...”

“अपने लोगो का ख़याल रखना...” कबीर ने कहा और उसने फोन काट दया...

“चलो ज दी... हमे ज दी करनी चिाहए... उधर सुलेमान को तो हम बचा नही पाए... कम से कम इधर इस क़ितल को पकड़ने मे कामयाब होना चिाहए...” कबीर ने ाइवर को तेज़ी से चलने का इशारा करते ए कहा.

जहाँ से ि स ल आ रहे थे उस जगह के आस पास कबीर और उसक टीम आकर प ँच गयी. वह एक वेरहाउस था और वेरहाउस के सामने और आस पास काफ़ खुला मैदान था.

“कं यूटर पर तो यही जगह दखाई दे रही थी... मतलब यही वेरहाउस मे ही क़ितल छुपा आ होना चिाहए...” कबीर अपने पास के न शे पर और वेर हाउस के आस पास का इलाक़ा देख कर बोला.

ाइवर ने कबीर क तरफ उसके अगले आदेश के इंतेज़ार मे देखा.

“गाड़ी वेर हाउस के क पाउंड मे लो...” कबीर ने ाइवर को आदेश दया.

“यस सर...” ाइवर ने कहा और उसने गाड़ी वेर हाउस के खाली मैदान मे घुसा.. उनके पीछे आनेवाली गिाड़याँ भी उनके पीछे पीछे उस खाली मैदान मे घुस गयी. कबीर क गाड़ी के पीछे सब गिाड़याँ वेरहाउस के सामने क गयी. गाड़ी रोकने के बाद कबीर ने अपने वाइयरलेस पर क जा कया.

“ ूप 2, ूप 3 तुरंत वेरहाउस को चारो तरफ से घेर लो...” गाड़ी से उतर ते व कबीर वाइयरलेस पर आदेश देने लगा.

उसके साथी भी ज दी ज दी गाड़ी से उतरने लगे.

“ ूप 2 वेरहाउस के दाई तरफ और ूप 3 बाई तरफ से वेरहाउस को घेर लो...” उनक

गड़बड़ी ना हो इसिलए कबीर ने अपने आदेश का खुलासा कया.

गाड़ी से उतर ने के बाद ूप 2 ने वेरहाउस के दाई तरफ से तो ूप 3 ने बाई तरफ से वेरहाउस को पूरी तरह घेर िलया.... क़ितल अगर वेरहाउस मे छुपा होगा और उसे भाग कर जाना हो तो उसे इनक बनाई यह दीवार भेदकर जाना पड़ेगा.. और वह लगभग नामुम कन था.

अपने दोनो ूप के अ छी और पूरी तरह से वेरहाउस को घेरने क तस ली होने के बाद कबीर अपने साथ वाले ूप के साथ, वेरहाउस के दरवाज़े के पास लगभग दौड़ते ए ही गया.

" ूप 1 अब वेरहाउस मे घुसनेवाला है... सबलॉग तै यार रहो... अंदर कतने लोग ह गे इसका अभी तक कोई अनुमान नही लगाया जा सकता है..." कबीर ने फर से एकबार सब को सतक रहने क ताक़ द दी.

वेरहाउस मे एक जगह कं यूटर का मॉनटर चमक रहा था वह जगह छोड़कर बाक सब तरफ अंधेरा था. उस कं यूटर के सामने एक उधर मुँह कए एक साया खड़ा था और उसक अपना सामान बॅग मे भरने क गड़बड़ चल रही थी.... सब क ल तो हो चुके थे. अब उसक भाग जाने क तै या र दख रही थी. अचानक सामान भरते ए वह क गया. उसे वेरहाउस के बाहर या अंदर कोई हरकत महसूस ई होगी. वह वैसे ही उधर मुँह कर खड़ा होकर गौर से सुनने क कोिशश करने लगा.

सब काम तो अब ठीक ढंग से हो चुके है... और अब मुझे य अलग अलग म हो रहे है... अब तक कोई मुझे पकड़ नही पाया जो अब पकड़ पाएगा...

वैसे मेरी लॅ नंग कोई कम फुल ूफ नही थी...

उसने अपने दमाग़ मे चल रहे िवचार क कशमकश झटक कर दूर क और फर से अपने काम मे

त हो गया.

अचानक उसे पीछे से आवाज़ आई, "ह ज़ अप.. यू आर अंडर अरे ट.."

उसने चतुरता से अपने बॅग से कुछ, शायद कोई हिथयार िनकाल ने क किोशश क .

ले कन उससे यादा चतुराई से और तेज़ी से इं पे टर कबीर ने उसके आस पास बंदूक क गिोलय क बरसात कर मानो एक ल मण रेखा बनाई.

“ यादा हिोशयारी करने का यास मत करो...” कबीर ने उसे ताक़ द दी.

उसके हाथ से वह जो भर रह था वह बॅग नीचे िगर गया और उसने अपने दोनो हाथ उपर कए. धीरे धीरे वह कबीर क तरफ मुड़ने लगा.

वह जैसे ही मुड़ने लगा. कबीर मन ही मन अनुमान लगाने लगा.

वह कौन होगा...?

और यह सारे क ल उसने य कए ह गे...?

जैसे ही वह पूरी तरह कबीर क तरफ मुड़ा, वहाँ मॉनटर क रोशनी मे उसका चेहरा दखने लगा.

उसे देख कर इं पे टर कबीर के चेहरे पर आ य के भाव दखने लगे.

वह दूसरा तीसरा कोई ना होकर आ द य था, मिोहत और पायल का दो त, लासमेट...!

कबीर को याद आया क उसने पायल और मिोहत के लास के ूप फोटो मे इसे देखा था..

इं पे टर कबीर को एक सवाल का जवाब िमल गया था, ले कन उसका दूसरा सवाल ‘यह सारे खून उसने य कए ह गे...?’ का जवाब अब भी बाक था.

इं पे टर कबीर और उसके साथी धीरे धीरे आगे िखसकने लगे. कबीर ने वाइयरलेस पर क़ितल को पकड़ने क खबर सारे टीम को दी.. उ होने आ द य को चारो तरफ से घेर िलया.

कबीर और पाठक अब भी आ द य को घेर कर खड़े थे. आ द य का ितरोध अब पूरी तरह ख़ म हो चुका था. कबीर के दो सिाथयो ने उसे हथकिड़याँ लगाकर अपने क ज़े मे िलया था. कबीर उसे वहाँ सवाल पर सवाल पूछे जा रहा था... आिख़र एक सवाल अब तक सब को परेशान कर रहा था. कबीर को भी लग रहा था क बाद क तहक़ क़त जब होगी तब होगी. कम से कम सब को परेशान कर रहे सवाल का जवाब यह िमलना चिाहए... क

य ...? य आ द य ने उन चार लोगो का क ल कया..?

आ द य के भी अब पूरी तरह ख़याल मे आया था क उस के पास अब सब कुछ बताने के आलवा कुछ चारा नही था. वह सबकुछ कसी तोते क तरह बताने लगा....

"म पायल से यार करने लगा था... "

भाग - 9

लास मे ोफ़ेसर पढ़ा रहे थे और िवधयथ य मे मोहत, पायल और आ द य लास मे अलग अलग जगह पर बैठे ए थे. आ द य ने सामने देखते ए, ोफ़ेसर का ख़याल अपनी तरफ नही है इसक तस ली कर चुप के से एक कटा पायल क तरफ डाला. ले कन यह या...? वह उसक तरफ ना देखते ए छुपकर मोहत क तरफ देख रही थी. वह आग बाबूला होने लगा था.

म इस लास का एक होनहार िव या थ...

एक से एक लड़ कयाँ मुझपर मरने के िलए तैयार...

ले कन िजसपर अपना दल आया वह मेरी तरफ देखने के िलए भी तैयार नही है...?

उसके अहम को ठेस प च रही थी..

नही यह होना मुम कन नही ...

शायद उस का अपना दल उसपर आया है यह पता नही होगा...

उसे यह जताना और बताना ज़ री है...

एक दन दोपहर के व मैने कॉलेज छूटने पर पायल को अपने यार के बारे मे बताया और उससे शादी करने क इ छा जताई...

ले कन पायल ने उसका

ताव ठुकरा दया... मुझे इसक उ मीद नही थी... इतनी

सहजतासे वह मुझे कैसे ठुकरा सकती है...? उसके अहंकार ठेस प च रही थी...

ले कन य वो मेरे से शादी नही कर सकती मैने उसको पूछा भी तो उसने बताया क म कसी और से यार करती ँ...

फर बाद मे मैने यह दूसरा लड़का कौन है िजसके िलए मेरा यार ठुकरा दया इसक खोज मे जुट गया था ले कन ये पता करने के िलए मुझे यादा टाइम भी नही लगा... एक पाक मे मोिहत और पायल बैठ कर यार भरी बात कर रहे थे... और म उसी पेड के पीछे छुप कर उनक बात सुन रहा और मुझे ब त गु सा आ रहा था.

“मैने उसपर ब त... मतलब अपनी जान से यादा ेम कया...” आ द य ने आह भरते ए कहा.

“ले कन मुझे जब पता चला क वह मुझे नही बि क मोिहत को चाहती है... तब म ब त िनराश, हताश आ, मुझे उसका गु सा भी आया... ले कन धीरे धीरे मैने अपने आपको समझाया क म उसे चाहता ँ इसका मतलब यह ज़ री नही क वह भी मुझे चाहे.. वह कसी को भी चाहने के िलए आज़ाद होनी चिाहए...” आ द य ने कहा.

“ले कन तुमने उन चार लोगो को य मारा...?” कबीर ने असली बात पर आते ए पूछा.

“ य क दूसरा कोई भी नही कर सकता इतना यार मैने कया था...” आ द य ने अिभमान के साथ कहा.

“मोिहत ने भी उससे यार कया था...” कबीर ने उसे और छेड़ने क कोिशश करते ए कहा.

“वह कायर था... पायल उससे यार करे ऐसी उसक हैिसयत नही थी...” आ द य ने नफ़रत के साथ कहा, “तु हे पता है...? जब उसका बला कार होकर क़ ल आ था तब मोिहत ने मुझे एक खत िलखा था...” आ द य ने आगे कहा...

“ या िलखा था उसने...?” कबीर ने पूछा.

... “िलखा था क उसे पायल के बला कार और क़ ल का बदला लेना है... और उसने उन चार गुनहगार को ढूँढा है... ले कन उसक बदला लेने क िह मत नही बन पा रही है.. वगैरे... वगैरे... ऐसा उनसे काफ़ कुछ िलखा था... म एक दो त के तौर पर उसे अ छी तरह जानता था.. ले कन वह इतना डरपोक होगा ऐसा मैने कभी नही सोचा था... फर ऐसी ि थित मे आप ही बताइए म या करता... अगर वह बदला नही ले सकता तो उन

चार हैवानो से बदला लेने क ि़ज़ मेदारी मेरी बनती थी... य क भले ही वह मुझे नही चाहती थी ले कन मेरा तो उसपर स ा ेम था..." इतना कह कर उसे अपने हाथ पैर कमजोर ए ऐसा महसूस होने लगा. वह एकदम से नीचे बैठ गया. उसने अपना चेहरा अपने घुटनो मे छुपा िलया और फुट फुट कर रोने लगा. इतनी देर से रोकने का यास करने के बावजूद वह अपने आपको रोक नही पाया था.

हथकिड़याँ पहना आ और पोलीस से घेरा आ आ द य वेर हाउस से बाहर िनकला. उसके साथ सब हिथयार से लेस पोलीस थी य क वह कोई सीधा सादा क़ितल ना होकर चार चार क़ ल कया आ सी रयल क लर था. पोलीस ने आ द य को उनके एक गाड़ी मे िबठाया. इं पे टर कबीर वेरहाउस के दरवाजे के पास पीछे ही क गया. कबीर ने अब तक ना जाने कतने क़ ल के किसज हडल कए थी ले कन इस केस से वह िवचिलत आ दख रहा था.

कितल को पकड़ने का सबसे मह वपूण काम तो अब पूरा हो चुका था. इसिलए अब उनके साथ गाड़ी मे बैठकर जाना उसे उतना ज़ री नही लगा. वह कुछ व अकेले मे गुज़ारना चाहता था और उसे पीछे क कर एकबार इस वेरहाउस क पूरी छानबीन करनी थी.

उसने अपने अिस टट पाठक को इशारा कया,

"तुम लोग इसे लेकर आगे िनकल जाओ... म थोड़ी देर मे थोड़ी ही देर मे वहाँ प ँचता ँ..." कबीर ने कहा.

िजस गाड़ी मे आ द य को िबठाया था वह गाड़ी शु हो गयी. उसके पीछे पोलीस क बाक गिाडया भी शु हो गयी और आ द य िजस गाड़ी मे बैठा था उसके पीछे तेज़ी से दौड़ने लगी. वे गिाडया िनकल गयी... कबीर गंभीर मु ा मे उस धूल के बादल को धीरे धीरे नीचे बैठ ता आ देख रहा था.

जैसे ही सब गिाड़याँ वहाँ से िनकल गयी और औरा आस पास का वातावरण शांत आ कबीर ने वेर हाउस के एक च र लगाया. चलते चलते उसने उपर आसमान क तरफ देखा. आसमान मे लाली फैल गयी थी और अब थोड़ी ही देर मे सूरज उगने वाला था. वह एक

च र लगा कर दरवाजे के पास आ गया और भारी चाल से वेरहाउस के अंदर चला गया.

अंदर वेरहाउस मे अब भी अंधेरा था. उसने कं यूटर के चमक रहे मॉनीटौर क रोशनी मे

वेरहाउस के अंदर एक च र लगाया और फर उस कं यूटर के पास जाकर खड़ा हो गया.

कबीर ने देखा क कं यूटर पर एक सॉ टवेर अब भी ओपन कया आ था. उसने सॉ टवेर

क लाग अलग ऑ ष स पर माउस ि लक करके देखा. एक बटन पर ि लक करते ही

कं यूटर के बगल मे रखे एक उपकरण का लाइट लंक होने लगा. उसने वह उपकरण हाथ

मे लेकर उसे गौर से देखा. वह एक ि स ल रसीवर था, ि जसपर एक ि डस ले था. उस

ि डस ले पर एक मेसेज चमक ने लगा. ि लखा था ' इन ि स ल रज / इ

न = ले ट'.

उसने वह उपकरण वापस अपनी जगह रख दया. उसने और एक सॉ टवेर का बटन

दबाया, ि जसपर 'राइट' ऐसा ि लखा आ था.

फर से ि स ल रसीवर लंक आ और उसपर मेसेज आया 'इन ि स ल रज / इ

न =

राइट'. आगे उसने 'अटॅच' बटन दया. फर से ि स ल रसीवर लंक हो गया और उसपर

मेसेज आया था. 'इन ि स ल रज / इ

न = अटॅक'. कबीर ने वह उपकरण फर से हाथ

मे ि लया और अब वह उसे गौर से देखने लगा. इतने मे उसे वेरहाउस के बाहर कसी चीज़

क आवाज़ आई. वह उपकरण वैसा ही हाथ मे लेकर वह बाहर चला गया.

वेर हाउस के बाहर आकर उसने आजूबाजू देखा.

यहाँ तो कोई नही...

फर कस चीज़ का आवाज़ है...

होगा कुछ... जाने दो...

जब वह फर से वेर हाउस मे वापस आने के ि लए मुड़ा तब उसका यान अनायास ही

उसके हाथ मे पकड़े लंक हो रहे उपकरण क तरफ गया. अचानक उसके चेहरे पर आ य

के भाव दखने लगे. उस ि स ल रसीवर पर ‘आउट ऑफ रज / इ

न = ि न ल’ ऐसा

मेसेज आया था. वह आ य से उस उपकरण क तरफ देखने लगा. उसका मुँह खुला का

खुला ही रह गया. उसके दमाग़ मे अलग अलग सवालोने भीड़ क थी.

अचानक आस पास कसी क उपि थित से वह लगभग च क गया. देखता है तो वह एक

काली ि ब ली थी और वह उसके सामने से दौड़ते ए वेर हाउस मे घुस गयी थी. एक बार

उसने अपने हाथ मे पकड़े उपकरण क तरफ देखा और फर उस वेर हाउस के खुले दरवाजे

क तरफ देखा, ि जससे अभी अभी एक काली ि ब ली अंदर गयी थी.

धीरे धीरे सावधानी से उस ि ब ली का पीछा करते ए वह अब अंदर वेर हाउस मे जाने

लगा.

जाते जाते उसके दमाग़ मे एक ि वचार लगातार घूमने लगा क अगर वेरहाउस के बाहर

तक भी ि स ल जा नही सकता है तो फर जो चार लोगो के क़ ल ए उनके घर तक ि स ल

कैसे प चा...?

दुिवधा क ि थित मे कबीर ने धीरे धीरे वेर हाउस मे वेश कया. अंदर जाने के बाद वह

इधर उधर देखते ए उस ि ब ली को ढूँढ ने लगा. पहले ही अंधेरा और उपर से वह ि ब ली

काले रंग क ... ढूँढना मु कल था... उसने वेरहाउस मे सब तरफ अपनी ढूँढती ई नज़र

दौड़ाई... अब सुबह होने को आई थी. इसिलए वेरहाउस मे थोड़ा थोड़ा उजाला हो गया

था. एक जगह उसे धूल से सनी ई एक फाइ स क गठरी दखाई दी. वह उस फाइ स क

गठरी के पास गया... वह गठरी थोड़ी उँचान पर रखी ई थी. कबीर क उ सुकता बढ़

गयी थी.

या होगा उस फाइ स मे...

ज़ र केस के बारे मे और कुछ मह वपूण मुझे उस फाइ स मे ि मल सकता है...

वह अपने पैर के पंजे उँचे कर उस फाइ स के गठरी तक प चने का यास करने लगा. फर

भी वह वहाँ तक प ँच नही पा रहा था. इसिलए वह उछल कर उस गठरी तक प ँचने का

यास करने लगा. उस गठरी तक प चने के यास मे उसका ध ा लग कर उपर से कुछ तो नीच िगर गया. काँच फूटने जैसे आवाज़ ई. उसने नीच झुक कर देखा तो काँच के टुकड़े सब तरफ फैले ए थे और नीचे एक फोटो क े म उ टी पड़ी ई थी. उसने वह उठाई और सीधी करके देखी.. वह एक ूप फोटो था ले कन वहाँ रोशनी काफ़ नही होने से ठीक से दखाई नही दे रहा था. वह फोटो लेकर वह कं यूटर के पास गया. कं यूटर का मॉनटर अब भी शु था और चमक रहा था. इसिलए उस रोशनी मे वह फोटो ठीक से देखना मुम कन था. मॉनटर क रोशनी मे उसने वह ूप फोटो देखा और वह आ य से ह ा ब ा सा रह गया. वह खुले मुँह से आ य से उस फोटो क तरफ देख रहा था.

वह उस हादसे से संभला भी नही क उसके सामने कं यूटर का मॉनटर बंद शु होने लगा.

कुछ एलि

क ा लम होगा...

इसिलए वह कं यूटर का पावर ि वच और लग चेक करने लगा.

उसने पवर लग क तरफ देखा और च कते ए डर के मारे वह पीछे हट गया. उसे आ य का दूसरा ध ा लगा था.

कं यूटर का पावर केबल पवर बोड मे लगा नही था और वही बगल मे िनकाल कर रखा आ था.

फर भी कं यूटर शु कैसे...?

या यह पवर केबल दूसरी कसी चीज़ का होगा...

उसने वह पवर केबल उठाकर एक िसरे से दूसरे िसरे तक टटोलकर देखा, वह कं यूटर का ही पवर केबल था.

अब उसके हाथ पैर काँपने लगे...

वह जो देख रहा था वैसा उसने उसक पूरी जंदगी मे कभी नही देखा था.

अचानक कं यूटर का मॉनटर बंद होना शु होना क गया. उसने मॉनटर क तरफ देखा.

उसके चेहरे पर अब भी डर और आ य झलक रहा था.

अचानक एक बड़ा भयानक हवा का झ का वेरहाउस मे बहने लगा. इतना बड़ा झ का बह रहा था और इधर कबीर पसीने से लथपथ हो गया था... ब त जोरो से हवा चल रही थी.. और अब अचानक मॉनटर पर तरह तरह के िविच और भयानक साए दखने लगे. कबीर को कुछ समझ नही आ रहा था क या हो रहा है.. जो भी हो रहा था वह उसके समझ और प च के बाहर था... आिख़र एक खूबसूरत जवान ी का साया मॉनटर पर दखने लगा. वह साया भले ही सुंदर और मोहक था फर भी कबीर के बदन मे एक डर क िसहरन दौड़ गयी. वह मोहक साया अब एक भयानक और डरावने साए मे प रव तत आ. फर से एक हवा का बड़ा झ का तेज़ी से अंदर आया. इसबार उस झ के का ज़ोर और बहाव ब त तेज था. इतना क कबीर उस झ के क मार सहन नही कर पाया और दो फट उपर उड़ के नीच िगर गया. वैसे भी उसके हाथ पैर पहले ही कमजोर पड़ चुके थे. उस झ के क मार का ितकार करने क शि उसमे बाक नही थी. नीचे पड़े ए ि थित मे उसको एहसास आ क धीरे धीरे वह होश खोने लगा है. ले कन होश पूरी तरह खोने से पहले उसने मॉनटर पर दख रही उस ी क आख मे दो बड़े बड़े आँसू बहकर नीचे आते ए दखे.

वेरहाउस मे नीचे मॉनटर के सामने अचेतन अव था मे पड़े कबीर के सामने से मानो एक एक संग लॅशबॅक क तरह जाने लगा....

.... पायल और मोिहत रा ते के कनारे पड़े एक ेनेज पाइप मे िछपे ए थे. इतने मे अचानक उ हे उनक तरफ आते ए कसी के दौड़ने का आवाज़ सुनाई दी. वे अब िहल डुल भी नही सकते थे. उ होने अगर उ हे ढूँढ िलया तो वे बुरी तरह उनके क ज़े मे फँसने वाले थे. उ होने िब ली क तरह अपनी आखे मूंद ली और िजतना हो सकता है उतना उस छोटी से जगह मे िसकुड़ने का यास कया. उसके आलवा वे कर भी या सकते थे...?

अचानक उनको एहसास आ क उनका पीछा करने वालो मे से एक दौड़ते ए उनके पाइप के एकदम पास आकर प ँचा है. वह नज़दीक आते ही मोिहत और पायल एकदम शांत होकर लगभग सांस रोके ए त ध होकर वैसे ही बैठे रहे. वह अब पाइप के काफ़

पास प च गया था.

वह उन चारो मे से ही एक, महेश था. उसने इद िगद अपनी नज़रे दौड़ाई.

“कहाँ गायब हो गये साले...?” वह खुद पर ही झ ला उठा.

इतने मे महेश का यान पाइप क तरफ गया.

ज़ र साले इस पाइप मे छुपे ह गे...

उसने सोचा.. वह पाइप के और पास गया. वह अब झुक कर पाइप मे देखने ही वाला था क इतने मे...

“महेश... ज दी इधर आओ...” उधर से सुलेमान ने उसे आवाज़ दी.

महेश पाइप मे देखने के िलए झुकते ए क गया, उसने आवाज़ आई उस दशा मे देखा और पलट कर वह दौड़ते ए उस दशा मे िनकल गया.

जा रहे कदमो क आवाज़ सुनते ही पायल और मोिहत ने राहत क सांस ली.

महेश के जाते ही मोिहत ने अपने जेब से मोबाइल िनकाला. उसने कोई उ हे ेस ना करे इसिलए फोन ि वच ऑफ कर के रखा था. उसने वह ि वच ऑन कया और एक नंबर डाइयल कया.

“ कस को फोन कर रहे हो...?” पायल ने दबे वर मे पूछा.

“अपना लासमेट आ द य को... वह इसी गाँव का है...”

उतने मे फोन लग गया, “हेलो...”

“अरे या मोिहत कहाँ से बोल रहे हो... सालो तुम लोग कहाँ गायब हो गये हो.. इधर सारे लोग कतने परेशान हो गये है...” उधर से आ द य ने कहा.

मोिहत ने उसे संि

मे सब बताया और कहा, “अरे हम यहाँ एक जगह फँसे ए है...”

“फँसे...? कहाँ...?” आ द य ने पूछा.

“अरे कुछ बदमाश हमारा पीछा कर रहे है... हम लोग अब कहाँ है यह बताना ज़रा मु कल है...” मोिहत बोल रहा था. इतने मे पायल ने उसका यान अपनी तरफ ख चते

ए टवर क तरफ इशारा कया.

“... हाँ यहाँ से एक टवर दख रहा है िजसपर घड़ी लगी ई है... उसके आसपास ही कही हम िछपे ए है...” मोिहत ने उसे जानकारी दी...

“अ छा... अ छा... चंता मत करो, पहले आपना दमाग़ शांत करो और अपने आपका संभालो... और इतने बड़े शहर मे वे बदमाश तु हारा कुछ िबगाड़ सकते है यह डर दल से पूरी तरह िनकाल दो... हाँ िनकाल दया...?” उधर से आ द य ने पूछा.

“हाँ ठीक है...” मोिहत ने कहा.

“ म् म... गुड. अब कोई टॅ सी पाकड़ो और उसे िह टन होटेल को ले जाने के िलए कहो... वह वही कही नज़दीक उसी ए रया मे है...”

इतने मे उ हे इतनी देर से कोई वहाँ नही दखा था, ले कन भगवान क कृपा से एक टॅ सी उनक तरफ आती ई दखाई दी...

“टॅ सी आई है... अ छा तु हे म बाद मे फोन करता ँ...” मोिहत ने ज दी से फोन कट कर दया.

वे दोनो भी ज दी ज दी पाइप के बाहर आगये और मोिहत ने टॅ सी को कने का इशारा कया. जैसे ही टॅ सी क गयी वैसे दोनो टॅ सी मे घुस गये.

“होटेल िह टन...” मोिहत ने कहा और टॅ सी फर से दौड़ने लगी.

टॅ सी िनकल गयी तो दोनो क जान मे जान आ गयी.. उ होने राहत क सांस ली.

सुलेमान और उसके तीनो दो त अब भी पागलो क तरह पायल और मोिहत को ढूँढ रहे थे.... आख़र ढूँढ ढूँढ कर थकने के बाद फर से िजस चोराहे से उ होने उ हे ढूँढ ने क शु आत क थी उस चोराहे पर सुलेमान और महेश वापस आ गये... उनके पीछे पीछे बड़ी बड़ी साँसे लेते ए साँसे फूला आ राकेश आ गया.

“िमल गयी...?” महेश ने पूछा.

राकेश ने िसफ़ ना मे सर िहलाया.

“साल को आसमान खा गया या पाताल िनगल गया...?” सुलेमान िचढ़कर बोला.

इतने मे उ हे दूर से िनतीन उनक और आता दखाई दया.... उ होने बड़ी आस क साथ उसक तरफ देखा. ले कन उसने दूर से ही अपना अंगूठा नीचे कर वे नही िमलने का इशारा कया.

“सालो या बारह बजा आ मुँह लेकर आए हो... जाओ उसे ढुंढ़ो... और जब तक वह िमलती नही तब तक वापस मत आओ...”सुलेमान गरज उठा.

उतने मे सुलेमान के फोन क रंग बजी.

सुलेमान ने फोन उठाया , “हेलो...”

“हे... म आ द य बोल रहा ँ...” उधर से पायल और मोिहत का लास मेट आ द य बोल रहा था.

“हाँ बोलो आ द य...” सुलेमान बोला.

“एक खुशी क बात है.. मैने तु हारे िलए एक ीट अरज क है...” उधर से आ द य बोला.

“देखो आ द य... अभी हमारा मूड कुछ ठीक नही है... और तु हारी ीट अटड करना इतना तो है ही नही...” सुलेमान ने कहा.

“अरे फर तो यह ीट तु हारा मूड ज़ र ठीक करेगी... पहले सुन तो लो... एक नया पंछी अपने शहर मे आया आ है... फलहाल मैने उसे खास तु हारे िलए एक महफूस जगह भेजा है..” आ द य का उधर से उ साह से भरा वर आया.

“पंछी...? इस शहर मे नया... एक िमिनट.. एक िमिनट... या वह उसके बॉय दो त के साथ है..?” सुलेमान ने पूछा.

“हाँ...” उधर से आ द य ने कहा.

“उसके गाल पर ह े के बाद डंपल दखने लगता है...?” सुलेमान ने पूछा.

“हाँ...” आ द य ने कहा.

“उसके दाए हाथ पर शेर का टॅटू भी है... बराबर...” सुलेमान का चेहरा खुशी से िखलने लगा.

“हाँ... ले कन यह सब तु हे कैसे पता...?” उधर से आ द य ने आ य से पूछा.

“अरे वह तो वही लड़क है... िनतीन, महेश, राकेश और म सुबह से िजसके पीछे थे.... और अभी थोड़ी देर पहले वह हमे झांसा देकर यहाँ से गायब हो गयी है... ले कन लगता है साली हमारे नसीब मे ही िलखी है...”

“सच...?” उधर से आ द य भी आ य से बोला.

“यार... आ द य... आज तो तुमने मेरा दल खुश कर दया है... इसे कहते है स ा दो त...” सुलेमान भी खुशी के मारे उ िजत होकर बोल रहा था.

“अरे अभी तो हम उसे पता नही कहाँ कहाँ ढूँढ रहे थे... कधर है वह...? सच क ँ... हम लोग उसके बदले तु हे जो चिाहए दे दगे...” सुलेमान ने खुशी के मारे वादा कया.

“देखो... फर मुकर ना जाना...” आ द य ने कहा.

“अरे नही.. इ स ॉमस यार...” सुलेमान कसी कबीरा क तरह खुश होकर बोला.

“दो हज़ार ... हर एक के पास से... मंजूर...?” आ द य ने भी व के तकाज़े का फ़ायदा लेने क ठान ली.

“मंजूर...”सुलेमान ने बे फ लहजे मे कहा.

भाग - **10**

सुलेमान, राकेश, महेश और िनतीन एक पुराने मकान मे, एक टेबल के इदिगद बैठे ए थे. उनके हाथ मे आधे िपए ए ि ह क के जाम थे... चारो भी अपने अपने िवचार मे खोए ए ि ह क पी रहे थे... उनमे एक तनावपूण स ाटा छाया आ था...

“उसे तुमने य मारा...?” िनतीन ने स ाटा तोड़ते ए सुलेमान से सवाल कया.

वैसे तो तीनो मे से कसी क सुलेमान से इस तरह से सवाल पूछने क िह मत नही थी... ले कन नौबत ही वैसी आ गयी थी.. और पीने क वजह से उनमे उतनी िह मत आगिय थी...

“आए... बेवकूफ़ क तरह बकबक मत कर.. मैने उसे मारा नही... वह उस हादसे मे मारी गयी...” सुलेमान ने बे फ होकर कंधे उचकाते ए कहा.

“हादसे मे...?”

भले ही सुलेमान इस बारे मे बे फ है ऐसा जता रहा था फर भी वह अंदर से बैचेन था.

अपनी बैचेनी िछपाने के िलए उसने ि ह क का एक बड़ा घूँट िलया, “देखो... वह कुछ

यादा ही िच ला रही थी इसिलए... मैने उसका मुँह दबाकर बंद कया... और मुझे पता

ही नही चला क उसमे उसक नाक भी दबकर बंद होगिय करके...”

“ फर अब या कया जाय...?” महेश ने पूछा.

उन चार मे महेश और राकेश सबसे यादा डरे ए दख रहे थे.

“और अगर पोलीस ने हमे पकड़ िलया तो...?” राकेश ने अपनी चंता

क .

“देखो कुछ भी आ नही है ऐसा

वहार करो... कसी ने कुछ पूछा भी तो यान रहे क

हम कल रात से यहाँ ताश खेल रहे है... फर भी अगर कोई गड़बड़ ई तो हम उसमे से भी

कुछ रा ता िनकालगे... और यह मत समझो क यह मेरी पहली बारी है.. क मैने कसी

को मारा है..” सुलेमान झूठमूठ का धाँढस बाँधने क चे ा करते ए बोला.

उतने मे दरवाज़े पर कसी क आहट सुनाई दी... और कसी ने दरवाज़े पर ह के से नॉक

कया.

कमरे के सब लोग का बोलना और पीना बंद होकर वे एकदम त ध होगये.

उ होने एकदुसरे क तरफ देखा.

कौन होगा...?

पोलीस तो नही ह गी...?

कमरे मे एकदम स ाटा छा गया.

सुलेमान ने महेश को कौन है यह देखने के िलए इशारा कया.

महेश धीरे से चलते ए आवाज़ ना हो इसका ख़याल रखते ए दरवाज़े के पास गया.

बाहर कौन होगा इसका अंदाज़ा िलया और धीरे से दरवाज़ा खोलकर ितरछा करते ए

उसमे से बाहर झाँकने लगा... सामने आ द य था... महेश ने उसे अंदर आने के िलए

इशारा कर अंदर िलया... जैसे ही आ द य अंदर आया उसने फर से दरवाज़ा बंद कर िलया.

िनतीन ने और एक ि ह क का जाम भरते ए कहा, “अरे.... आओ.. जा न अवर कंपनी...”

आ द य िनतीन ने ऑफर कया आ ि ह क का जाम लेते ए उनके साथ उनके सामने बैठ गया.

“ि चयस...” िनतीन ने उसका जाम आ द य के जाम से टकराते ए कहा.

“ि चयस...” आ द य ने वह जाम अपने मुँह को लगाया और वह भी उनक कंपनी मे शिामल हो गया.

सुलेमान, िनतीन, राकेश, महेश और आ द य टेबल के इद िगद बैठकर ि ह क के जाम पर जाम खालीकर रहे थे. सुलेमान और उसके तीन दो त पीकर टून होगये थे... आ द य अपनी हद मे रह कर ही पी रहा था.

“ फर आ द य... इतनी रात गये इधर कधर घूम रहे हो...?” महेश ने आ द य के पीठ पर ह के से मारते ए पूछा.

“सच क ँ तो म तु हारे यहाँ उस ीट के बारे मे बात करने के िलए आया था...” आ द य ने मौके का फ़ायदा उठाते ए असली बात पर आते ए कहा.

“कौन से ीट...?” राकेश ने पूछा.

“अबे पगले... वह उस लड़क के बारे मे बोल रहा है...” आ द य बात प करने के पहले ही िनतीन बीच मे बोला.

“बाइ द वे... तु हे ीट का मजा आया क नही...” आ द य ने पूछा.

सबलॉग एकदम त ध, शांत और सीरीयस हो गये.

“देखो... तु हारी ीट शु शु मे अ छी लगी... ले कन आिख़र मे...”

“वह होता है ना क कभी कभी सूप शु शु मे अ छा लगता है ले कन आिख़र मे तले मे बैठे नमक न क वजह से उसका मज़ा कर करा हो जाता है...” िनतीन सुलेमान का

वा य पूरा होने के पहले ही बोला.

“तुम लोग या बोल रहे हो यह मुझे तो कुछ समझ मे नही आ रहा है...” आ द य उसके चेहरे क तरफ कुछ ना समझने के भाव मे देखते ए बोला.

महेश ने सुलेमान क तरफ देखते ए पूछा, “ या इसको बोला जाय...?”

“अरे यो नही... उसे मालूम कर लेने का हक़ है... आख़र उस काय मे वह अपना बराबर का िह सेदार था....” सुलेमान ने कहा.

“काय...? कैसा काय...?” आ द य ने बैचेन होकर पूछा.

“खून...?” िनतीन ने ठंडे लहजे मे कहा.

“आए उसे खून मत बोल... वह एक आि सडट था...” राकेश ने बीच मे टोका.

आ द य का चेहरा डर के मारे फ का पड़ चुका था.

“कही तुम लोगो ने उस लड़क का खून तो नही कया...?” आ द य कसी तरह से िह मत जुटा कर बोला.

“तुम नही... हम... हम सब लोगो ने...” सुलेमान ने उसके वा य को सुधारा.

“एक िमिनट... एक िमिनट... तुम लोगो ने अगर उस लड़क को मारा होगा... तो यहाँ कहा मेरा संबंध आता है...” आ द य ने अपना बचाव करते ए कहा.

“देखो... अगर पोलीस ने हमे पकड़ िलया... तो वह हमे पूछगे... क लड़क का अता पता तु हे कसने दया...?” िनतीन ने कहा

“तो हमने भले ही ना बताने का ठान िलया फर भी हमे बताना ही पड़ेगा...” राकेश ने अधूरा वा य पूरा कया.

“... क हमे हमारे िजगरी दो त आ द य ने मदद क ...” राकेश शराब के नशे मे बड़बड़ाया.

“देखो... तुम लोग िबना वजह मुझे इसमे ल पेट रहे हो...” आ द य अब अपना बचाव करने लगा था.

“ले कन दो तो... एक बड़ी अजीब चीज़ होनेवाली है...”सुलेमान ने मंद मंद मु कुराते ए

कहा.

“कौन सी...?” िनतीन ने पूछा...

“ क पोलीस ने हमे पकड़ा और बाद मे हमे फाँसी होगिय...”सुलेमान ने बीच मे क कर अपने दो तो क तरफ देखा. वे एकदम सीरीयस हो गये थे.

“अबे... सालो... मेरा मतलब है अगर हमे फाँसी हो गयी...” सुलेमान ने महेश क पीठ ह के से थपथपाते ए कहा.

राकेश शराब का लास सर पर रख कर अजीब तरह से नाचते ए बोला, “हा...हाहाहा... अगर हमे फाँसी हो गयी तो...”

आ द य को छोड़कर सारे लोग उसके साथ हँसने लगे...

फर से कमरे का वातावरण पहले जैसे होगया.

“हाँ तो अगर हमे फाँसी हो गयी... तो हमे उसके बारे मे कुछ बुरा नही लगेगा... य क आख़र हमने िमठाई खाई है... ले कन उस बेचारे आ द य को िमठाई ह क सी चखने को भी नही िमली... उसे मु त मे ही फाँसी पर लटकना होगा...” सुलेमान ने कहा.

कमरे मे सब लोग, िसफ़ एक आ द य को छोड़, ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे.

“सच क ँ तो म तु हारे हर एक के पास से दो-दो हज़ार लेने के िलए आया था...” आ द य ने कहा.

“दो-दो हज़ार ...? मेरे दो त अब यह सब भूल जा...” िनतीन ने कहा.

आ द य उसक तरफ गु से से देखने लगा.

“देख अगर सबकुछ ठीक आ होता तो हम तु हे कभी ना नही कहते... बि क हमारी खुशी से तु हे पैसे देते... ले कन अब प रि थित ब त अलग है... वह लड़क क मौत हो गयी...” िनतीन उसे समझा बुझाने के वर मे बोला...

“...मतलब आि सड ली...” महेश ने बीच मे ही जोड़ा..

“तो अब वह सब ठकाने लगाने के िलए पैसा लगेगा...” िनतीन ने कहा.

“सच क ँ तो... हम ही तु हारे पास इस सब का िनपटारा करने के िलए पैसे माँग ने वाले

थे...” राकेश ने कहा.

फर सब लोग, आ द य को छोड़कर, ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे... पहले ही उ हे चढ़ गयी थी और अब वे उसक मज़ाक उड़ा रहे थे...

आ द य के जबड़े कस गये... गु से से वह उठ खड़ा आ और पैर पटकते ए वहाँ से चलते बना.... दरवाज़े से बाहर िनकलने के बाद उसने गु से से दरवाज़ा ज़ोर से पटक दया.... फर उसके बाद आ द य ने उन चारो को मारने का लान बनाया. वैसी ही योजना आ द य ने तै यार क और आ द य ये सब लान बना रहा था ले कन उसका दमाग़ कल घटी बात मे

त था... आ द य अपने दमाग़ मे चल रहे सोच के च र से बाहर आगया.

अब अगर यह केस ऐसी ही चलती रही तो कभी ना कभी सुलेमान, िनतीन, राकेश और महेश अपने को इसमे घसीट ने वाले है...

फर म भी इस केस मे फँस जाय...

नही ऐसा कतई नही होना चिहए...

मुझे कुछ तो रा ता िनकालना ही पड़ेगा...

सोचते ए आ द य अपने इदिगद खेल रही उस िब ली क तरफ देख रहा था... अचानक एक िवचार उसके दमाग़ मे क ध गया और उसके चेहरे पर एक ग़ूढ मु कुराहट दखने लगी...

अगर मैने इन चार को रा ते से हटाया तो कैसा रहेगा...?

ना रहेगा बाँस ना बजेगी बाँसुरी...

आ द य ने इस मसले को पूरी तरह आर या पार करने का मन ही मन ठान िलया था. आख़र उसे अपनी जान बचाना ज़ री था. या करना है यह उसने मन ही मन तय कया था... ले कन पहले एक बार पायल के भाई को िमलना उसे ज़ री लग रहा था. इसिलए वह अमोल के घर के पास जाने लगा...

आ द य अमोल के दरवाजे के सामने आकर खड़ा हो गया... वह अब बेल दबाने ही वाला

था इतने मे बड़े ज़ोर से और बड़े अजीब ढंग से कोई चीखा... एक पल के िलए तो वह च क ही गया... क या आ... उसका बेल दबानेवाला हाथ डर के मारे पीछे खंच गया...

मामला कुछ सीरीयस लगता है...

इसिलए वह दरवाजे क बेल ना दबाते ए अमोल के मकान के िखड़क के पास गया और उसने अंदर झाँक कर देखा....

... अंदर अमोल हाथ मे एक गु ा पकड़ा आ था...

िखड़क से यह सब आ द य काफ़ देर से देख रहा था. वह देखते ए अचानक उसके दमाग़ मे एक योजना आ गयी.... उसके चेहरे पर अब एक वहशी मु कान दखने लगी...

वह िखड़क से हट गया और दरवाजे के पास गया... उसने कुछ सोचा और वह वैसा ही अमोल के दरवाज़े क बेल ना बजाते ए ही वहाँ से वापस चला गया....

भाग - 12

कबीर वेरहाउस मे अब भी ज़मीन पर पड़ा आ था... ले कन अब वह उस ॅ स टेट से बाहर आ गया था... वह झट से कं यूटर के मॉनटर क तरफ देखा.... अब कं यूटर बंद था... उसने वेरहाउस मे इधर उधर देखा... अब बाहर सवेरा हो गया था और अंदर वेरहाउस मे अ छी ख़ासी रोशनी आ रही थी... कुछ देर पहले ज़ोर ज़ोर से बह रही हवा के झोके भी थम गये थे... वह अब उठ कर खड़ा हो गया और सोचने लगा... इतने मे उसका ख़याल कुछ देर पहले नीचे िगरे ए फोटो े म क तरफ गया.... उसने वह े म उठाई और सीधी कर देखी... वह एक ूप फोटो था... आ द य और उन चार पायल के क़ितल का...

उसे अब एक एक बात एकदम सॉफ हो चुक थी... वह जब नीचे पड़ा आ था और उसे जो एक एक

य दखाई दया था, शायद पायल क अ ु य और अतृ ह को वह उसे

बताना था... ले कन उसे वह बताने क ज़ रत य पड़ी थी...? वह उसे ना बताए ए भी पायल को जो चिहए वह अब तक हिसल करते आई थी औरा आगे भी हिसल कर

सकती थी...

फर उसने यह उसे य बताया था...?

ज़ र कोई वजह होगी...?

इसमे उसका ज़ र कोई उ े य होगा...

आ द य के केस क काफ़ दनो से कोट मे कायवाही चल रही थी.. हर बार कबीर कोट मे कामकाज के दौरान हिाजर रहता था और वहाँ बैठकर सब कायवाही सुनता था... इधर केस का कामकाज चलता था और उसके दमाग़ मे वह एक ही सवाल घूमते रहता था क पायल ने वह सब बताने के िलए उसे ही य चुना होगा...? और पायल का वह सब बताने का या मकसद रहा होगा...?

क वह सब कुछ उसने कोट मे बयान करना चिाहए ऐसा तो पायल को अपि त नही होगा...?

ले कन अगर वह सब उसने कोट मे बताया तो उसपर कौन िव ास करने वाला था...?

उ टा एक िज़ मेदार इं पे टर के मुँह से ऐसे अंध

ा बात सुनकर लोगो ने उसे ना जाने

या या कहा होता...

िसफ़ कहा सुनाया ही नही तो उसका आगे का पूरा क रयर सवालो के और शक क घेरे मे आया होता...

वह सोच रहा था ले कन आज उसे िवचार के जंजाल मे नही फँसना था... आज उसे कोट क कायवाही पूरी तरह यान देकर सुन नी थी... य क आज केस का नतीजा िनकलने वाला था.

आिख़र इतनी दनो से घसीट ते ए चल रहे केस के सब जब जवाब हो चुके थे... कबीर क भी ज़बानी हो चुक थी... उसने जो सिाबत कया जा सकता था वह सब बताया था.

आिख़र वह व आया था. वह पल आ चुका था िजसक सारे लोग बड़ी बेचैनी से राह देख रहे थे... केस के नतीजे क ... कबीर अपने कुस पर बैठकर ज ज या फ़ैसला सुनाता है

यह सुन ने के िलए ज ज क तरफ देखने लगा... वैसे उसके चेहरे पर कसी भी भाव का अि त व नही था.. कोट म मे उपि थत बाक सब लोग सांस रोक कर ज ज का आखरी फ़ैसला सुन ने के िलए बेताब थे...

ज ज फ़ैसला सुना ने लगा –

“सारे सबूत, सारे जवाब, और खुद िम टर. आ द य ने दया टे मट क ओर यान देते ए कोट इस नतीजे पर प ँचा है क िम टर. महेश, िम टर. राकेश, िम टर. िनतीन और िम टर. सुलेमान इन चारो के भी क़ ल मे िम टर. आ द य मुज रम पाया गया है... उसने वह चारो खून जान भूज कर और पूरी योजना और सतकता के साथ कए है...”

“... इसिलए कोट मुज रम आ द य को मौत क सज़ा सुनाता है...”

ज ज ने आखरी फ़ैसला सुनाया था... इस फ़ैसले का िजन चार लोगो के क़ ल ए थे उनके र तेदारो ने तािलया बजा कर वागत कया तो काफ़ लोगो को यह फ़ैसला पसंद नही आया. पायल का भाई अमोल तो नाकबीग़ी जािहर करते ए कोट म से उठकर चला गया... ले कन कबीर के चेहरे पर कोई भाव नही उभरे थे. ना खुशी के ना गम के... ले कन फ़ैसला सुन ने के बाद कबीर काफ़ दनो से सता रहे सवाल का जवाब िमल गया था. आ द य को मौत क सज़ा सुनाई गयी थी... वो डेट भी अब नज़दीक आ गयी थी...

अब थोड़ी ही देर मे आ द य को मौत क सज़ा दी जानी थी. इं पे टर कबीर , सज़ा देनेवाला अिधकारी, एक डॉ टर और एक दो ऑ फसस फाँसी के म के सामने खड़े थे. इतने मे दो पोलीस अिधकारी हथकिड़याँ पहने ि थित मे आ द य को वहाँ ले आए. मौत क सज़ा देने क िजस अिधकारी पर िज़ मेदारी थी, उसने अपने घड़ी क तरफ देखा और पोलीस अिधकारी को इशारा कया. पोलीस ऑ फसस आ द य को फाँसी क तरफ ले गये...

फर ज लाद ने काले कपड़े से उसका चेहरा ढँका और फाँसी को उसके गले मे अटका कर पॅनल ख चने के िलए तै यार रहा ... मु य अिधकारी ने ज लाद क तरफ देखा और ज लाद एकदम तै यार खड़ा था... फर से वह अिधकारी अपनी घड़ी क तरफ देखने

लगा... शायद उसक उ टी िगनती शु हो गयी थी.... अचानक उस अिधकारी ने ज लाद को इशारा कया... ज लाद ने पल भर क भी देरी ना करते ए पॅनल ख च दया... थोड़ी देर मे आ द य क बॉडी उस फाँसी क र सी मे लटक ई थी..

“डॉ टर...” उस अिधकारी ने डॉ टर को पुकारा...

डॉ टर झट से बॉडी क तरफ गया... और बोला “सर ही ईज़ डेड...”.

वह अिधकारी एक दम से मूड गया और वह जगह छोड़कर वहाँ से चला गया... वह ज लाद वही बगल मे एक कमरे मे चला गया... वहाँ बाजू मे ही खड़ा एक टाफ मबर उस चबर मे, शायद चबर सॉफ करने के िलए घुस गया.... सबकुछ कैसे कसी मशीन क तरह चल रहा था... उन सब का भले ही वह हमेशा का काम हो फर भी कबीर के िलए वह हमेशा होनेवाली बाते नही थी.. वह अब भी खड़ा एक एक चीज़ और एक एक हो रही बात यान से िनहार रहा था.

अब डॉ टर भी वहाँ से चला गया.

वहाँ िसफ़ कबीर अकेला ही बचा... वह अब भी वहाँ चुपचाप खड़ा था, उसके दमाग़ मे शायद कुछ अलग ही चल रहा हो...

अचानक कोई ज दी ज दी उसके पीछे से वहाँ आगया.

“अ छा... हो गया साहब...” पीछे से आवाज़ आई.

कबीर ने मुड़कर पीछे देखा और उसका मुँह आ य से खुला का खुला ही रह गया... उसके सामने ज लाद खड़ा था.... ये तो अभी अभी बगल के कमरे मे गया था...

फर अभी के अभी ये इधर कधर पीछे से आ गया....

“साहब मुझे चंता थी क मेरी अनुपि थित मे पॅनल कौन ऑपरेट करेगा...” वह ज लाद बोला.

“बाइ द वे कसने ऑपरेट कया पॅनल...?” उस ज लाद ने कबीर से पूछा...

कबीर को एक के बाद एक आ य के ध े लग रहे थे...

कबीर ने बगल के कमरे क तरफ देखा...

“ कसने ऑपरेट कया मतलब...? तुमने ही तो ऑपरेट कया...” कबीर ने अिव ास के साथ कहा.

“ या बात करते हो साहब...? म तो अभी अभी यहाँ आ रहा ँ... कुछ काम से फँस गया था...” उस ज लाद ने कहा.

कबीर ने फर से च क कर उसक तरफ देखा और फर उस बगल के कमरे क तरफ देखा िजसमे वह थोड़ी देर पहले गया था.

“आओ मेरे साथ... आओ...” कबीर उसे उस बगल के कमरे क तरफ ले गया.

कबीर ने उस कमरे का दरवाज़ा धकेला... दरवाज़ा अंदर से बंद था... उसने दरवाज़े पर नॉक कया... अंदर से कोई ित

या नही थी... कबीर अब वह दरवाज़ा ज़ोर ज़ोर से

ठोकने लगा... फर भी अंदर से कोई ित

या नही थी... कबीर अपनी पूरी ताक़त के

साथ उस दरवाज़े को धकेलने लगा.. वह म मे पड़ा ज लाद भी अब उसे धकेलने मे मदद करने लगा.

ज़ोर ज़ोर से धकेल कर और ध े देकर आिख़र कबीर ने और उस ज लाद ने वह दरवाज़ा तोड़ा...

दरवाज़ा टूट ते ही कबीर और वह ज लाद ज दी ज दी कमरे मे घुस गये... उ होने कमरे मे चारो तरफ अपनी नज़रे दौड़ाई... कमरे मे कोई नही था... उ होने एक दूसरे क तरफ देखा... उस ज लाद के चेहरे पर असमंजस के भाव थे तो कबीर के चेहरे पर अग य ऐसे डर के भाव दख रहे थे.

अचानक उपर से कुछ नीचे िगर गया... दोनो ने च क कर देखा... वह एक काली िब ली थी, िजसने उपर से छलाँग लगाई थी... वह िब ली अब कबीर के एक दम सामने खड़ी हो गिय और एकटक कबीर क तरफ देखने लगी... वे आ य से मुँह खोलकर उस िब ली क तरफ देखने लगे धीरे धीरे उस काली िब ली का पांतर पायल क सड़ी ई मृत देह मे

होने लगा... उस ज लाद के तो हाथ पैर कापने लगे थे.. कबीर भी बफ जम जाय ऐसा

एकदम ि थर और त ध होकर उसके सामने जो घट रहा था वह देख रहा था धीरे धीरे

उस सड़ी ई म दह का पांतर एक सुंदर, जवान त णी मे हो गया.. हाँ, वह पायल ही

थी... अब उसके चेहरे पर एक सुकून झलक रहा था... देखते देखते उसक आख से दो बड़े

बड़े आँसू िनकल कर गाल पर बहने लगे और धीरे धीरे वह वहाँ से अ

य होकर गायब

हो गयी...

समा

Document Outline

- परिचय
- भाग - 1
- भाग - 2
- भाग - 3
- भाग - 4
- भाग - 5
- भाग - 6
- भाग - 7
- भाग - 8
- भाग - 9
- भाग - 10
- भाग - 12